तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 9, अंक- 11-12, अक्टूबर-नवंबर 2021 , मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

फहरा तिरंगा देश का, लिख चोटी पर नाम
नन्हे सुमनों ने किया, बड़ा गज़ब का काम

यूनम चोटी चढ़ गये, बालक सीना तान

लाहौल-स्पीति घाटियाँ, देख हुई हैरान ।
यूनम चोटी चढ़ गये, बालक सीना तान ।।

हम ऊपर हैं देख लो, नीचे आज पहाड़ ।
गुरु-शिष्य का हौसला, बोला झंडा गाड़ ।।

हम भारत के लाल हैं, यही हमारी रीत ।
साहस हिम्मत जोश से, पाते हरदम जीत ।।

दिव्यागों ने कर दिया, बड़ा अनोखा काम ।
हाथ तिरंगा थाम कर, पहुँचे यूनम धाम ।।

आज़ादी का महोत्सव, ले आया उल्लास ।
गुरु-शिष्य सब चढ़ गये, चोटी ऊँची खास ।।

यूनम चोटी की फतह, और रचा इतिहास ।
जीत मिली कुछ को मगर, सबको मिली उजास ।।

किया करिश्मा जोर का, ले हाथों में हाथ ।
पूरे पचहत्तर चढ़ गये, गुरु-शिष्य सब साथ ।।

मिली जोश को रोशनी, मन को मिला प्रकाश ।
दिव्यांगों का हौंसला, छू आया आकाश ।।

सिद्ध किया सब सामने, बाल समेकित ज्ञान ।
इक दूजे से हौसला, पाकर बनो महान ।।

फहरा तिरंगा देश का, लिख चोटी पर नाम ।
नन्हे सुमनों ने किया, बड़ा गज़ब का काम ।।

श्री भगवान बव्वा
रावमा विद्यालय लूखी
जिला-रेवाड़ी, हरियाणा

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

अक्टूबर-नवंबर 2021

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ. जे. गणेशन
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

अंशज सिंह
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

सम्वर्तक सिंह
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन-1)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिजाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,
New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"वृक्ष की शाखा पर बैठा पक्षी कभी भी शाखा के हिलने से नहीं घबराता क्योंकि उसे शाखा पर नहीं, अपने पंखों पर भरोसा होता है।

- पर्वतारोहण पर विद्यार्थी को पाँच लाख देगी सरकार : मनोहर लाल 5
- स्कूली विद्यार्थियों को पर्वतारोहण कराने वाला हरियाणा देश का पहला राज्य 6
- डर के आगे जीत है 8
- राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों ने फतह की यूनम पीक 10
- पीक फतह कर लौटे दल का पंचकूला में भव्य स्वागत 18
- 'रज्जी' और 'माफी' ने भी फतह की यूनम पीक 19
- फूलों से लाद दिए गए नन्हे पर्वतारोही 20
- मिली जोश को रोशनी, मन को मिला प्रकाश 22
- राजकीय विद्यालयों में बनेंगे यूथ एडवेंचर क्लब 25
- सुपर-100 के विद्यार्थियों ने किया प्रदेश को गौरवान्वित : मुख्यमंत्री 28
- लोकतंत्र की जड़ें मजबूत करते लीगल लिटरेसी क्लब 30
- डॉ. सुधीर कुमार को 'महर्षि विश्वामित्र सम्मान' 31
- Achievement of Haryana In NLEPC Under Inspire Award Manak 2019-20 32
- Team Building 34
- Power of Zero 36
- Compendium of Academic Courses After +2 37
- Enhancing Digital Skills in Teaching 41
- The Bathroom Nest 44
- Adults are Always Thrilled to Enhance Themselves 46
- Amazing Facts 48
- General Quiz 49
- आपके पत्र 50

फ्रंट पेज फोटो: ओम प्रकाश कादयान

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

संघर्ष ही एकल विकल्प है अनन्त कीर्ति पाने का

इस दुनिया में बड़ी संख्या में लोग अपनी असफलता के लिए परिस्थितियों को कोसते रहते हैं। वे इंतजार करते हैं कि कब परिस्थितियाँ अनुकूल बनें और वे सफल होने के लिए प्रयासरत हों। लेकिन ऐसा दिन कभी नहीं आता। वे पिछड़ी और अविकसित दशा में ही पड़े रहते हैं, इसके विपरीत साहसी, पुरुषार्थी परिस्थितियों के अनुकूल होने की प्रतीक्षा नहीं करते, वे अपने अदम्य साहस, बाहुबल एवं बुद्धिबल से विपरीत परिस्थितियों में से ही सफलता के रास्ते की तलाश कर लेते हैं। 'दैव-दैव' पुकारने वाले भले ही उनकी सफलता को चमत्कार समझे, लेकिन सत्य तो यह है कि संघर्षों के बीच में से ही सफलता का मार्ग निकलता है। कर्मवीरों के सामने परिस्थितियाँ भी नतमस्तक हो जाती हैं। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि हम अपने युवाओं के भीतर साहस व आत्मविश्वास का भाव जागृत करने के लिए प्रयासरत रहें। उनके मन में भय, निराशा, अविश्वास की जो ग्रंथियाँ विद्यमान हैं, उन्हें तोड़ने का यत्न करें। विविध साहस और रोमांच से भरी गतिविधियों के द्वारा ऐसा संभव है। हर्ष का विषय है कि हमारे राजकीय विद्यालयों में ऐसी गतिविधियों की भरमार है। कहीं स्काउटिंग, कहीं एनसीसी तो कहीं पर्वतारोहण, समुद्री यात्राओं व ट्रैकिंग आदि गतिविधियों के द्वारा युवाओं के भीतर साहस और आत्मबल के भाव भरने की कोशिश की जाती है। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि प्रदेश की लड़कियों को भी बराबर अवसर मिले, यहाँ तक कि कुछ गतिविधियाँ तो विशेष रूप से लड़कियों के लिए रखी गई हैं। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की भी इनमें भागीदारी सुनिश्चित की जाती है। हालांकि 2016 से प्रदेश के विद्यार्थियों को पर्वतारोहण के अवसर दिए जा रहे हैं, लेकिन इस बार का पर्वतारोहण अभियान तो नये कीर्तिमान बना गया है। प्रस्तुत अंक 'यूनम अभियान' पर केंद्रित है। आपके अमूल्य विचारों व प्रतिक्रियाओं की सदा की भाँति प्रतीक्षा रहेगी।

- संपादक

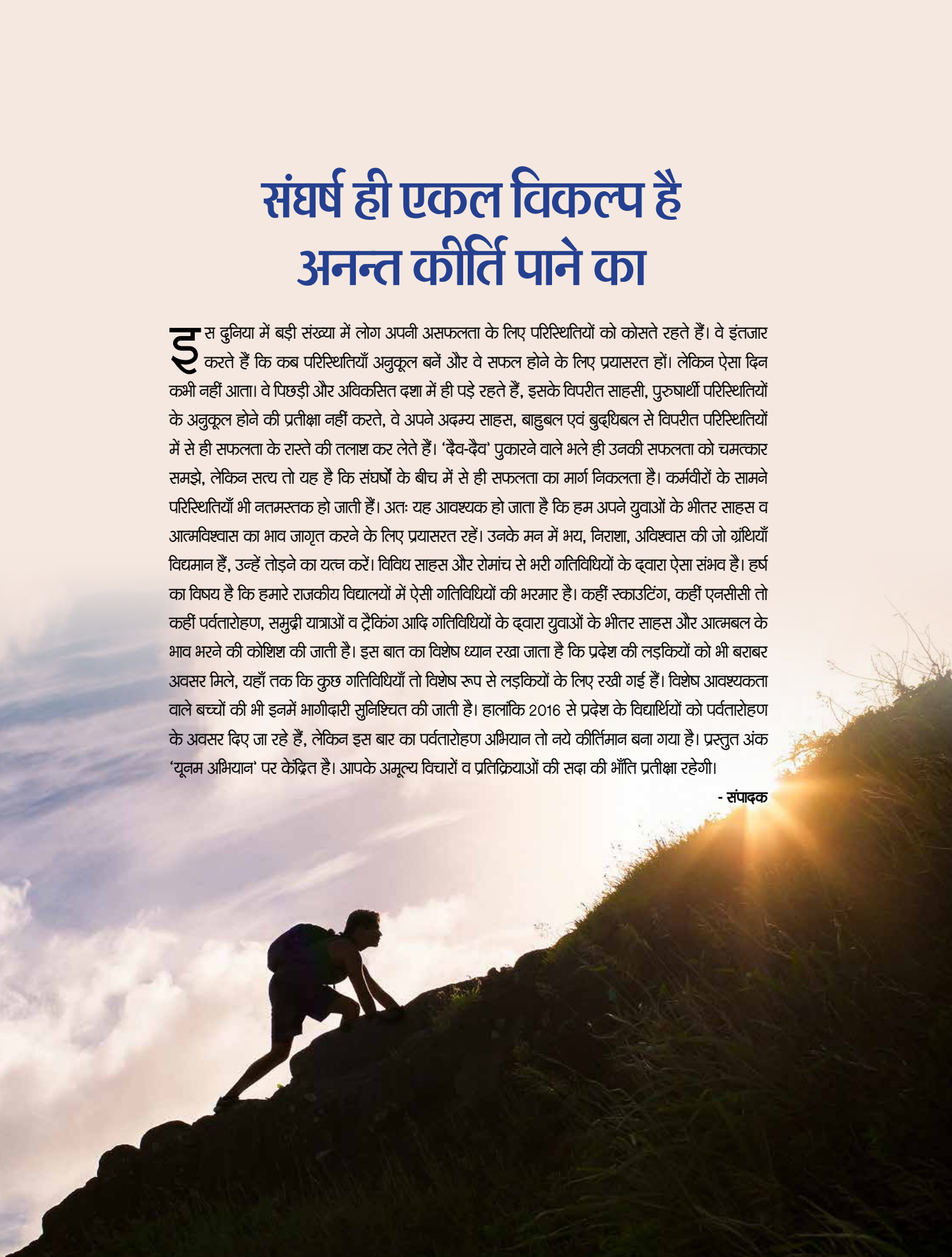

पर्वतारोहण पर विद्यार्थी को पाँच लाख देगी सरकार : मनोहर लाल

डॉ. प्रदीप राठौर

हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने कहा कि प्रदेश के स्कूली विद्यार्थियों के लिए पर्वतारोहण की एक अनोखी योजना बनाई जाएगी। इसके तहत जो विद्यार्थी पहाड़ों की सबसे ऊँची 10 चोटियों में से किसी एक की चढाई करेगा उसे 5 लाख रुपए की राशि प्रदान की जाएगी। मुख्यमंत्री बीते दिनों स्कूली विद्यार्थियों के पर्वतारोहण दल को रवाना करने से पूर्व बातचीत कर रहे थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि 75वें स्वतंत्रता वर्ष के परिप्रेक्ष्य में आजादी के अमृत महोत्सव की शृंखला में राज्य के विभिन्न सरकारी स्कूलों के 75 विद्यार्थियों व अध्यापकों का दल स्कूल शिक्षा विभाग एवं नेशनल एडवेंचर क्लब चण्डीगढ के सहयोग से हिमाचल प्रदेश के लाहौल क्षेत्र में 6,111 मीटर की ऊँचाई पर स्थित माउंट यूनम पर पर्वतारोहण करने जा रहा है।

उन्होंने कहा कि हरियाणा देश का पहला राज्य है जो स्पोर्ट्स हब के रूप में जाना जाता है। हरियाणा के खिलाड़ी ओलम्पिक एवं पैरालम्पिक में सबसे ज्यादा मैडल लाए हैं, इसलिए स्पोर्ट्स की तर्ज पर पर्वतारोहण करने वालों के लिए भी योजना बनाई जाएगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वास्तव में जीवन पुस्तकीय शिक्षा तक ही सीमित नहीं है। इसके साथ-साथ अतिरिक्त गतिविधियों से नवीनतम विचार आते हैं और ज्ञान बढ़ता है। उन्होंने कहा कि जब हम बाहर घूमने जाते हैं तब हम अनेक नई बातें सीखते हैं। यूनम पीक अभियान बच्चों के जीवन में एक बड़ा परिवर्तन लाएगा।

उन्होंने कहा कि वे पर्वतारोहण पर जा रहे दिव्यांग बच्चों की हिम्मत और साहस की दाद देते हैं जो पहली बार ऐसी साहसिक गतिविधि में भाग ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि उन्हें विश्वास है कि ये बच्चे सफलता से इस अभियान को पूरा करेंगे। उन्होंने अभियान के सभी सदस्यों को अपनी शुभकामनाएँ दीं। मुख्यमंत्री ने पर्वतारोहण दल के साथ अपने स्कूल शिक्षा के अनुभव साझे किए। उन्होंने बताया कि उन्हें भी बचपन से साहसिक व रोमांचक गतिविधियाँ बहुत भाती थीं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों के लिए पर्वतारोहण कार्यक्रमों का आयोजन पहली बार 2016 में सैनिक स्कूल कुजंपुरा के सहयोग से आरम्भ किया गया। तब से लेकर अब तक पाँच बार प्रदेश के सरकारी स्कूलों के विद्यार्थी हिमाचल के मनाली में स्थित 5,289 मीटर ऊँची चोटी फ्रेंडशिप पीक की सफलतापूर्वक चढाई कर चुके हैं। इन एडवेंचर कार्यक्रमों में भागीदारी के आधार पर हरियाणा ने पूरे देश के सामने अपनी विशेष पहचान बनाई है।

इस अवसर पर पर्वतारोहण दल की छात्रा प्रिया सैनी, अमन, दिव्यांग सुप्रिया, दिव्यांग विद्यार्थी खालिद ने कहा कि वे ऐसी गतिविधियों को अब तक चित्रों के माध्यम से ही देखते थे, लेकिन सरकार ने इसे वास्तविक रूप दिया है। इसके लिए उन्होंने पूरे दल की ओर से मुख्यमंत्री का आभार जताते हुए कहा कि वे अवश्य ही सफल होकर चोटी पर 75 मीटर का राष्ट्रीय ध्वज प्रदर्शित करेंगे। मुख्यमंत्री ने पर्वतारोहण दल को राष्ट्रीय ध्वज भेंट किया।

इस मौके पर नेशनल एडवेंचर क्लब के चेयरमैन एवं पूर्व मुख्य सचिव एससी चौधरी ने क्लब की गतिविधियाँ बताईं। निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री जे गणेशन, निदेशक मौलिक शिक्षा श्री अंशज सिंह, अतिरिक्त निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री विवेक कालिया सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे। हरियाणा निवास में आयोजित हुए इस कार्यक्रम का संचालन प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक द्वारा किया गया।

drpradeeprathore@gmail.com

स्कूली विद्यार्थियों को पर्वतारोहण कराने वाला
हरियाणा देश का पहला राज्य

डॉ. प्रदीप राठौर

हरियाणा देश का एकमात्र राज्य है जहाँ विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों के लिए पर्वतारोहण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। वर्ष 2016 में प्रदेश में यह कार्यक्रम सैनिक स्कूल कुंजपुरा के सहयोग से आरंभ किया गया था, अब तक पाँच बार हरियाणा के विद्यार्थी हिमाचल प्रदेश के मनाली क्षेत्र में स्थित 5,289 मीटर की ऊँचाई वाली 'फ्रेंडशिप पीक' पर, लेह क्षेत्र में 6,153 मीटर की ऊँचाई पर स्थित भारत की सबसे ऊँची ट्रैक करने योग्य चोटी 'स्तोक काँगड़ी' पर तथा हाल में ही लाहौल जिले की यूनम-चोटी पर सफलतापूर्वक आरोहण कर चुके हैं। अब तक इस पर्वतारोहण कार्यक्रम में लगभग ढाई सौ विद्यार्थी भाग ले चुके हैं।

विभाग के पास हैं अपने प्रशिक्षित अध्यापक-

कुरुक्षेत्र के रावमा विद्यालय खरींडवा में संस्कृत अध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे संदीप आर्य ने 2012 में 'बेसिक माउंटेनियरिंग कोर्स किया तथा इसी वर्ष 'फ्रेंडशिप पीक' पर जाने का अवसर मिला। इसके बाद एडवांस माउंटेनियरिंग कोर्स तथा बेसिक व एडवांस रॉक क्लाइबिंग तथा एमओआई कोर्स किए। 2012 से आज तक 7 बार फ्रेंडशिप पीक पर जा चुके हैं। दो शिक्षकों श्रवण कुमार, टीजीटी-साइंस, रावमावि कोहंड (करनाल) और डॉ. जसबीर कौर, पीजीटी-हिंदी आरोही स्कूल ग्योंग, (कैथल) द्वारा जवाहर लाल नेहरू इंस्टीट्यूट ऑफ माउंटेनियरिंग एंड एलाइड स्पोर्ट्स, पहलगाम (जेएंडके) से बेसिक व एडवांस माउंटेनियरिंग कोर्स सफलतापूर्वक पूरा किया जा चुका है।

पर्वतारोहण अभियानों का सफर-

2016 में विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा पहली बार अपने विद्यार्थियों के लिए पर्वतारोहण का कार्यक्रम आयोजित किया गया था। पहले अभियान की सफलता और इसके अनूठेपन के कारण इसे विभाग द्वारा चलाई जा रही साहसिक गतिविधियों का नियमित अंग बना दिया गया। विभाग ने विगत वर्षों में सैनिक स्कूल कुंजपुरा तथा नेशलन एडवेंचर क्लब के सहयोग से छह पर्वतारोहण अभियानों का सफलतापूर्वक आयोजन किया है, जिनका विवरण निम्नानुसार है-

प्रथम अभियान-

पहला अभियान 26 मई 2016 से 14 जून, 2016 तक चला, जिसमें कुल 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया। तत्कालीन राज्यपाल ने 27 मई, 2016 को राजभवन हरियाणा से झंडी दिखाकर अभियान दल को रवाना किया।

द्वितीय अभियान-

दूसरा अभियान 15 मई 2017 से 3 जून 2017 तक चला, जिसमें 22 छात्राओं व 3 शिक्षिकाओं सहित 25 प्रतिभागी शामिल रहे। इस दल को माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने 18 मई, 2017 को चंडीगढ़ स्थित अपने आवास से झंडी दिखाकर रवाना किया।

तृतीय अभियान-

तीसरा अभियान 14 सितंबर से 3 अक्टूबर 2017 तक चला, जिसमें 22 छात्रों व तीन शिक्षकों ने शिरकत की। इस दल को करनाल में उपनिदेशक महोदय द्वारा फ़्लैग ऑफ किया गया।

चतुर्थ अभियान-

यह अभियान 15 मई से 3 जून 2018 तक चला। इसमें 22 छात्राओं, तीन शिक्षिकाओं तथा 22 छात्रों, तीन शिक्षकों ने भाग लिया। यानी कुल 50 प्रतिभागियों के साथ यह उस समय तक का सबसे बड़ा अभियान दल था। तत्कालीन निदेशक मौलिक शिक्षा, श्री राजनारायण कौशिक ने 17 मई को शिक्षा सदन, पंचकूला से झंडी दिखाकर दल को रवाना किया।

पंचम अभियान-

यह अभियान 11 सितंबर से 30 सितंबर 2019

तक चलाया गया। इसमें प्रतिभागियों की संख्या चतुर्थ अभियान जितनी ही रही। इन्हें भी शिक्षा सदन, पंचकूला से ही रवाना किया गया।

षष्ठ अभियान-

यह अब तक का सबसे बड़ा अभियान था। 29 सितंबर से 10 अक्तूबर 2021 तक चले इस अभियान में कुल 75 प्रतिभागियों ने शिरकत की। मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने हरियाणा निवास, चंडीगढ़ से 30 सितंबर, 2021 को झंडी दिखाकर अपनी शुभकामनाओं के साथ इस दल को रवाना किया। इस अभियान का एक अनूठापन यह था कि इसमें पहली बार विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को भी शामिल किया गया था।

नेशनल एडवेंचर क्लब के सहयोग से आयोजन-

उक्त अभियान नेशनल एडवेंचर क्लब के सहयोग से आयोजित किया गया। गौरतलब है कि विद्यालय शिक्षा विभाग गत 9 वर्षों से एनएसी के सहयोग से विद्यार्थियों के लिए साहसिक व रोमांचक गतिविधियों का आयोजन कर रहा है। एनएसी (इंडिया) एक गैर-लाभकारी संगठन है और युवा मामले व खेल मंत्रालय के युवा व किशोर विकास (एनपीवाईएडी) के लिए विधिवत मान्यता प्राप्त एक अखिल भारतीय संगठन है।

यूनम पीक अभियान-

आज़ादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित इस अभियान में दल में प्रतिभागियों की संख्या 75 रखी गई। अभियान दल के सदस्य जिस झंडे को अपने साथ ले गए उसकी लम्बाई भी 75 मीटर रखी गई थी। इनमें 25 महिला प्रतिभागी (22 छात्राएँ एवं तीन शिक्षिकाएँ) 25 पुरुष प्रतिभागी (25 छात्र तथा तीन शिक्षक) तथा 22 दिव्यांग विद्यार्थियों के साथ तीन विशेष शिक्षक शामिल थे। सभी विद्यार्थी राज्य के राजकीय विद्यालयों में कक्षा ग्यारहवीं या बारहवीं में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

पर्वतारोहियों को आकर्षित करती है यूनम-

माउंट यूनम हिमाचल प्रदेश के लाहौल जिले में बारालाचा दर्रा के पास 6,111 मीटर ऊँची चोटी है। यह एक आकर्षक ट्रैक योग्य चोटी है जो पर्वतारोहियों को सदैव अपनी ओर आकर्षित करती है। अभियान के दौरान चंद्रभागा रेंज और मुल्किला रेंज और जांस्कर घाटी के मनोरम दृश्य दिखाई देते हैं। यह क्षेत्र उन पर्वतारोहियों के लिए एक अच्छा विकल्प माना जाता है जो स्तोक काँगड़ी व फ्रेंडशिप पीक जैसी भीड़भाड़ वाली जगह से बचना चाहते हैं। यहाँ पहाड़ काफी ऊबड़-खाबड़ हैं और हरियाली बहुत कम दिखाई देती है।

क्या थे अभियान के उद्देश्य-

- विद्यार्थियों में नेतृत्व की भावना पैदा करना।
- उन्हें पर्वतारोहण का अनुभव दिलाना।
- पर्वतारोहण की यांत्रिक रूपरेखा और कार्यप्रणाली से परिचित कराना।
- सामूहिकता की भावना जागृत करना।
- आत्मविश्वास, निर्णय-क्षमता आदि गुण विकसित करना।
- हिमालय क्षेत्र में प्रकृति अध्ययन के अवसर देना।
- सामान्य व विशेष आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों का समावेशन।

क्या थे चयन मापदंड-

सभी जिलों से एक-एक छात्र व एक-एक छात्रा का चयन संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी की अध्यक्षता में किया गया। ये विद्यार्थी वे थे जिन्होंने राज्य स्तर पर खेलों व अन्य सह-शैक्षिक गतिविधियों में प्रथम स्थान अर्जित किया हो। साथ ही उनकी शारीरिक फिटनेस को भी देखा गया, क्योंकि उन्हें काफी ऊँचाई वाले क्षेत्र के अभियान का हिस्सा बनना था। 22 दिव्यांग विद्यार्थियों व तीन विशेष शिक्षकों का चयन समन्वयक आईईडी द्वारा किया गया। इन विद्यार्थियों की भी विविध गतिविधियों में उपलब्धियों के साथ-साथ उनकी फिटनेस को ध्यान में रखा गया। सभी विद्यार्थियों के लिए चिकित्सा स्वास्थ्य फिटनेस प्रमाण-पत्र तथा अपने अभिभावकों से सहमति-पत्र लाना भी अनिवार्य किया गया। विद्यार्थियों के साथ गए शिक्षकों का चयन पर्वतारोहण के उनके प्रशिक्षण व अनुभव तथा विभिन्न साहसिक गतिविधियों में उनकी प्रतिभागिता के आधार पर किया गया।

drpradeeprathore@gmail.com

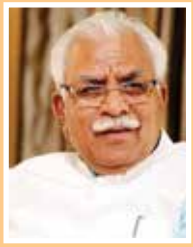

मुख्यमंत्री ने दिया विद्यार्थियों को माउंटेनियरिंग एडवेंचर का उपहार

2016 में मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल सैनिक स्कूल कुंजपुरा, जिला करनाल द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित हुए थे। वहाँ उन्हें जानकारी मिली कि सैनिक स्कूल ही देश का एकमात्र ऐसा विद्यालय है जो अपने विद्यार्थियों के लिए पर्वतारोहण के कार्यक्रम आयोजित करता है। मुख्यमंत्री महोदय ने उस दिन विद्यालय की प्रबंधन समिति से अनुरोध किया कि वह प्रदेश के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों को भी ऐसे अवसर मुहैया कराए। उनके अनुरोध को स्वीकार करते हुए सैनिक स्कूल ने पहली बार अपने पर्वतीय अभियान में प्रदेश के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों को शामिल किया। 29 मई से 15 जून, 2016 तक चले इस अभियान में 21 जिलों से एक-एक विद्यार्थी शामिल हुआ था। राज्यपाल महोदय ने झंडी दिखाकर अभियान का शुभारंभ किया था। इससे अगले वर्ष आयोजित अभियान को मुख्यमंत्री महोदय ने स्वयं मुख्यमंत्री निवास से झंडी दिखाकर भेजा था। इस प्रकार से देखा जाए तो प्रदेश के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों को माउंटेनियरिंग एडवेंचर का उपहार मुख्यमंत्री महोदय द्वारा दिया गया है।

डर के आगे जीत है

डॉ.महावीर सिंह

भय मानव-जीवन की सहज प्रवृत्ति है। भय का भाव होना भी जरूरी है। सुरक्षा, बचाव और सावधानी तभी होगी, जब किसी चीज से भय होगा। मानसकार ने भी कहा है कि भय के बिना प्रीति भी नहीं होती। अनुशासन, व्यवस्था और नियमों आदि के पालन के लिए भय होना आवश्यक है। लेकिन सीमित संदर्भों में ही भय को जायज़ ठहराया जा सकता है। शेर से डरिये, लेकिन तब तक, जब तक वह आपके सामने आकर खड़ा नहीं हो जाता, जब वह आपके सामने खड़ा है तो उससे डरिये मत, मुकाबला कीजिये। शतुरमुर्ग की भाँति संकट आने पर आँख मूँद लेने से तो संकट दूर नहीं हो जाता। सत्य तो यह है कि भीरुता मानव उन्नति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है। यह व्याकुलता, अधीरता, जड़ता, मूढ़ता और संत्रास की जननी है।

मानव जीवन अपने आप में एक एडवेंचर है। यहाँ पग-पग पर विकट परिस्थितियों के रूप में चुनौतियाँ रास्ता रोके खड़ी रहती हैं। कुछ लोग इन चुनौतियों को स्वीकार करने के स्थान पर उनके सामने हथियार डाल देते हैं। ये वही लोग होते हैं जो सदैव अनिष्ट की आशंका से भयभीत रहते हैं। वे अपने सुगमता के दायरे से बाहर निकलने से कतराते हैं। कुछ नया करने से पहले उसके नकारात्मक पक्ष की चिंता करके परेशान होते हैं। यह भाव न केवल वैयक्तिक विकास के मार्ग में रोड़ा बनता है, बल्कि विविध प्रकार की कुंठाओं और मानसिक बीमारियों का कारण भी बनता है। भला सोचिये, डूबने का भय रखने वाले समुद्र की सतह से मोती कैसे ढूँढ़कर लाएँगे। सत्य तो यह है कि इस दुनिया की विकास-गाथा कायर-भीरुओं ने नहीं, बल्कि कर्मवीरों ने अपनी निर्भयता, साहस व पसीने की स्याही से लिखी है।

बालकों के व्यवहार में भय की बहुत सी अनुक्रियाएँ शामिल होती हैं। बाल्यकाल में नादानी व अपरिपक्व सोच के कारण भय का संस्कार बच्चों के मन में आना स्वाभाविक है। 'सर्वांगीण विकास' की अवधारणा तब तक संपूर्णता कैसे पा सकती है जब तक हम स्कूली जीवन से ही विद्यार्थियों को भय नामक भाव पर विजय प्राप्त करने की सीख न दें। ऐसा करने के लिए कक्षा-कक्ष की गतिविधियों के साथ कुछ साहसिक गतिविधियों में उनकी भागीदारी भी आवश्यक हो जाती है। साहस और रोमांच भरी गतिविधियों में उनकी प्रतिभागिता उनमें न केवल सुगम मार्ग की तलाश छोड़ जोखिम उठाने की क्षमता विकसित करती हैं, बल्कि उनकी नैसर्गिक ऊर्जा को सकारात्मक रूप देने के लिए, उनमें परस्पर मैत्री, सामाजिक समरसता, सौहार्दपूर्ण प्रतिस्पर्धा, प्रकृति-प्रेम, राष्ट्र-अनुराग व समावेशी शिक्षा को सशक्त बनाने के लिए भी आवश्यक है।

हरियाणा में हम स्कूली विद्यार्थियों के लिए साहसिक गतिविधियों पर विशेष बल दे रहे हैं। यह हम सब के लिए गर्व की बात है कि इन गतिविधियों के आयोजन में विद्यालय शिक्षा विभाग हरियाणा पूरे देश में सबसे आगे है। 2019-20 में नेशनल एडवेंचर इंस्टीच्यूट पचमढ़ी में आयोजित नेशनल यूथ एडवेंचर शिविरों में हरियाणा राज्य के विद्यार्थियों के प्रतिभागिता देश भर में सर्वाधिक थी। इसके लिए प्रदेश को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित भी किया गया था।

प्रदेश में चलाई जा रही साहसिक व रोमांचक गतिविधियों में हम लगातार विविधता लाने के प्रयास कर रहे हैं। मनाली, मल्लाह व मोरनी में ग्रीष्म व शीतकालीन एडवेंचर कैंपों का आयोजन कई वर्षों से नियमित रूप से हो रहा है। प्रदेश की मेधावी बेटियों को केरल में आयोजित समुद्र तटीय अध्ययन शिविरों में भाग लेने का मौका मिल रहा है। राष्ट्रीय युवा साहसिक संस्थान गदपुरी (हरियाणा) व राष्ट्रीय साहसिक संस्थान पचमढ़ी, (मध्यप्रदेश) द्वारा आयोजित राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय स्तर के एडवेंचर कैंपों में गत कई वर्षों से विद्यार्थियों को भाग लेने के अवसर प्रदान किए जा रहे हैं। विद्यार्थी जब सतपुड़ा के घने बीहड़ों में रातें बिताते हैं, जो यह उनकी जिंदगी में ऐसा अवसर बन जाता है जिसे वे कभी नहीं भूल पाते।

हम सब जानते हैं कि राजकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले बहुत से विद्यार्थी ऐसे परिवारों से आते हैं जो आर्थिक रूप से सबल नहीं हैं। प्रतिभा व क्षमता की कोई कमी

न होने के वावजूद ऐसे विद्यार्थियों के बहुत से सतरंगी सपने केवल इस कारण दम तोड़ देते हैं, क्योंकि वे उन परिवारों से संबंध रखते हैं जो हर रोज़ कुआँ खोदकर पानी पीते हैं और मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ही संघर्षशील हैं। यूनम पीक अभियान को सफलतापूर्वक पूरा करके लौटे एक विद्यार्थी ने बताया कि इससे पहले उसने किसी पर्वतीय स्थान की यात्रा नहीं की थी। इससे पूर्व उसने हिमाच्छादित पर्वतमालाएँ केवल फिल्मों में ही देखीं थीं। वह कभी सोच भी नहीं सकता था कि उसे जीवन में ऐसे किसी अभियान पर जाने का अवसर मिल सकता है। इससे मिलते-जुलते विचार कुछ अन्य बच्चों के भी सुनने को मिले। ऐसे विचार सुनकर ऐसा लगता है कि इन बच्चों के लिए बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। सामान्य बच्चों के लिए भी और उन बच्चों के लिए भी जो विशेष आवश्यकता वाले हैं।

बीते कुछ समय में हमने इन रोमांचक और साहसिक गतिविधियों को काफी विस्तार दिया है। न केवल प्रतिभागियों की संख्या में इज़ाफा किया गया है, बल्कि कुछ नयी गतिविधियाँ भी आरंभ की हैं। इस वर्ष पहली बार मल्लाह, पंचकूला में राज्यस्तरीय विंटर एडवेंचर फेस्टिवल का आयोजन किया। 7 से 11 मार्च तक चले इस फेस्टिवल में पहले से चलाई जा रही साहसिक गतिविधियों- रॉक क्लाइंबिंग, ट्रैकिंग, रैप्लिंग, एयरगन शूटिंग, तीरंदाजी, बर्माब्रिज, कमांडो ब्रिज, पैरलल रोप आदि में पैरासैलिंग व बोटिंग -दो नई गतिविधियों को भी शामिल किया गया। 610 विद्यार्थियों ने इन साहसिक गतिविधियों में भाग लिया, जिनमें 150 दिव्यांग विद्यार्थी थे।

पर्वतारोहण एक अत्यंत रोमांचक गतिविधि है। यह बताते हुए हर्ष की अनुभूति हो रही है कि हरियाणा देश का पहला प्रदेश है, जहाँ स्कूली विद्यार्थियों को इस साहसिक गतिविधि से जुड़ने का अवसर प्रदान किया जाता है। पाँच वर्ष पूर्व यानी 2016 में इस कार्यक्रम को आरंभ किया गया था। तब से आज तक पर्वतारोहण अभियानों के अन्तर्गत प्रदेश के राजकीय विद्यालयों के लगभग 250 विद्यार्थी 'फैंडशिप पीक', 'स्तोक कांगड़ी' व 'यूनम पीक' पर सफलता पूर्वक चढ़ाई कर चुके हैं। इस वर्ष तो विद्यार्थियों ने इतिहास ही रच दिया है। आज़ादी के अमृत महोत्सव पर आयोजित इस अभियान में 75 विद्यार्थियों के दल ने हिमाचल प्रदेश के लाहौल जिले में बारालाचा दर्रा के पास 6,111 मीटर ऊँची चोटी पर फतह हासिल करके व 75 मीटर लंबा तिरंगा प्रदर्शित करके एक नया कीर्तिमान बनाया। इस अभियान की एक उल्लेखनीय बात यह रही कि अभियान दल के एक-तिहाई विद्यार्थी 'विशेष आवश्यकता वाल बच्चे' थे।

विभाग की इच्छा है कि साहसिक व रोमांचक गतिविधियों में अधिक से अधिक विद्यार्थियों को भाग लेने के अवसर प्रदान किए जायें। इसके लिए इस वर्ष राजकीय विद्यालयों में पहली बार एडवेंचर क्लबों के गठन का फैसला लिया गया है। विद्यालय के एक अध्यापक को इन गतिविधियों का इंचार्ज बनाया गया है। यह कार्य उन्हीं अध्यापकों को सौंपा गया, जिनकी इसमें निजी रुचि हो। कार्यक्रम को विधिवत चलाने के लिए यह भी आवश्यक है कि इन इंचार्ज शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाए। प्रशिक्षण का कार्य भी मनाली में आरंभ कर दिया गया है। प्रशिक्षण काफी उच्च स्तर का रखा गया है ताकि प्रशिक्षित अध्यापकगण अपने-अपने कार्य-क्षेत्र में जाकर पूरे मन से एडवेंचर गतिविधियों के साथ विद्यार्थियों को जोड़ सकें व उनका मार्गदर्शन कर सकें। प्रथम चरण में मॉडल-संस्कृति सीनियर सैकेंड्री स्कूलों, आरोही मॉडल सीनियर सैकेंडरी स्कूल, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों के अध्यापकों तथा स्पेशल अध्यापकों का प्रशिक्षण चल रहा है, जिसके तहत कुल 658 अध्यापक प्रशिक्षण ग्रहण कर रहे हैं। अगले चरण में अन्य राजकीय विद्यालयों के अध्यापकों का प्रशिक्षण आरंभ किया जाएगा।

भविष्य में प्रदेश में कुछ नई गतिविधियों को आरंभ करने की योजना है। शीघ्र ही राष्ट्रीय स्तर के साहसिक शिविरों में अन्य गतिविधियों के साथ रिवर राफ्टिंग व हॉट एयर बैलून नामक नई गतिविधियों को शामिल करने की भी योजना है। इसके अलावा अध्यापकों व शिक्षा अधिकारियों को भी साहसिक शिविरों में प्रतिभागिता के अवसर दिये जाएँगे व उन्हें अटल बिहारी वाजपेयी पर्वतारोहण संस्थान से पर्वतारोहण के बेसिक व एडवांस स्तर के प्रशिक्षण दिलाने की व्यवस्था की जाएगी। अभी तक विद्यार्थी समुद्र तटीय अध्ययन शिविरों में केरल जाते थे। भविष्य में उन्हें उड़ीसा के पुरी में ले जाने की योजना है। कार्यक्रम को और विस्तार देते हुए राजस्थान के बीकानेर क्षेत्र में भी डेजर्ट ट्रैकिंग शिविरों का आयोजन किया जाना भी भावी योजनाओं में शामिल है।

अतिरिक्त मुख्य सचिव
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

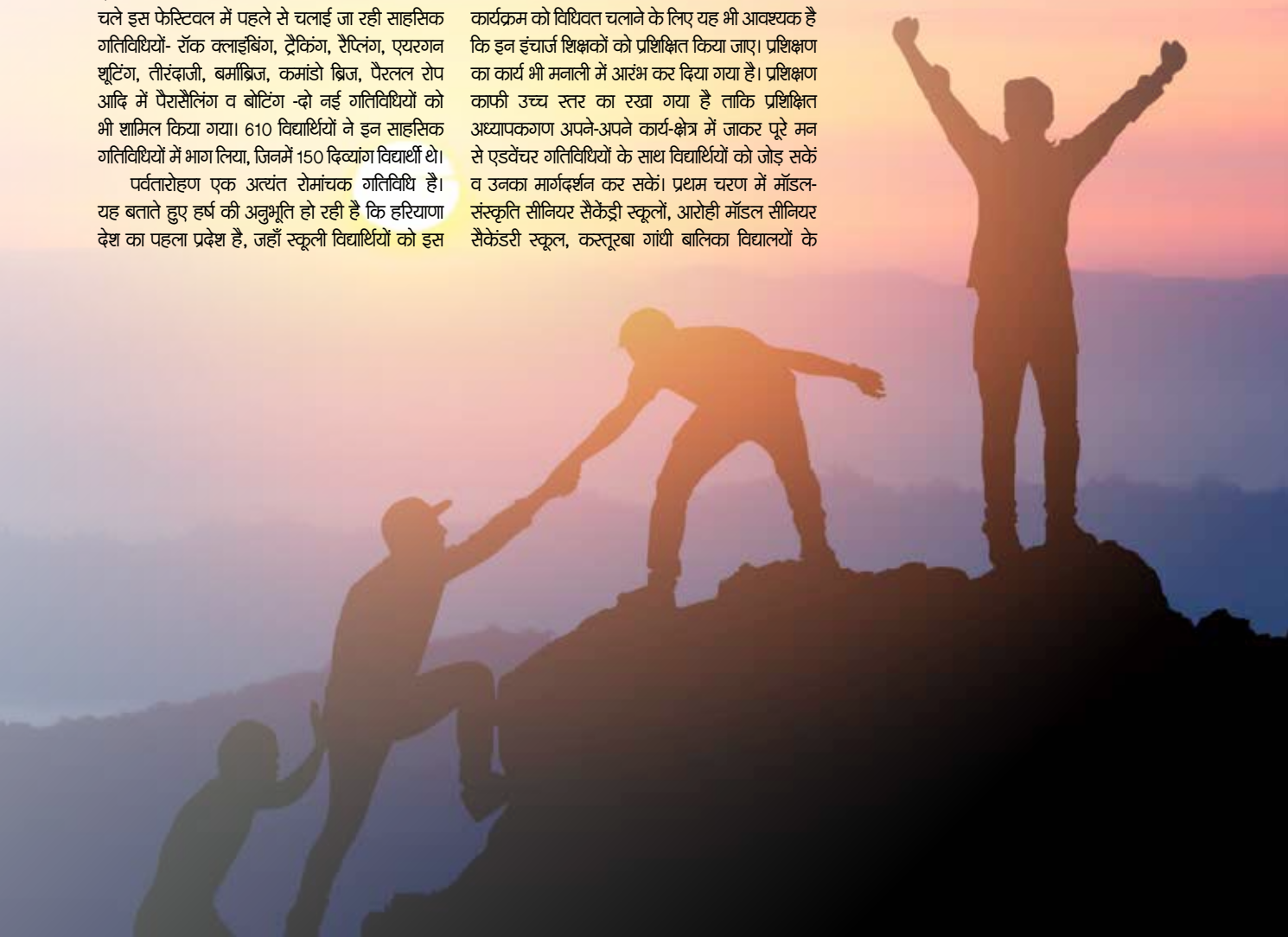

राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों ने फतह की यूनम पीक

दिव्यांग विद्यार्थी भी बने अभियान का हिस्सा

डॉ.ओमप्रकाश कादयान

हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग पंचकूला कुछ वर्षों से प्रदेश के राजकीय विद्यालयों में पढ़ रहे विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए अनेक सार्थक, अनुकरणीय व उपयोगी योजनाएँ बनाकर उन्हें साकार रूप देने के लिए बेहतरीन कार्य कर रहा है। इन योजनाओं से सीधे तौर पर विद्यार्थियों को फायदा हो रहा है। शिक्षा विभाग का उद्देश्य है कि विद्यार्थी पढ़ाई के साथ-साथ अन्य सांस्कृतिक, खेल, कलात्मक व एडवेंचर गतिविधियों में भी सक्षम बन सकें। वे तन, मन व दिमाग से मजबूत बनें। अन्य गतिविधियों के साथ-साथ एडवेंचर गतिविधियों में विद्यार्थी शायद सबसे ज्यादा सीख पाता है। एडवेंचर में विद्यार्थी जो खुद करता है, अनुभव की आँखों से देखता है, मन से महसूस करता है वो उन्हें अधिक अनुभवी व सक्षम बनाता है। एडवेंचर टूर बच्चों को बहुत कुछ ऐसा सिखाते हैं जो किताबें नहीं सिखा पातीं। यही सीख उम्र भर काम भी आती है। इन दोनों में बच्चा सीधे तौर पर प्रकृति व भारत की विभिन्न संस्कृतियों से साक्षात्कार करता है। ऊँचे पहाड़ों, ग्लेशियरों, घाटियों, सुंदर वादियों, हरे-भरे जंगलों, नदियों, झरनों, झीलों, समुद्र, मरुस्थलों, मैदानों व सीढ़ीदार खेतों, कलात्मक

मकानों, विभिन्न संस्कृतियों, कलाओं को खुद देखता है तो अपने राष्ट्र को जानने के सुअवसर प्राप्त होते हैं। देश के प्रति लगाव व यही जानकारी एक अच्छे देश निर्माण में सहयोग करती है।

शिक्षा विभाग केरल, पंचमढ़ी, मनाली, डलहौजी, मल्लाह, मोरनी, गदपुरी आदि खूबसूरत पर्यटन स्थलों पर एडवेंचर टूर आयोजित करता है। इन्हीं के साथ पर्वतारोहण के महत्त्व को समझते हुए पिछले कई वर्षों से फ्रेंडशिप पीक अभियान चलाया गया जो सफल रहा। ये अभियान भविष्य में एवरेस्ट फतेह करने की ओर एक कामयाब व बेहतरीन प्रयास साबित हो सकता है। इसी प्रयास में और आगे बढ़ते हुए अबकी बार यूनम पीक अभियान कार्यक्रम चलाया गया जिसमें हरियाणा भर से 75 विद्यार्थियों, शिक्षकों ने पूरे जुनून के साथ भाग

लिया। हर जिले से एक प्रतिभावान छात्र, एक छात्रा तथा एक दिव्यांग बच्चे समेत कुछ शिक्षकों ने भाग लिया। शिक्षकों में पर्वतारोही संदीप आर्य (कुरुक्षेत्र), श्रवण कुमार (करनाल), जसबीर कौर (कैथल) ओमप्रकाश कादयान (फतेहाबाद), नरेंद्र बल्हारा (पंचकूला), सरोज (फरीदाबाद), अंजू दहिया (सोनीपत), रोहिणी (पानीपत), सुनीता (जींद), कुमुद शर्मा (अंबाला), मोना साहू (जींद), विवेक आर्य (पंचकूला) शामिल थे। इनके अलावा तीन एवरेस्टर गणेश चंद्र जैना (उड़ीसा), रामरत्न पाण्डेय (मप्र) तथा अनिता चोकन (हरियाणा) भी इस अभियान में सम्मिलित हुए ताकि बच्चों का मार्गदर्शन हो सके।

इस अभियान का उद्देश्य यह भी था कि आज़ादी के अमृत-महोत्सव के मौके पर 75 स्कूली बच्चों, शिक्षकों द्वारा यूनम पीक पर 75 मीटर लंबा तिरंगा फहराया जाए। इसी उम्मीद, उद्देश्य व जुनून को लेकर हरियाणा भर से छात्र-छात्राएँ व कुछ शिक्षक 28 सितंबर को पंचकूला के सेक्टर 26 स्थित राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में इकट्ठे हुए। हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा फतेहाबाद के जिला शिक्षा अधिकारी दयानंद सिहाग के माध्यम से हमारे विद्यालय में भेजा ड्यूटी-लैटर जब मुझे मिला तो मैं नई ऊर्जा व खुशी के साथ अपना बैग तैयार कर पंचकूला की ओर हो लिया। मन में नई जगह देखने व नई पीक फतह करने की गहरी इच्छा थी। बस के छह घंटे के सफर के उपरांत मैं जब सैक्टर-26 पंचकूला के राजकीय विद्यालय में पहुँचा तो कुछ नए तथा कुछ पुराने शिक्षक मित्रों व हरियाणा भर से आए ऊर्जावान विद्यार्थियों से भेंट हुई। खाना तैयार था, सभी ने खाना खाया, आराम किया, फिर सभी बच्चों को इकट्ठा कर जरूरी निर्देश दिए तथा यूनम पीक अभियान के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम अधिकारी रामकुमार ने अपने संबोधन से सभी बच्चों में नई ऊर्जा व जोश का संचार किया। साथ आए शिक्षकों ने भी बच्चों को संबोधित किया।

'लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड' में दर्ज होगा कीर्तिमान

विभाग ने इस अभियान को विश्व रिकॉर्ड के रूप में दर्ज कराने की प्रक्रिया आरंभ कर दी है, क्योंकि दिव्यांग छात्रों ने पहली बार छह हजार मीटर से अधिक के अभियान में भाग लिया है। यह बात भी अभूतपूर्व है कि 75 स्कूली छात्रों के एक बड़े दल ने 6,000 मीटर से अधिक ऊँचाई के पर्वतारोहण अभियान में प्रथम बार हिस्सा लिया है। साथ ही इतनी ऊँचाई पर 75 मीटर लंबा ध्वज प्रदर्शन भी प्रथम बार हुआ है। इस कीर्तिमान को 'लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स, एशियन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्डस और इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्डर्स में दर्ज कराने के लिए संबंधित एजेंसियों से आवश्यक दस्तावेजी प्रमाणों के साथ संपर्क साधा जा रहा है।

सम्वर्तक सिंह
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन-1)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

शहीद भीम सिंह राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय महेन्द्रगढ़ की छात्रा स्वाति का कहना है कि पीक फतेह के दौरान हमने जो अद्भुत नजारे देखे उसे हम उम्र भर नहीं भूल पाएँगे। हमने गिरती हुई बर्फ देखी, नदी, झरने, जंगल देखे, ग्लेशियर देखे जो इससे पहले हमने कभी नहीं देखे थे। इस यात्रा से हमने ऐसा बहुत कुछ सीखा है जो हम किताबों से भी नहीं सीख पाए। मैं शिक्षा विभाग की आभारी हूँ।

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जींद की ईशा का कहना है कि हमें यहाँ आकर अलग-अलग मौसमों का आभास हुआ। कहीं धूप है तो कहीं बादल, कहीं बारिश हो रही है तो कहीं स्नो फॉल। पहाड़ों के निचले हिस्से में नदी बह रही है, बीच में झरने हैं तो चोटियों पर ग्लेशियर। मनाली के आस-पास हरे-भरे जंगल हैं तो जिस्पा से आगे सूखे पहाड़। मनाली में भरपूर ऑक्सीजन है तो ऊपर ऑक्सीजन की इतनी कमी है कि साँस लेना भी कठिन हो रहा था।

राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत की छात्रा साक्षी का मानना है कि इस तरह के भ्रमण हमें बहुत कुछ सिखाते हैं। हमने मनाली तथा जिस्पा तक खूब मस्ती की। यह अनुभव मेरी जिंदगी का पहला अनुभव था, क्योंकि इससे पूर्व मैंने पर्वतीय इलाके नहीं देखे थे। सेब के पेड़ भी पहली बार देखे। जिस्पा से आगे काफी दिक्कत का सामना करना पड़ा। हरियाली गायब, ऑक्सीजन की कमी, चलने में भी कठिनाई आ रही थी। कुछ बच्चों की तबीयत खराब हो गई। लेकिन अध्यापक लगातार हौसला बढ़ा रहे थे। जिस कारण मैंने हिम्मत नहीं हारी तथा चोटी पर सफलतापूर्वक चढ़ाई की। इस अभियान से मैंने सीखा कि अगर हौसला दृढ़ हो तो व्यक्ति कठिन से कठिन परिस्थितियों का भी मुकाबला कर सकता है।

शहीद राजबीर राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय गढ़ी पट्टी, पलवल की छात्रा टीना ने बताया कि हमने यहाँ आकर अपने आपको मजबूत बनाया तथा वातावरण के अनुसार ढालना सीखा है। ये भी सीखा कि हम अपने इरादों, अपने लक्ष्य में मजबूती के साथ कामयाब हों, किन्तु इसके साथ-साथ स्वास्थ्य का ध्यान रखना भी जरूरी है। हमने हमारे मार्गदर्शक (साथ रहे) शिक्षकों तथा साथ चल रहे दिव्यांग बच्चों से भी बहुत कुछ सीखा। ये अनुभव हमारे जीवनभर काम आएँगे।

- शिक्षा सारथी डेस्क

प्रतिभागी छात्र एवं शिक्षक		
क्रमांक	नाम	जिले का नाम
1	तनुज	अंबाला
2	राजू	अंबाला
3	हर्ष	भिवानी
4	कपिल कुमार	चरखी दादरी
5	अमन कुमार	फरीदाबाद
6	साहिल कुमार	फतेहाबाद
7	प्रकाश कुमार	गुरुग्राम
8	राजकुमार	हिसार
9	सुमित कुमार	झज्जर
10	सोनू	जींद
11	हर्ष	कैथल
12	नितिन	करनाल
13	अमन कौशिक	कुरूक्षेत्र
14	नीरज	महेंद्रगढ़
15	नरेंद्र	नूह
16	रितेश	पलवल
17	रामनिवास	पंचकूला
18	मोहित	पानीपत
19	अभिषेक	रेवाड़ी
20	अरुण	रोहतक
21	गोबिंद	सिरसा
22	अर्जुन	सोनीपत
23	चाहत	यमुनानगर
24	श्री ओमप्रकाश कादयान	फतेहाबाद
25	श्री नरेंद्र बलहारा	पंचकूला

उन्होंने छोटी-छोटी कुछ कहानियाँ सुनाकर बुलंदियों को छूने की चाहत पैदा की तथा बेहतर इंसान बनने व दूसरों के लिए कुछ करने की प्रेरणा दी। उन्होंने ये भी कहा कि हम सब बड़े अभियान में निकले हैं इसलिए हमारी लक्ष्य-प्राप्ति में हमारे कदम जोश व हिम्मत से आगे तो बढ़ते रहें, किंतु प्रकृति या पर्यावरण को किसी भी तरीके से कोई हानि न हो। पहाड़ हमारे पिता समान हैं। हमें बहुत कुछ देते हैं इसलिए पहाड़ों को स्वच्छ रखने में हमारा महत्त्वपूर्ण योगदान होना चाहिए। रामकुमार ने सूचना दी कि अगले दिन यानी 30 सितंबर को मुख्यमंत्री महोदय हरियाणा निवास, चंडीगढ़ से फ्लैग ऑफ करेंगे। ये खबर सुनकर सभी बच्चों के चेहरे पर मुस्कान आ गई।

इसके बाद सभी बच्चों को हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग की ओर से टी-शर्ट और ट्रैक सूट दिया गया ताकि बच्चे एक तो अनुशासित लगें दूसरा अभियान में शामिल सभी बच्चों की पहचान दूर से हो सके। तीसरा बच्चों की कुछ ज़रूरतें पूरी हो सकें। अगले दिन सभी बच्चे व शिक्षक बसों में बैठकर चंडीगढ़ हरियाणा निवास की ओर रवाना हुए नई उमंगों के साथ, क्योंकि उन्हें मुख्यमंत्री से मिलने का सीधे तौर पर मौका मिल रहा था। मुख्यमंत्री के आने का समय 11:00 बजे था। हम सभी डेढ़ घंटे पहले हरियाणा निवास पहुँच गए। वहीं पर सभी बच्चों के लिए नाश्ते की व्यवस्था थी। सभी समय से आधा घंटा पहले सभी अपनी-अपनी सीट पर बैठ गए। मुख्यमंत्री महोदय ठीक समय पर आए। उनका जोरदार स्वागत हुआ। मंच-संचालन कर रहे डॉ. प्रदीप राठौर ने मुख्यमंत्री महोदय को यूनम पीक फतेह अभियान की पूरी जानकारी दी, इसके उद्देश्य, महत्त्व व भविष्य में होने वाले सुपरिणामों पर प्रकाश डाला। मुख्यमंत्री महोदय ने बच्चों से ढेर सारी बातें की, कुछ अपने जीवन व बचपन के अनुभव सांझे किए। इसके बाद बच्चों के साथ ग्रुप फोटो करवाया तथा अभियान के लीडर पर्वतारोही संदीप आर्य को फ्लैग सौंपा। इस मौके पर पूर्व मुख्य सचिव एससी चौधरी, माध्यमिक शिक्षा निदेशक डॉ.जे गणेशन, मौलिक शिक्षा निदेशक डॉ.अंशज सिंह, अतिरिक्त निदेशक माध्यमिक शिक्षा विवेक कालिया, संयुक्त निदेशक विजय कुमार यादव व गौरव चौहान (संयुक्त -एसपीडी), सहायक निदेशक नंदकिशोर वर्मा, रजनीश शर्मा (कॉर्डिनेटर आईईडी, सहायक निदेशक कुलदीप मेहता, कार्यक्रम

अधिकारी रामकुमार, अजय मोहन, संजय भारद्वाज आदि मौजूद थे।

अब शाम को पूरी तैयारियों के साथ सभी बच्चे, शिक्षक व कुछ पर्वतारोही दो बसों में सवार होकर मनाली की ओर रवाना हुए। हमारे साथ तीन एवरेस्टर भी थे। बच्चे नाचते, गाते, पूरे जुनून के साथ उस सफर पर अग्रसर थे, जहाँ आजादी के 75वें अमृत-महोत्सव पर 75 मीटर का राष्ट्रीय ध्वज 75 बच्चों और शिक्षकों द्वारा पीक पर फहरा कर नया विश्व रिकॉर्ड बनने जा रहा था। खास बात ये थी कि इस ग्रुप में 22 दिव्यांग बच्चे शामिल थे। वे शिक्षा विभाग की ओर से नया कीर्तिमान स्थापित करने जा रहे थे। बस का सफर जारी था। कुछ देर बाद सभी सो गए थे। सुबह हुई तो हमारी बस ऊँचे पहाड़ों, घाटियों से होती हुई ब्यास नदी के किनारे-किनारे अपनी गति से आगे बढ़ रही थी। बच्चे उठे, बाहर झाँका तो मौसम, वातावरण, भौगोलिक स्थिति, सब परिवर्तित था। ठंड बढ़ गई थी। हरे-भरे जंगल, पहाड़, झरने, बादल, पहाड़ों की ऊँची ढलान पर खतरनाक स्थिति में दिख रहे कलात्मक मकान, उड़ते पंछी, जनजीवन के दिव्य नज़ारे थे। बच्चों ने प्रकृति के एक नए रूप का साक्षात्कार किया। यादगार, मनोहारी दृश्यों वाले सफर के उपरांत, मनाली के भानु-पुल के पास हमारी बसें रुकीं। यहाँ पर पुल पार हमारी साइट थी जहाँ हमें रुकना था। साइट पर पहुँचकर बच्चे नहाए-धोए, खाना खाया, आराम किया। फिर दोपहर बाद बच्चे यहाँ से सामने पहाड़ों से गिरता दिख रहा पारसा झरना देखने के लिए करीब 3 किलोमीटर की ट्रैक के लिए तैयार हो गए। पहाड़ों की चढ़ाई चढ़ते हुए, जंगल के बीच से गुजरते हुए झरने पर पहुँचे तो बच्चों ने खूब मस्ती की, ढेर सारी फोटो खींची। वापस आकर खा-पीकर अपने-अपने टैंटों में सो गए। अगले दिन पूरे ग्रुप को हमने दो भागों में बाँटा। आधे बच्चों को मनाली घूमने के लिए रवाना किया तो दूसरे दल को पीक के लिए रवाना किया गया।

पूरे दल के आधे सदस्य तीन मिनी बसों में सवार होकर साइट से चले। मनाली, सोलंग वैली से गुजरते हुए करीब 9 किलोमीटर लंबी रोहतांग सुरंग से होकर चलना सबके लिए कौतूहल का व रोमांच से परिपूर्ण सफर था,

प्रतिभागी सीडब्ल्यूएसएन विद्यार्थी एवं शिक्षक

क्रमांक	नाम	जिले का नाम
1	ईशा	अंबाला
2	निखिल सिंह	भिवानी
3	रमेश	चरखी दादरी
4	सुमित	फतेहाबाद
5	सन्नी कुमार	गुरुग्राम
6	सुप्रिया	हिसार
7	आशु	झज्जर
8	कोमल	जींद
9	अरविंद	कैथल
10	अंकुश	करनाल
11	गौरव कुमार	महेंद्रगढ़
12	खालिद	नूह
13	भीम	पलवल
14	आशु	पंचकूला
15	अजय	पानीपत
16	सन्नी	रेवाड़ी
17	रोहित	रोहतक
18	रायकोटी सिंह	सिरसा
19	अभिषेक	सोनीपत
20	अमनदीप कौर	यमुनानगर
21	दक्षम	यमुनानगर
22	श्रीमती मोना	जींद
23	श्रीमती पिंकी शर्मा	रोहतक
24	श्रीमती कुमुद शर्मा	अंबाला
25	श्री विवेक कुमार राय	पंचकूला

प्रतिभागी छात्राएँ एवं शिक्षक		
क्रमांक	विद्यार्थी का नाम	जिले का नाम
1	प्रीति	अंबाला
2	खुशी	भिवानी
3	नेहा	चरखी दादरी
4	बबली	फरीदाबाद
5	मुस्कान	फतेहाबाद
6	रीतू	गुरुग्राम
7	रिंकू	हिसार
8	तनु	झज्जर
9	ईशा	जींद
10	निशा देवी	कैथल
11	माफी	करनाल
12	रज्जी	कुरुक्षेत्र
13	स्वाति कुमारी	महेंद्रगढ़
14	जागृति	नूह
15	टीना	पलवल
16	रिया सैनी	पंचकूला
17	साक्षी	पानीपत
18	भारती	रेवाड़ी
19	आरती	सिरसा
20	मंजू	सोनीपत
21	पारूल	यमुनानगर
22	श्रीमती रोहिणी	पानीपत
23	श्रीमती सरोज	फतेहाबाद
24	श्रीमती अंजु	सोनीपत
25	श्रीमती सुनीता	जींद

क्योंकि रोहतांग की अटल टनल सबसे ऊँचाई पर विश्व की सबसे बड़ी सुरंग है। सुरंग न होने पर पहले ये सफर 5-6 घंटे में तय होता था, जो अब 9 किलोमीटर लंबी सुरंग होने के कारण मात्र 15 मिनट में तय किया जाता है। सुरंग निर्माण से करीब 46 किलोमीटर की दूरी कम हो गई, समय भी कम हो गया। सुरंग पार करके सभी 10 मिनट के लिए रुके, फोटो खिंचवाए तथा फिर आगे बढ़े। सर्दियों में सुरंग पार काफी भीड़ होती है क्योंकि यहाँ का पूरा इलाका बर्फबारी से ढक कर अति आकर्षक हो जाता है। यहाँ से बहने वाली नदी चन्द्रभागा भी बर्फ के आगोश में आ जाती है।

अटल टनल से तेलिंग, सिस्सु, घोंघला, तांदी, दंगर, थिरोट, धार, केलांग, गेमुर, जिस्पा, दारचा, बारालाच्चा होते हुए भरतपुर जाया जाता है। टनल से निकलकर सिस्सु पहला मुख्य गाँव पड़ता है। यहाँ तक खूब हरियाली है। सीढ़ीदार खेत, प्राकृतिक सौंदर्य, पर्यटकों के लिए कई कैंपसाइट हैं। यहाँ चंद्रभागा नदी के दूसरी और एक सुंदर झरना भी है जहाँ पर्यटक खिंचे चले आते हैं। एक हेलीपैड भी है। सर्दियों में बर्फ से रास्ते बंद होने पर ये काम आता है। मनाली से यहाँ पर्यटक आते हैं। इस रास्ते पर जगह-जगह ढाबे मिल जाते हैं। हम पहाड़ों का सौंदर्य निहारते आगे बढ़ रहे थे। ज्यादातर बच्चे इतने लंबे सफर पर घर से इतनी दूर पहली बार आए थे। वे झरनों, सीढ़ीदार खेतों, जंगलों, आसमान छूते पर्वतों, आसपास उमड़ते-घुमड़ते मेघों, ग्लेशियरों से ढकी चोटियों, जगह-जगह पड़ी विशाल शिलाओं, पल-प्रतिपल बदलते मौसम, कभी-धूप, कभी-छाँव, कभी बरसात की फुहारों, घाटियों, वादियों, रास्ते में आने वाले छोटे-छोटे गाँव, ऊँचे-नीचे रास्ते, पीठ पर बोझा लेकर पगडंडियों पर चलती पहाड़ी महिलाओं, पहाड़-सी जिंदगी जीते वहाँ के लोगों को देखते, महसूस करते आगे बढ़ रहे थे। ये वे दृश्य थे जो उन्हें अपनी कोर्स की किताबों में या आसपास नहीं मिलते। इन एडवेंचर भ्रमणों का लक्ष्य बच्चों को घुमाना या पीक फतेह करना ही नहीं होता, बल्कि बच्चों को अपने देश की विभिन्न संस्कृतियों, कला व विभिन्न बोलियों, वेश-भूषाओं, विभिन्न भौगोलिक स्थितियों, जंगलों, वनस्पतियों से परिचय करवाना भी होता है। इन यात्राओं से बच्चे जो सीखते हैं वो उम्र भर नहीं भूलते, किताबी ज्ञान बेशक मंद पड़ जाए। यात्राओं के ये अनुभव उनके उम्र भर काम आते हैं। और जब इन यात्राओं के अनुभव व किताबी ज्ञान दोनों मिल जाते हैं तो अपने जीवन को बेहतर ढंग से जीने की कला तो शायद सीख ही लेते होंगे।

बसें आगे बढ़ रही थीं। बच्चों का अनुभव भी बढ़ रहा था। बच्चों के मन में नई जिज्ञासाएँ, नई उमंगें जन्म ले रही थीं। उनमें आगे बढ़ने की ललक, कुछ नया करने का जुनून, कुछ पाने की चाहत थी। इस सफर में एक और खास बात ये भी थी। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ रहे थे जंगल, पेड़-पौधे, घास यानी हरियाली पीछे छूटती जा रही थीं। पौधों का आकार छोटा हो रहा था, कम हो रहे थे, घास कम दिखने लगी थी। पहाड़ नंगे होते जा रहे थे। पथरीले पहाड़ों की संख्या बढ़ रही थी। चोटियों पर बर्फ जमी दिख रही थी। आगे बढ़ने पर तांडी नाम की जगह आई। यहाँ हम बस से उतरे। कुछ ठहरे, फोटो खींचे। यहाँ चंद्र और भागा नदियों का संगम है। संगम के बाद इस नदी का नाम चंद्रभागा हो जाता है और जब ये चंद्रभागा कश्मीर में घुसती है तो इसका नाम चिनाब हो जाता है। यही नदी पाकिस्तान में जाती है। चिनाब नदी से सैकड़ों ऐतिहासिक, धार्मिक व प्रेम कहानियाँ जुड़ी हुई हैं।

करीब ढाई-तीन घंटे के सफर के बाद हम जिस्पा पहुँचे। यहाँ हमने अटल बिहारी वाजपई इंस्टीट्यूट ऑफ माउंटेनियरिंग में रुकना था। अपने बैग उतारे, चाय पी तथा अपने-अपने कमरों में सामान रखा। एक घंटा आराम करके सभी को ट्रैकिंग के लिए पहाड़ों की ढलानों पर ले गए। एक बार मौसम खराब हुआ। आसमान में सुंदर इंद्रधनुष बनते देख बहुत अच्छा लगा। ये हमारी उम्मीदों का इंद्रधनुष था। दो ढाई किलोमीटर की ऊँचाई चढ़ी फिर उतराई। यहाँ पर मोरपंख के जंगल हैं। हरियाली कम है, घास न के बराबर है। इसलिए यहाँ ऑक्सीजन की कमी महसूस होती है, थकान जल्दी होती है। सिर दर्द शुरू हो जाता है। किसी-किसी को उल्टियाँ भी आ जाती हैं।

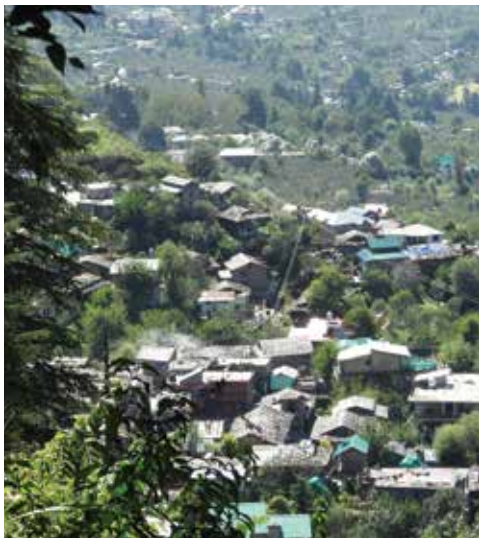

हमारे दल के कुछ सदस्यों को भी ये शिकायत हुई, किंतु अगली सुबह तक ठीक हो गए। तीन अक्टूबर को हम सुबह जिस्पा से निकले। आगे पहाड़ों की चढ़ाई धीरे-धीरे अधिक हो रही थी। ऊँचाई बढ़ने के साथ-साथ हरियाली गायब हो रही थी। हरियाली गायब होने का अर्थ था कि धीरे-धीरे ऑक्सीजन भी कम हो रही थी, किंतु अभी सब ठीक-ठाक थे। आगे एक बड़ा पुल आया। डारचा नामक स्थान पर ही चेक पोस्ट थी। इसके दायीं ओर एक तरफ ढेर सारा मलबा पड़ा हुआ था। पत्थर ही पत्थर। जानकारी के अनुसार पहले यहाँ एक गाँव था, उस पर पूरा पहाड़ खिसक कर गिर गया। इस हादसे में गाँव के मात्र दो या तीन लोग ही बचे। शेष सभी अपने घरों समेत पहाड़ के मलबे के नीचे दबकर काल का ग्रास बन गए थे। बाद में बचे लोगों ने नदी की दूसरी ओर दोबारा बसना आरंभ किया।

हम थोड़ी दूर आगे बढ़े तो एक बड़ा हरा बोर्ड लगा था, जो बता रहा था कि ये रोड जंस्कार, चीका, शिंखुला व पादुम जा रही है। यहाँ से एक रास्ता दाएँ ओर ऊपर चढ़कर बारालाच्चा ला की ओर जा रहा था जो हमारा रास्ता था। अब हमारी बस अधिक ऊँचाई पर थी। हरियाली बिल्कुल गायब, मोबाइल की रेंज भी खत्म हो चुकी थी। अब हम पाँच-छह दिन बिना किसी को फोन किए, बिना फेसबुक के रहने वाले थे। पूरी दुनिया से कट कर अपनी ही एक दुनिया में, जिसमें कुछ शिक्षक, कुछ बच्चे, कुछ रसोइए हमारे साथ थे। किंतु नदी के दूसरी ओर अब भी

संदीप आर्य : पर्वतारोहण मेरे लिए जुनून

यूनम पीक के अभियान का नेतृत्व संदीप आर्य ने किया। संदीप कुरुक्षेत्र के रावमा विद्यालय खरौंडवा में संस्कृत अध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। वे 2017 से विभाग के पर्वतारोहण अभियान से जुड़े हुए हैं।

संदीप बताते हैं कि उन्होंने 2007 में ट्रैकिंग की शुरूआत की थी। उसके बाद तो यह जुनून बढ़ता ही चला गया। अब तो इनका मन कंकरीट के शहरों से ज्यादा पहाड़ों, वादियों और वनों में लगता है। संदीप बताते हैं कि उनकी माता जी कला-अध्यापिका रही हैं। बचपन में वे इन्हें अपने साथ अपने विद्यालय में ले जाती थीं और विद्यालय के पुस्तकालय में बैठ कर पुस्तकें पढ़ने पर बल देती थीं। वहीं पर इन्होंने एक पुस्तक देखी, जिसमें कुछ पर्वतारोही किसी चोटी की ओर बढ़ रहे थे। उस पुस्तक ने ही पर्वतारोहण के बारे में पहली बार प्रेम जागृत किया। पहली बार 2010 में एक पर्वतारोही दल के साथ एवरेस्ट बेस कैंप जाने का अवसर मिला। वहीं इन्होंने पर्वतारोहण का प्रशिक्षण लिया। वर्ष 2012 में 'बेसिक माउंटेनियरिंग कोर्स किया तथा इसी वर्ष 'फैंडशिप पीक' पर गए। इसके बाद एडवांस माउंटेनियरिंग कोर्स तथा बेसिक व एडवांस रॉक क्लाइबिंग तथा एमओआई कोर्स किए।

2012 से आज तक 7 बार फैंडशिप पीक पर जा चुके हैं। 2016 में लद्दाख में एक विरजिन पीक पर सफलता से चढ़ाई की। इसके अतिरिक्त अब तक सीबी-13, यूनम पीक, काला पत्थर, चामसेर कांगड़, देओ टिब्बा आदि पंद्रह चोटियों पर जा चुके हैं।

संयोग से इनके नाम के साथ एक अन्य उपलब्धि भी जुड़ी है। 2017 में जब वे इंडियन माउंटेनियरिंग फाउंडेशन के 'क्लाइबिंग एंड क्लीनिंग प्रोग्राम' में भाग लेते हुए हिमाचल प्रदेश के ढाका ग्लेशियर में थे, तो उस समय इन्हें 1968 में भारतीय वायु सेना के क्रैश होकर लापता हुए एन-12 विमान का मलबा मिला, जिसकी सूचना इन्होंने सेना के अधिकारियों को दी। इस प्रकार इनके प्रयासों से 50 वर्ष पूर्व क्रैश हुए वायु-सेना के विमान की जानकारी जगजाहिर हुई।

- शिक्षा सारथी डेस्क

पर्वत-शिखर बाँहें फैलाकर मुझे बुलाते हैं : श्रवण

श्रवण सिंह विज्ञान अध्यापक के रूप में करनाल ज़िले के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कोहंड में कार्यरत हैं। इन्होंने 2016 में शिक्षा विभाग, हरियाणा के पहले पर्वतारोहण अभियान फ्रेंडशिप पीक एक्सपीडिशन में 21 बच्चों के साथ शिक्षा विभाग का प्रतिनिधित्व किया और सफलतापूर्वक फ्रेंडशिप पीक (5,189 मीटर) पर तिरंगा फहराया। यह फ्रेंडशिप पीक एक्सपीडिशन शिक्षा विभाग ने सैनिक स्कूल कुंजपुरा करनाल के साथ किया था। नवंबर 2017 में नेशनल एडवेंचर प्रोग्राम पचमढ़ी (मध्य प्रदेश) में हरियाणा राज्य के स्कूलों में पढ़ने वाले दिव्यांग बच्चों के साथ भाग लिया और प्रशिक्षक की भूमिका निभाई। फरवरी 2018 में अंतरराष्ट्रीय एडवेंचर प्रोग्राम में हरियाणा के राजकीय स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के साथ हिस्सा लिया। मई-जून 2018 में फ्रेंडशिप पीक पर्वतारोहण अभियान में लड़कों के दल के साथ भाग लिया।

सितंबर 2018 में रक्षा-मंत्रालय भारत-सरकार द्वारा संचालित जवाहर इंस्टीट्यूट ऑफ माउंटेनियरिंग से बेसिक कोर्स ए ग्रेड के साथ उत्तीर्ण किया। जुलाई-अगस्त 2019 में 24वे वर्ल्ड स्काउट जंबूरी नॉर्थ अमेरिका में आईएसटी के रूप में वेस्ट वर्जिनिया (यूएसए) में भारत का प्रतिनिधित्व किया। वहाँ अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से ब्रावो कैंप चीफ मि. स्कॉट सचान से प्रशंसा-पत्र प्राप्त किया। यहाँ इन्हें मैन वर्सिज वाइल्ड फेम बेयर ग्रिल्स से मिलने का भी अवसर भी मिला। सितंबर 2020 में नेशनल ट्रेनिंग सेंटर पचमढ़ी, मध्य प्रदेश द्वारा पहले ऑनलाइन प्री-एएलटी कोर्स में भाग लिया व उत्कृष्ट प्रदर्शन कर कोर्स को पूरा किया। हाल में ही हुए माउंट यूनम पर्वतारोहण अभियान का हिस्सा भी रहे।

- शिक्षा सारथी डेस्क

डॉ. जसबीर : विभाग की पहली माउंटेनियरिंग प्रशिक्षित शिक्षिका

डॉ.जसबीर कौर कैथल के ग्योंग गाँव के आरोही मॉडल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में हिंदी प्राध्यापिका के पद पर कार्यरत हैं। इन्होंने रक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा संचालित नेहरू इंस्टीट्यूट ऑफ माउंटेनियरिंग का बेसिक कोर्स अपनी दक्षता, कुशलता व मेहनत से 'ए' ग्रेड के साथ उत्तीर्ण किया है। इस कोर्स में 'ए' ग्रेड हासिल करना बड़ा कठिन होता है। इसे हासिल करने के लिए भारतीय सेना व वायुसेना के बहुत से सिपाही भी पिछड़ जाते हैं। हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग की जसबीर कौर पहली महिला हैं जिन्होंने इस ट्रेनिंग को 'ए' ग्रेड से प्राप्त किया है।

इस कोर्स में रॉक क्राफ्ट में रॉक्स की विस्तृत जानकारी दी जाती है। रॉक क्लाइंबिंग और रेपेल्लिंग के तरीके सिखाये जाते हैं। स्नो क्राफ्ट में स्नों में चलने की तकनीक, 2 पॉईंट व 4 पॉईंट ट्रेनिंग दी जाती है। पर्वतारोहण के दौरान इस्तेमाल होने वाले सभी टूल्स की जानकारी व प्रयोग सिखाया जाता है। अलग-अलग प्रकार की गाँठें लगाना सिखाया जाता है, जो विभिन्न प्रकार के बेस बनाने व टेंट लगाने के लिए इस्तेमाल की जाती हैं। बादलों को देखकर मौसम का अनुमान लगाना व प्राथमिक चिकित्सा का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

इन्होंने 2017 में हरियाणा की लड़कियों के फेंडशिप पीक एक्सपीडिशन का नेतृत्व किया। देश में छात्राओं के लिए एक्सपीडिशन की यह अनूठी पहल थी। इसके बाद 2018 में भी इन्होंने फेंडशिप पीक एक्सपीडिशन का नेतृत्व किया। यूनम अभियान में भी इन्होंने लड़कियों के दल का नेतृत्व किया। ये दो बार नेशनल एडवेंचर इंस्टीट्यूट व दो बाद इंटरनेशनल लेवल पर हिस्सा ले चुकी हैं। अब इनकी इच्छा है कि अफ्रीका की किलीमंजारो पीक व यूरोप की एलब्रुस पीक पर सरकारी विद्यालय की छात्राओं के साथ तिरंगा फहराया जाए।

- शिक्षा सारथी डेस्क

पर्वतारोहण का जुनून है नरेन्द्र बल्हारा को

पंचकूला के जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में जिला इको क्लब इन्चार्ज का कार्यभार सम्भालने वाले नरेन्द्र बल्हारा ने पर्वतारोहण से सम्बन्धित कोई कोर्स या ट्रेनिंग तो नहीं की, किन्तु इन्हें पर्वतारोहण का बेहद शौंक है। यही कारण है कि ये मौका मिलते ही ये दुर्गम पर्वतीय यात्राओं के लिए निकल जाते हैं। है। रोहतक के गिरावड़ गाँव में 1973 में जन्मे तथा वर्तमान में पंचकूला में रह रहे नरेन्द्र बल्हारा कठिन यात्राएँ करने व ऊँचे पहाड़ों पर चढ़ने में सक्षम हैं। इसी जोश व हिम्मत के बल पर ये 2018 में 5,289 मीटर ऊँची फ्रेंडशिप पीक पर सक्षम पर्वतारोहियों की तरह चढ़ गए और साथ में चल रहे विद्यार्थियों का हौसला बढ़ाते रहे। यही नहीं, मौका मिलने पर पिछले दिनों हरियाणा शिक्षा विभाग द्वारा लाहौल स्पीति इलाके में स्थित 6,111 मीटर ऊँची यूनम पीक फतेह अभियान में शामिल होकर जोश व हिम्मत का परिचय दिया। ऑक्सीजन बहुत कम होने, अधिक ऊँचाई व बेहद ठंड,तेज हवाओं का सामना करते हुए आगे बढ़ते रहे। विपरीत परिस्थितियों में भी इन्होंने हिम्मत नहीं हारी। इनका मानना है कि संघर्षों के बिना जीवन का कोई आनन्द नहीं है।

- शिक्षा सारथी डेस्क

हमें खेत दिखाई दे रहे थे। जानकारी मिली कि यहाँ आलू और मटर की खेती होती है। अब फसल किसानों के घर या मंडियों में जा चुकी थी। यहाँ के चारों ओर के नज़ारे अद्भुत, मनोहारी व दिव्य दिख रहे थे। बिना हरियाली के फिर भी सुंदर। पहाड़, पत्थर, रेत तथा चोटियों पर ग्लेशियर, आसमान बिल्कुल नीला तथा सफेद-काले बादल उमड़ते हुए। यहाँ एक खास बात ये देखी कि जो जगह-जगह झरने थे, वे इसलिए अजूबे से लग रहे थे कि उनका निकास पहाड़ों के रेत व पत्थरों से था। ग्लेशियर पिघल कर, पहाड़ों के अंदर ही अंदर पानी चलकर, अचानक किसी पहाड़ के किसी भी भाग से निकल रहे थे। उससे ऊपर न ग्लेशियर, न पानी दिखाई दे रहा था। चोटियों पर बर्फ खूब थी। गोमुख से भी पानी इसी तरह निकलता है किंतु वहाँ ग्लेशियर हैं। यहाँ रेत या पत्थरों से पानी निकलता दिखाई दे रहा था।

कुछ आगे बढ़े तो बारालाच्चा से थोड़ा पूर्व दीपक ताल, फिर सूरजताल दिखाई दिया। यहाँ रुक कर सभी ने फोटो खिंचवाई। सूरजताल के ठीक ऊपर ग्लेशियर है जहाँ से पिघल कर इस ताल यानी झील में पानी आता है। सूरज ताल से ही भागा नदी का निकास बताया जा रहा है। थोड़ा आगे बारालाचा ला प्वाइंट आया। यहाँ आने-जाने वाले यात्री फोटो खिंचवाते हैं, सेल्फी लेते हैं। यहाँ चारों ओर के दिव्य नजारे हैं। इसके 15-20 मिनट बाद हम अपने बेस कैंप भरतपुर पहुँच गए। भरतपुर न कोई नगर है, न कोई गाँव। यहाँ एक भी घर नहीं है। यहाँ एक छोटी नदी या नाले के किनारे बहुत बड़ा मैदान सा है, जो भरतपुर नाम से जाना जाता है। यात्रियों के लिए यहाँ अस्थाई कुछ दुकानें लगाई जाती हैं। आगे बढ़ने वाले या यूनम पीक पर जाने वाले यात्री व पर्वतारोही टेंट लगाते हैं। हमने भी अपने टेंट यहाँ लगा लिए, क्योंकि यहीं से हमारी पैदल चढ़ाई पीक के लिए शुरू होने वाली थी। बच्चों को टैंट लगाने सिखाए। इतने में खाना तैयार हो गया। सभी ने खाना खाया। मुझे कुछ पक्षी दिखाई दिए तो मैं उनकी फोटो लेने में व्यस्त हो गया। भरतपुर में हमने बहुत से पक्षी देखे। पीली चोंच वाला कौवा (रैवन), हिमालयन कौवा, स्नो पिजन, ओरिएंटल डव, ओरिएंटल मैगपाई, रोक डव व कई तरह की चिड़ियाँ दिखाई दी, तो फोटोग्राफी करने का मन हो गया। यहाँ हवा बहुत ठंडी और बहुत तेज थी। ऑक्सीजन कम होने की वजह से कुछ सदस्यों को सिर दर्द शुरू हो गया, उल्टियाँ भी आईं। जानकार पर्वतारोहियों ने सभी को बताया कि यहाँ पानी घूँट-घूँट और बार-बार पीना चाहिए, जिससे ऑक्सीजन की कुछ पूर्ति हो सके तथा धीरे-धीरे सिर दर्द भी ठीक हो सके।

रात हुई, बादल आए तो बर्फबारी शुरू हो गई। अब तक यहाँ बिल्कुल बर्फ नहीं थी किंतु रात भर बर्फबारी से यहाँ चारों और बर्फ ही बर्फ हो गई। चोटियों पर पहले से जमा बर्फ और अधिक बढ़ गई। सर्दी बहुत बढ़ गई थी। हवा काफी तेज थी और जैसे हमारे टैंट अभी उखाड़ कर फेंक देगी। फिर भी हम घबराए नहीं। सुबह हमने पीक की ओर बढ़ना था लेकिन मौसम अधिक खराब होने के कारण नहीं जा पाए। फैसला लिया गया कि दूसरा ग्रुप और

आ जाता है फिर एक साथ चढ़ाई करेंगे। इतने में मौसम ठीक होने की संभावना है। दिन में दोपहर बाद दूसरा दल भी पहुँच गया। अगले दिन सुबह सभी ने एक साथ चढ़ाई शुरू की। ऑक्सीजन की कमी के कारण चढ़ने में कई गुना जोर लग रहा था। साँस जल्दी फूल रही थी। बीच-बीच में रुकते हुए दोपहर 12:30 बजे सम्मिट कैंप पर पहुँच गए। रात सात बजे खाना-खाकर सो गए। ठंड बहुत बढ़ गई थी। यहाँ दिन का तापमान 1 से 2 डिग्री सैल्सियस था रात का तापमान -7 डिग्री सैल्सियस तक मापा गया। यही कारण था कि हमारी पानी की बोतलें भी जम गई, वे भी स्लीपिंग बैग में। रात 12:00 बजे सभी उठा दिए गए तथा हल्का-फुल्का खाना खाकर रात एक बजे पीक के लिए रवाना हो गए। अधिक सर्दी व ऑक्सीजन की कमी के कारण दल के कुछ सदस्यों की तबीयत खराब हो गई। उनमें से तीन-चार को बेस कैंप में वापस लाना पड़ा तथा कुछ वहीं सम्मिट कैंप में रुक गए। पीठ पर हल्का-सा बैग, पानी की बोतल, हाथ में या माथे पर टॉर्च लगाकर काफिला पूरे जोश के साथ चल पड़ा। ठंड बहुत ज्यादा बढ़ गई थी। नाक ढकते तो साँस आना मुश्किल तथा न ढकें तो ठंड का कहर। कुछ सदस्यों को चलना अति कठिन हो रहा था। संदीप आर्य हिम्मत बढ़ा रहे थे। दल के छह सदस्य सुबह सात बजे पीक पर यानी चोटी पर पहुँच गए। शेष नजदीक लग चुके थे। यहाँ 75 मीटर लंबा तिरंगा फहराने की जगह नहीं थी इसलिए तिरंगा सम्मिट कैंप पर फहरा दिया था। पीक 6111 मीटर, सम्मिट कैंप 52 सौ मीटर, भरतपुर 46 सौ मीटर तथा जिस्पा 32 सौ मीटर ऊँचाई पर हैं। टीम के कुछ सदस्यों ने पीक पर ध्वज फहराया, जल्द-जल्द कुछ फोटो किए तथा वापस चल दिए। शेष लोग जो पीक के नजदीक थे, 6000 मीटर से अधिक ऊँचाई पर से वे भी वापस चल दिए। पीक से मूलकिला, पीर पंज्ञाल रेंज की चोटियाँ दिखाई दे रही थी। ये अद्भुत व दिव्य दृश्य थे। दल के सभी सदस्य नए जोश, उमंगों, नई तरंगों, सफलता की अथाह खुशी के साथ सायंकाल से पहले बेस कैंप पहुँच गए। जो सदस्य नहीं चढ़ पाए, दल की सफलता से वो भी अब खुश नजर आ रहे थे। इस अभियान में खास बात ये थी कि कुछ दिव्यांग बच्चे पीक के अंतिम छोर तक पहुँचे। ये उनके लिए, दल के लिए, शिक्षा विभाग तथा सरकार के लिए नया कीर्तिमान था।

अगले दिन भरतपुर से सीधे मनाली आ गए। यहाँ आकर कुछ बीमार सदस्य भी ठीक हो गए। मनाली आए तो अगले दिन पहाड़ों पर बर्फबारी हो गई। रोहतांग व आसपास के पहाड़ बर्फ से ढक चुके थे। अगले दिन सभी बच्चे व शिक्षक मनाली शहर घुमाए गए तथा रात को पंचकूला के लिए रवाना हुए। 11 अक्टूबर को पंचकूला के रेड बिशप में शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ.महावीर सिंह ने सभी को सम्मानित किया तथा बच्चों से रूबरू हुए। डॉ.महावीर सिंह ने इस अभियान की पूरी जानकारी ली। कुछ भविष्य की योजनाओं के बारे में बताया। उन्होंने पर्वतारोही दल को सफलता के लिए बधाई व शुभकामनाएँ दीं। सभी बच्चों व शिक्षकों के चेहरों पर जो मधुर मुस्कान थी, वह अनमोल थी। ये मुस्कान लाने के लिए शिक्षा विभाग के अधिकारी बच्चों के लिए नई-नई महत्त्वपूर्ण योजनाएँ बनाते रहते हैं, जिनका सीधा फायदा विद्यार्थियों को मिल रहा है। ऊर्जा से परिपूर्ण कार्यक्रम के उपरांत बच्चों ने यहीं पर खाना खाया तथा बस में बैठकर अपने-अपने घरों की ओर कुछ अति-स्मरणीय यादें लेकर चल पड़े। कुछ विद्यार्थियों की आँखें नम लग रही थी कि उनके नए मित्र, नई सहेलियाँ उनसे बिछड़ रही हैं। जुदाई के साथ-साथ ये आँसू सफलता की खुशी के, नई उम्मीदों के आँसू थे। सभी बच्चे अपने साथ ढेर सारा अनुभव, बहुत सा ज्ञान लेकर अपनी मंजिल की ओर लौट रहे थे। शिक्षा विभाग का उद्देश्य पूरा होता लग रहा था।

राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
एमपी रोही, फतेहाबाद, हरियाणा

शताधिक दुर्गम यात्राएँ कर चुके हैं ओमप्रकाश कादयान

पेंटिंग, फोटोग्राफी व लेखन में देश भर में अपनी पहचान बचा चुके शिक्षक डॉ.ओमप्रकाश कादयान को यात्राओं का शौक जुनून की हद तक है। यहीं कारण है कि इन्होंने देश भर में सौ से अधिक लम्बी यात्राएँ की है। मरुस्थल, समुद्र, जंगलों, दुर्गम घाटियों, ऊँचे पहाड़ों से इन्हें विशेष लगाव है। हिमालय से अथाह प्रेम करते हैं, इसलिए गत 28-29 वर्षों में ये हिमालय के दुर्गम स्थानों पर गए हैं। मोटरसाइकिल पर भी ये यमुनोत्री, गंगोत्री, लेह-लद्दाख, धर्मशाला, बीड़-बिलिंग, कांगड़ा के इलाके, अमरनाथ, रेणुका, चकरौता, मंसूरी, श्रीनगर, सोनमर्ग, गुलमर्ग, मनाली, डलहौजी, खजियार, भरमौर, मणि महेश, चम्बा आदि स्थानों के साथ दुर्गम इलाकों व खतरनाक घाटियों की यात्राएँ कर चुके हैं। इसके साथ हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग पंचकूला द्वारा आयोजित फ्रेण्डशिप पीक फतेह अभियान तथा पिछले दिनों यूनम पीक फतेह अभियान में हिस्सा लेकर अपने जोश व जुनून का परिचय दे दिया। डॉ. ओमप्रकाश कादयान ने कहीं से पर्वतारोहण की ट्रेनिंग नहीं की, किन्तु पर्वतारोहण का इन्हें बेहद शौक है। घुमक्कड़ प्रवृति के कारण इन्हें मित्र यायावर कहकर पुकारते हैं।

- शिक्षा सारथी डेस्क

चुनौतियाँ लुभाती हैं अंजू दहिया को

सोनीपत के बडवासनी गाँव के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में रसायन विज्ञान की पीजीटी अंजु दहिया पिछले कई वर्षों से पर्वतीय यात्राएँ कर रही हैं। इन्होंने भी पर्वतारोहण से संबंधित कोई प्रशिक्षण तो नहीं लिया, लेकिन जब-जब विभाग द्वारा कोई अवसर मिलता है तो ये पूरे मन से अभियान का हिस्सा बनने को तैयार हो जाती हैं। ऐसे अध्यापकों के कारण विभाग को विद्यार्थियों का साथ देने वाले प्रशिक्षकों की कमी नहीं खलती। 2018 में ये विद्यार्थियों के साथ फ्रेंडशिप पीक अभियान-दल में शामिल हुईं और इस वर्ष यूनम पीक अभियान में हिस्सा लिया। खड़ी चढ़ाई, लम्बा सफर, दुर्गम राहें, ऑक्सीजन की कमी, शून्य से काफी कम तापमान, तन बेधती शीत हवाएँ, प्रतिकूल परिस्थितियों में ये हिम्मत नहीं छोड़तीं। घर-परिवार की सारी जिम्मेदारियों को छोड़ विद्यार्थियों के साथ दुर्गम यात्राएँ करना इनके दृढ़ हौसले का परिचायक है।

- शिक्षा सारथी डेस्क

पीक फतह कर लौटे दल का पंचकूला में भव्य स्वागत

कीर्तिमान बना कर लौटे दल की अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ.महावीर सिंह ने की भूरि-भूरि प्रशंसा

सुदेश रानी

10 अक्टूबर को जब यूनम पीक एक्सपीडिशन दल के सदस्य सफलता के साथ अभियान को पूरा करके पंचकूला आए तो इनका विभाग द्वारा भव्य स्वागत किया गया। इनके अभिनन्दन का कार्यक्रम पंचकूला के रेड बिशप में आयोजित किया गया। विद्यालय शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ.महावीर सिंह ने सभी प्रतिभागियों को सम्मानित किया।

75 विद्यार्थियों और अध्यापकों के पर्वतारोही दल का अभिनंदन करते हुए डॉ. महावीर सिंह ने कहा कि स्कूली शिक्षा के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है कि दिव्यांग बच्चों ने इतनी ऊँची किसी पर्वतीय चोटी तक चढ़ाई की हो। यह देश का ही नहीं, विश्व का कीर्तिमान बना है। बता दें कि इस अभियान में 25 दिव्यांग बच्चे भी शामिल हुए। जो अपने आप में वर्ल्ड रिकार्ड है। इस मौके पर मुख्यातिथि ने बच्चों को भविष्य में आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हुए कहा कि जिंदगी अपने आप में एक एडवेंचर है। यहाँ पग-पग पर साहस और उत्साह के साथ दुर्गम स्थितियों का सामना करना पड़ता है। साहसिक गतिविधियों के माध्यम से विद्यालय शिक्षा विभाग अपने विद्यार्थियों में ऐसी ही उत्साह, जोश और साहस की भावना भरने का यत्न करता है जो उनकी जीवन की यात्रा में सफलता का आधार बनेगी।

गौरतलब है कि 29 सितंबर को चंडीगढ़ में हरियाणा निवास से मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने युवा-पर्वतारोहियों को आशीर्वाद देने के बाद उनके दल को फ्लैग ऑफ किया था। कार्यक्रम में निदेशक माध्यमिक डॉ. जे. गणेशन ने बताया कि आज़ादी के अमृत महोत्सव के कारण अभियान दल के विद्यार्थियों की संख्या 75 रखी गई थी। साथ ही इन्होंने 75 मीटर का एक तिरंगा 5,300 मीटर की ऊँचाई पर प्रदर्शित कर नया कीर्तिमान बनाया। उन्होंने कहा कि यह पहली बार था जब किसी पर्वतारोहण अभियान में दिव्यांग स्कूली बच्चों ने शिरकत कर इतनी ऊँची चोटी पर सफलतापूर्वक आरोहण किया हो।

अभियान दल के मुखियाओं ने अभियान का झंडा डॉ. महावीर सिंह को सौंपा, जिसको विभाग द्वारा संरक्षित करके रखा जाएगा। विद्यार्थियों के साथ गए एवरेस्टर गणेश चंद्र जेना ने अभियान की रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा एक्सपीडिशन लीडर संदीप आर्य ने पीपीटी प्रेजेंटेशन के माध्यम से पूरे अभियान का परिचय दिया। सभी विद्यार्थियों को मुख्यातिथि ने प्रमाण-पत्र प्रदान किए।

कार्यक्रम में धन्यवाद प्रस्ताव संयुक्त राज्य परियोजना निदेशक गौरव चौहान के द्वारा रखा गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ प्रदीप राठौर ने किया। इस मौके पर माध्यमिक शिक्षा निदेशक डॉ. जे. गणेशन, नेशनल एडवेंचर क्लब इंडिया के कार्यकारी चेयरमैन एससी चौधरी, माध्यमिक शिक्षा विभाग के अतिरिक्त निदेशक संवर्तक सिंह और अमृता सिंह, संयुक्त निदेशक विजय यादव आदि अधिकारीगण मौजूद रहे।

हिन्दी अध्यापिका
रावमा विद्यालय बुंगा
जिला- पंचकूला, हरियाणा

'रज्जी' और 'माफी' ने भी फतह की यूनम पीक

कभी अनचाही मानी गई बेटियाँ आज कर रही हैं अपने परिवारों का नाम रोशन

माफी, रज्जी, भतेरी आदि नाम साधारण नाम नहीं हैं। ये नाम उन बेटियों के रखे जाते हैं जो परिवार में अवांछित होती हैं। आमतौर पर तीसरी या चौथी बेटी या इसके बाद जन्मी बेटी का ऐसा नामकरण होता है।

भतेरी का अर्थ है-बहुत आ चुकी हैं, और की जरूरत नहीं है। रज्जी का अर्थ है- अब लड़कियों से तृप्त हो चुके हैं। माफी का अर्थ है- भगवान माफ कीजिये और लड़की नहीं चाहिये। ऐसे नामों की फेहरिस्त काफी लंबी हैं। ये नाम इस बात के द्योतक हैं कि आज भी परिवारों में कन्याओं का जन्म हर्ष का विषय नहीं है। दूसरी या तीसरी बेटी पैदा होने पर मातम नहीं तो चुप्पी जरूर छा जाती है। बताने की आवश्यकता नहीं है कि ये अशुभ नाम समाज की जड़ों में बसे लिंग-भेद, उसकी दकियानूसी सोच, टोटकों व अंधविश्वास के कारण रखे जाते हैं।

लेकिन आज की बेटियाँ किसी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। जब परिवारों में अवांछित व अनचाही समझी जाने वाली बेटियाँ अपनी उपलब्धियों की चमक बिखेरती हुई समाज में नाम कमाती हैं तो उस समय उस समाज के मुँह पर करारा तमाचा तो जरूर लगता है।

आपको बता दें यूनम पीक फतह करने के बाद प्रदेश में जिन बच्चों की जय-जयकार हो रही है, उनमें 'माफी' और 'रज्जी' भी शामिल हैं। आइये इन बेटियों की पारिवारिक पृष्ठभूमि से आपका परिचय कराते हैं-

रज्जी रावमा शाहबाद (कुरुक्षेत्र) में 11वीं कक्षा की छात्रा है। रज्जी अपने परिवार में तीसरी बेटी है। क्योंकि इससे पहले दो बेटियाँ पैदा हो गई थीं तो माँ रीना ने परेशान होकर बेटी का नाम 'रज्जी' रख दिया। जाहिर सी बात है तीसरी अवांछित थी। हालांकि इससे पहले आई दोनों बेटियों के नाम उसने बड़े लाड़-चाव से 'लक्ष्मी' और 'नेहा' रखे थे। शुक्र है रज्जी के बाद कोई और बेटी नहीं आई तो उसका नामकरण और भी भयानक होता। इसके बाद बेटा जन्मा, जो 'विकास' के नाम से सुशोभित हुआ। इसी वर्ष यानी 2021 में जब रज्जी की माँ बेहद बीमार हो गई थी, तो उसकी सेवा-शुश्रूषा और घर के चौके-चूल्हे की सारी जिम्मेदारी रज्जी ने ही निभाई, क्योंकि दोनों बड़ी बहनें तो विवाहित हो चुकी थीं। तीन माह पूर्व हृदय-रोग से ग्रस्त माँ का निधन होने के बाद चौके-चूल्हे की स्थायी जिम्मेदारी अब परिवार की उसी बेटी पर आ गई है, जो

कभी अनचाही थी।

रज्जी न केवल पढ़ाई में होशियार है, बल्कि हॉकी की बहुत अच्छी खिलाड़ी भी है। लगातार चार साल से वह हॉकी में स्टेट टूर्नामेंट में खेल रही है और कमाल का प्रदर्शन कर रही है। उसका लक्ष्य राष्ट्रीय टीम में शामिल होकर देश के लिए खेलना है। वह विद्यालय की होनहार छात्रा है। दसवीं कक्षा में उसने 92 प्रतिशत अंक हासिल किए थे। यूनम पीक फतह करके कीर्तिमान रचने वाले दल की सदस्य होने कारण प्रदेश भर में स्वागत हो रहा है। माँ जिंदा होती तो उसे जरूर 'रज्जी' की इस उपलब्धि पर नाज़ होता और शायद उसके नामकरण का मलाल भी।

राकवमा विद्यालय करनाल में ग्यारहवीं कक्षा की छात्रा माफी की कहानी भी रज्जी से कुछ बहुत ज्यादा अलग नहीं है। माफी के पिता बारू राम बताते हैं कि उनके एक भाई के पास पाँच बेटियाँ हैं। जब उनके अपने घर में दूसरी बेटी जन्मी तो भला उसका स्वागत कैसे हो सकता था। यहाँ तो दूसरी ही अवांछित हो गई। उसका नामकरण 'माफी' रखकर पिता ने भोलेनाथ (अपने आराध्य देव) से प्रार्थना की कि अब माफ करना, और बेटियाँ नहीं चाहियें। बकौल बारू राम प्रार्थना स्वीकार हुई और परिवार को 'साहिल' मिल गया।

माफी की बड़ी बहन पूनम को सिलाई-कढ़ाई का शौंक है तो माफी को बॉक्सिंग का। माता-पिता बड़ी बेटी पूनम को घर से दूर भेजने में कतराते हैं, इसलिए निकटवर्ती प्राइवेट विद्यालय में ही प्रवेश दिला रखा है, लेकिन माफी को घर से छह किमी दूर के राजकीय विद्यालय में भेजने में भी वे नहीं घबराते, क्योंकि उनकी दृष्टि में बॉक्सर माफी हर स्थिति में अपनी सुरक्षा में सक्षम है।

माफी बॉक्सिंग में पिछले तीन वर्षों से स्टेट लेवल तक प्रतिभागिता करते हुए सराहनीय प्रदर्शन कर रही है। 2021 में वह स्टेट लेवल पर भी विजेता रही। इसके साथ-साथ वह पढ़ाई में भी मेधावी है। दसवीं कक्षा में माफी ने 96 प्रतिशत अंक अर्जित किए थे। हाल ही में उसने यूनम पीक फतह करके एक और उपलब्धि अपने नाम लिख ली है। माफी के माता-पिता उसकी प्रशंसा करते हुए नहीं अघाते। कभी अनचाही मानी गई बेटी आज उनके लिए बेटे से भी बढ़कर है।

शाबाश रज्जी! शाबाश माफी! हीरे को कोई 'मिट्टी का ढेला' कहे तो इससे हीरे का मूल्य कम कहाँ होता है। अभी तो आपको सफलता के और शिखरों को भी चूमना है। शुभकामनाएँ!

-डॉ.प्रदीप राठौर
drpradeeprathore@gmail.com

फूलों से लाद दिए गए नन्हे पर्वतारोही

यूनम पीक अभियान-दल से लौटे सदस्यों का जिला स्तर पर भी भव्य स्वागत

सुदेश रानी

यूनम पीक फतह करके लौटे विद्यार्थियों व अध्यापकों का जिला स्तर पर भी जोरदार स्वागत हुआ है। कुरुक्षेत्र में अभियान दल के नेता संदीप कुमार के स्वागत में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिला शिक्षा अधिकारी अरुण आश्री ने संदीप कुमार को स्मृति चिह्न प्रदान किया। उन्होंने कहा कि संदीप ने जिले के ही नहीं, प्रदेश के नाम को भी चार चाँद लगाए हैं। इस समारोह का आयोजन फायर एंड सेफ्टी संस्थान द्वारा किया गया। इसी कार्यक्रम में खादी गृह उद्योग मिर्जापुर, निवेदिता वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, किड्जी विद्यालय तथा भूतपूर्व वायुसैनिक एसोसिएशन कुक्षेत्र तथा रेडक्रॉस के सहायक सचिव रमेश चौधरी द्वारा भी संदीप को सम्मानित किया गया।

फतेहाबाद में राकवमा विद्यालय एमपी रोही के शिक्षक ओमप्रकाश कादयान, राकवमा विद्यालय भूना की छात्रा मुस्कान, रावमा विद्यालय धांगड़ के छात्र साहिल तथा रावमा विद्यालय बुआन के दिव्यांग छात्र सुमित को जिला स्तर पर आयोजित कार्यक्रम में सम्मानित किया गया। इन्हें जिला शिक्षा अधिकारी दयानंद सिहाग व जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी अनिता सिंगला द्वारा प्रशस्ति पत्र व पुष्प गुच्छ प्रदान किए गए। शिक्षक ओमप्रकाश ने यात्रा के अपने अनुभव सांझा करते हुए बताया कि ऑक्सीजन की कमी होने के कारण तेज सिर दर्द के साथ उल्टियाँ लग गईं थी। मौसम ने अचानक खराब होने से बर्फबारी और अत्यधिक ठंडी हवाओं का सामना करना पड़ा, लेकिन इन विपरीत हालातों में भी उनका तथा विद्यार्थियों का

हौसला कम न हुआ और अन्ततः उन्हें चोटी तक पहुँचने में कामयाबी मिली।

रेवाड़ी जिले के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बीकानेर में पर्वतारोही छात्रा भारती को एक जिला स्तरीय कार्यक्रम में जिला शिक्षा अधिकारी राजेश कुमार व जिला स्काउट कोऑर्डिनेटर प्रदीप कुमार ने बधाई दी। विद्यालय की प्राचार्य साकार लता ने कहा कि छात्रा ने इस अभियान में सफलता से भाग लेकर विद्यालय का नाम रोशन किया है। विद्यालय प्रबंधन समिति तथा ग्राम पंचायत के सदस्य भी इस अवसर पर मौजूद रहे। भारती को इतनी फूल-मालाएँ पहनाई गईं कि ऐसा लगा जैसे उन्हें फूलों से लाद दिया गया हो। ग्यारहवीं कक्षा में शिक्षा ग्रहण कर रही भारती ने राज्य स्तरीय योग प्रतियोगिता में भी स्वर्ण पदक विजेता रही थी।

फरीदाबाद जिले में अभियान दल के दो सदस्यों बबली व अमल के स्वागत के एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बबली राजकीय आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सैक्टर-55 फरीदाबाद की छात्रा है जबकि अमन राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय एनआईटी का छात्र है और दोनों बारहवीं कक्षा में पढ़ते हैं। विद्यार्थियों ने अपने अनुभवों को बताते हुए कहा कि उनकी यात्रा रोमांचपूर्ण रही है। यह उन दोनों के लिए पहला अनुभव था। प्रधानाचार्य सतेंद्र सौरोत ने बताया कि बबली विद्यालय की सर्वश्रेष्ठ धावक है, साथ ही पढ़ाई में भी बहुत अच्छा प्रदर्शन करती है। अत्यधिक साधारण परिवार की इस छात्रा की अभियान पर जाने से पूर्व आर्थिक मदद विद्यालय के एक प्राध्यापक ने की थी, जिनसे वह

साथ ले जाने की आवश्यक वस्तुएँ खरीद पाई थी।

पलवल जिले में शहीद राजबीर स्कूल होडल की छात्रा टीना का भी जोरदार स्वागत हुआ। प्रधानाचार्य आरके पुनिया ने बताया कि टीना उनके विद्यालय की बेहद प्रतिभाशाली छात्रा है। स्वागत-समारोह में विद्यालय के स्टाफ के साथ-साथ बड़ी संख्या में ग्रामवासी भी मौजूद रहे। जिला शिक्षा अधिकारी अशोक बघेल ने छात्रा के लिए बधाई-संदेश भेजा।

रावमा विद्यालय चिड़ाना के प्रधानाचार्य श्री बसंत ढिल्लों ने विद्यालय स्तरीय कार्यक्रम में अपने विद्यालय की छात्रा मंजू को सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से इन विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है। महेंद्रगढ़ जिले के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मालड़ाबास के 12वीं कक्षा के स्काउट नीरज कुमार का स्वागत भी विद्यालय स्तरीय कार्यक्रम में धूमधाम से हुआ।

हिन्दी अध्यापिका
रावमा विद्यालय बुंगा
जिला- पंचकूला, हरियाणा

मिली जोश को रोशनी, मन को मिला प्रकाश दिव्यांगों का हौसला, छू आया आकाश

मोना साहू

इस साल विद्यालय शिक्षा विभाग ने पहली बार दिव्यांग बच्चों के पर्वतारोहण का कार्यक्रम बनाया। जैसे ही यह जानकारी हम तक पहुँची, हमारी खुशी का ठिकाना न रहा। स्पेशल टीचर होने के नाते ही नहीं, एक आम इन्सान के रूप में भी मैं सदैव विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए सदैव कुछ न कुछ करने के लिए तैयार रहती हूँ। हम सब जानते हैं कि दिव्यांग बच्चों को समाज की मुख्यधारा का हिस्सा बनाने के लिए प्रदेश सरकार द्वारा बहुत अच्छा कार्य हो रहा है। यह कार्यक्रम भी इसी की एक कड़ी रही। यह कार्यक्रम तो इसलिए भी बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण था, क्योंकि हमारे विशेष बच्चे एक कीर्तिमान बनाने जा रहे थे।

इतिहास इस बात का गवाह है कि दिव्यांगों ने भी अपनी प्रतिभा से अनेक ऐसी उपलब्धियाँ हासिल की हैं,

यहाँ थी घनी बर्फ, ऊँचे-ऊँचे पहाड़। यूनम की चोटी तक रास्ते में आने वाली मुश्किलों के पहाड़। परंतु एक जुनून भरी चमक सबकी आँखों में दिखाई दे रही थी और लगातार हौसला दिए जा रही थी विपरीत हालातों से लड़ने का। आखिरकार सच हुआ वह ख्वाब जिसे देखा था हरियाणा सरकार और शिक्षा विभाग ने, दिव्यांग व सामान्य बच्चों और शिक्षकों के 75 सदस्यीय दल को 75 मीटर लंबा तिरंगा सौंपते हुए। आज़ादी के अमृत महोत्सव का अनूठा अद्भुत उत्सव मना यूनम के जब कठिन रास्तों को पार कर और मुश्किलों को हराकर सबकी थकान गायब हो चुकी थी। अगर थी तो बस सबकी पलकों व चेहरों पर सजी निश्चल, निर्मल व सुकून भरी मुस्कान।

ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जैसे पहाड़ों ने ही सिखा दिया हो चुनौतियों के सामने पहाड़ों की तरह अडिग खड़े रहना। यह अभियान समावेशी शिक्षा, प्रेम, सहयोग और अथक प्रयास इन सभी का अनूठा उदाहरण प्रतीत हो रहा था। यूनम पर्वत की चोटी पर लहराता हुआ वह तिरंगा जो गवाही दे रहा था हरियाणा के स्कूलों में समावेशी शिक्षा के अंतर्गत अध्ययनरत दिव्यांग व सामान्य छात्रों में पर्यटन, प्रकृति और भारतीय संस्कृति के प्रति जागरूकता पैदा कर उनकी सृजनात्मकता और सर्वांगीण विकास के लिए किए गए अद्वितीय, अद्भुत और अनूठे प्रयास की।

इस पर्वतारोहण से जैसे समावेशी शिक्षा के इतिहास में एक नए अध्याय का आरंभ हुआ, जिसकी साक्षी होने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ। सफर के सभी साथियों का विशेष रूप से हृदय तल से आभार व्यक्त करती हूँ।

कुमुद शर्मा
विशेष शिक्षिका
जिला-अंबाला, हरियाणा

जो सामान्य लोगों के लिए भी दुष्कर हैं। 21 मई, 2013 को दुनिया की सबसे ऊँची चोटी माउंट एवरेस्ट पर तिरंगा फहराकर अरुणिमा सिन्हा ने बता दिया था कि ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहाँ दिव्यांग सराहनीय प्रदर्शन नहीं कर सकते। गौरतलब है कि एक दुर्घटना में अरुणिमा ने अपना एक पैर गँवा दिया था। वह देश की पहली दिव्यांग महिला बनी जिसने एवरेस्ट को फतह किया। अरुणिमा अनेक दिव्यांग लोगों के लिए प्रेरणा बनी।

हमारे दल में 22 विद्यार्थी शामिल थे, जिनमें 9 श्रवण बाधित, 9 दृष्टि बाधित व 4 अस्थि दिव्यांग थे। इन विशेष बच्चों के साथ तीन विशेष अध्यापक थे, जिनमें मेरे साथ राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पुलिस लाइन, अंबाला शहर की कुमुद शर्मा और राजकीय आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सैक्टर-20 पंचकूला से विवेक कुमार शामिल थे।

वैसे तो कई बार समावेशित एडवेंचर कैंप में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, लेकिन इस बार का अनुभव अनूठा रहा। हमने सूर्योदय की खूबसूरती, सूर्यास्त के अद्भुत नज़ारे और रात में चमचमाते तारों में प्रकृति की अथाह शक्ति को महसूस किया। इस अभियान

समाज की नज़र में पहले मैं दिव्यांग ईशा थी, अब पर्वतारोही ईशा हूँ

जैसे-जैसे ऊँचाई बढ़ती गई, ऑक्सीजन का स्तर कम होता गया और बर्फ की आँख चौंधिया देने वाली चमक बढ़ती गई। लेकिन इन सभी चुनौतियों को पार करते हुए हम पीक पॉइंट के लिए आगे बढ़े।

यूँ तो पर्वतारोहण का नाम हमने कई बार सुना था, उस दिन हम स्वयं को सफल पर्वतारोही के रूप में पहचान पा रहे थे। 6,111 मीटर की चढ़ाई करके हमने एक अलग ही दुनिया में कदम रखा। हड्डियों को कँपा देने वाली ठंड, बर्फ की सफेद चादर से ढके पर्वत हमारा स्वागत कर रहे थे। आसमान में सूरज का तेज भी उस दिन हमारी उपलब्धि का गुणगान कर रहा था। हवा में लहराता झंडा इस यात्रा का साक्षी था। वह मेरी हिम्मत को और अधिक बढ़ा रहा था। मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मैं उस अभियान का हिस्सा थी, जिसने इतिहास रचा है। वह एक लड़की जिसका परिचय उसकी दिव्यांगता से होता था आज उसकी चर्चा उसके विद्यालय में ही नहीं, पूरे राज्य में हो रही है।

ईशा
राजकीय कन्या वरिष्ठ विद्यालय मॉडल टाउन
अंबाला शहर, हरियाणा

अभियान ने मेरे हौसले को नई उड़ान दी है

मैं एक साधारण परिवार से संबंध रखती हूँ। पर्वतारोहण के इस अभियान में शामिल होकर मैं अपने आप को बड़ी ही सौभाग्यशाली महसूस कर रही हूँ। इस अभियान के लिए मेरा नाम चुना जाना मेरे लिए एक सपने के समान था। जो नजरें ज्यादा कुछ देख नहीं पाती हैं, उन्हीं नजरों ने जहाँ तक संभव हो सका पहाड़ों के अद्भुत सौंदर्य का आनंद लिया। वहाँ की महकती हुई हवा को महसूस किया। अपनी शारीरिक चुनौती को चुनौती देकर मैंने मुश्किलों का हिम्मत से सामना करना और पहाड़ों की ऊँचाई को चुनौती देकर आगे बढ़ना सीख लिया है। भविष्य में भी अगर मुझे ऐसा अवसर अगर दोबारा मिलता है तो मैं सहर्ष और पूरे जोश, हिम्मत, हौसले के साथ उस कार्यक्रम में शामिल होना पसंद करूँगी। पहाड़ों की ऊँचाइयों ने मुझे डराया नहीं, उन्होंने मुझे खुद कहा कि आगे बढ़ चलो आपका लक्ष्य आपकी राह देख रहा है। इस अभियान ने मेरे हौसले को नई उड़ान दी है।

सुप्रिया, कक्षा 12वीं
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पटेल नगर, हिसार, हरियाणा

यूनम अभियान ने मेरे लिए ज़िंदगी के मायने बदल दिए

मैं सुन नहीं सकता तो क्या, अपनी अन्य ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से मैंने भी वैसे ही असीम आनन्द की अनुभूति की है, जैसे मेरे दल के अन्य सार्थियों ने। कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि एक दिन मैं यूनम पीक अभियान-दल का हिस्सा बनूँगा। सच कहूँ तो इस अभियान में शामिल होकर मेरी ज़िंदगी के मायने ही बदल गए। मुझमें आत्म-विश्वास तो था, लेकिन इस अभियान में सफलता से भाग लेने के कारण मेरा आत्म-विश्वास कई गुणा अधिक बढ़ गया है। हरियाणा सरकार और विद्यालय शिक्षा विभाग हरियाणा हम जैसे बच्चों को सामान्य विद्यालयों में शिक्षित-प्रशिक्षित करके समावेशी शिक्षा को तो चला ही रहा है, परंतु अब इससे दो कदम आगे बढ़कर अन्य साहसिक गतिविधियों में भी हमें प्रतिभागिता के अवसर प्रदान कर 'समावेशन' के दायरे को और विस्तृत कर रहा है। मैं हृदय की गहराइयों से इसके लिए हरियाणा सरकार व विभाग का आभार व्यक्त करता हूँ।

सुमित कुमार
कक्षा -11
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,
बुवान, जिला-फतेहाबाद, हरियाणा

हौसला दृढ़ हो तो कोई अक्षमता विकास में बाधक नहीं हो सकती

मैं दिव्यांग छात्र हूँ। दिव्यांगता मेरी कमज़ोरी नहीं, अपितु मेरे जीवन का एक अंश है। नदियों की कल-कल ध्वनि को भले ही मेरे कान न सुन पाते हों, परंतु मैं भी अपने ढंग से उसे महसूस कर लेता हूँ। दिव्यांगता को दरकिनार कर सभी चुनौतियों को पार करते हुए जब तिरंगा हमने यूनम पर्वत की चोटी पर लहराया तो विशाल पर्वत, बर्फीली हवा, चारों तरफ बिखरी हुई बर्फ सभी मेरे हौसले के साक्षी बने। उस क्षण मैंने अपने भीतर असीम ऊर्जा की अनुभूति की। मैंने महसूस किया कि हौसले हों तो कोई अक्षमता किसी के विकास का मार्ग अवरुद्ध नहीं कर सकती। मैं हृदय से अपने सभी अध्यापकों का आभार व्यक्त करता हूँ जिनके प्रशिक्षण की वजह से मेरे जीवन में ऐसी रोमांचक पर्वतीय यात्रा के पल आए।

खालिद
कक्षा -12
राजकीय मॉडल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, नूंह, हरियाणा

उस दिन पहली बार महसूस हुआ कि भोलेनाथ कैलाश पर कैसे रहते होंगे

मैं शिक्षा विभाग और माननीय मुख्यमंत्री जी का धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने मुझ आंशिक दृष्टिबाधित छात्रा को इस साहसिक यात्रा का अवसर प्रदान किया। यह यात्रा मेरी जीवन यात्रा में विशेष महत्त्व रखती है। मैंने अपनी दृष्टिमंद आँखों से नई दुनिया देखी।

पहाड़ हवाएँ शुद्ध करते हैं। पहाड़ों पर हरियाली देखकर लग रहा था कि वे बादलों को बरसने का न्योता दे रहे हैं। दो दिन तक चारों ओर बिखरी बर्फ के बीच रहना कहानियों में सुने भगवान शंकर के कैलाश पर्वत पर रहने जैसा प्रतीत हुआ। ये यात्रा मेरे लिए जिन्दगी की एक नई शुरुआत है। हमारा विभाग से अनुरोध रहेगा कि भविष्य में भी इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जायें ताकि सच्चे मायनों में समावेशन हो सके।

कोमल
कक्षा-12
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, खेड़ा खेमावती
सफीदों, जिला- जींद, हरियाणा

पर्वतारोहण का कभी सपना भी नहीं देखा था, कैसे कहूँ कि सपना सच हुआ

इस अभियान का हिस्सा बनना मेरे लिए अत्यंत हर्ष व गर्व का विषय है। मेरे पास शब्द नहीं हैं जिनसे मैं अपनी प्रसन्नता को व्यक्त कर पाता। मैंने इस अभियान के दौरान जो अनुभव प्राप्त किए हैं, उनके बारे में मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था, इसलिए यह भी नहीं कह सकता कि मेरा कोई सपना सत्य हुआ है। इस अभियान ने मेरी जीवन-दिशा को बदला है। मेरे जैसे विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का समावेशन केवल विद्यालय की चार-दीवारी में ही नहीं, बाहर की दुनिया में भी कराया जा रहा है, इसके लिए मैं अपने विभाग का आभारी हूँ। मैं कामना करता हूँ कि भविष्य में भी यदि कोई ऐसा कार्यक्रम बनाया जाता है तो मुझे फिर से इसमें शामिल किया जाएगा। मैं अपने साथ गए सभी अध्यापक गण का आभारी हूँ जिन्होंने हमारे हौसले को पल भर के लिए भी डगमगाने नहीं दिया।

अंकुश
कक्षा-12
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, अरधाना
करनाल, हरियाणा

का आनंद अनूठा रहा। नगरीय-महानगरीक जीवन तो व्यक्ति को प्रकृति से बहुत दूर करता जा रहा है, लेकिन ऐसे अभियान हमें प्रकृति के निकट लाते हैं। हमारे साथ गए विशेष आवश्यकता वाले बच्चे इस अभियान का हिस्सा बनकार फूले नहीं समा रहे थे। उन्हें अपनी सीमाओं का अहसास था, फिर भी अभियान को लेकर उनके मन में अपार उत्साह और प्रसन्नता का भाव था। हम लोगों को उनका उत्साह बढ़ाने की बिल्कुल आवश्यकता नहीं पड़ी। सच तो यह है कि इन विशेष बच्चों का जोश देखकर हमारा उत्साह बढ़ रहा था।

इस सफर का हम सबके लिए अनूठा अनुभव रहा। प्रकृति की गोद में जाकर हमने महसूस किया कि प्रकृति हमें सरल जीवन की अवधारणा सिखाती है और हमारे मन को अपार शांति प्रदान करती है। हमें कुछ सबसे महत्त्वपूर्ण सबक सिखाता है। अकादमिक उत्कृष्टता के साथ-साथ प्रकृति द्वारा सिखाये गए इन सबकों से सीख लेना भी आवश्यक है।

इस सफर में बच्चे और हम कुछ समय के लिए गैजेट्स और इंटरनेट से बहुत दूर हो गए थे, क्योंकि प्रकृति ने एक नए वातावरण में सीखने और समायोजित करने को हमें मजबूर कर दिया था। एक पल के लिए भी मोबाइल से दूर न रहने वाले मोबाइल के बिना जीना सीख गए।

प्रशिक्षकों ने आवश्यक प्रशिक्षण दिया। प्रतिकूल मौसम के साथ समायोजित करना सिखाया। वहाँ मौजूद परामर्शदाताओं और विशेषज्ञ शिक्षकों द्वारा बारीकी से नज़र रखी गई ताकि बच्चे माता-पिता की अनुपस्थिति में खुद की देखभाल करना सीखें। यहाँ बच्चे लगातार अपने मन की बात हमसे करते रहे। बच्चों ने नेतृत्व गुण, अन्य बच्चों के साथ सामाजिकता और अनुशासन को सीखा, जिससे बच्चों में आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ और समग्र विकास में सहायक सिद्ध हुआ।

भारी बर्फबारी और खराब मौसम की वजह से काफी रुकावटों का सामना करना पड़ा। दो दिन तक बेस कैंप में भी रुकना पड़ा। लेकिन इन सभी विपरीत स्थितियों ने भी हमें किसी भी प्रकार से भयभीत नहीं किया। बच्चे विषम परिस्थितियों का पूरे उत्साह से सामना करते हुए चोटी पर तिरंगा लहराने में कामयाब रहे।

शानदार मनोरम दृश्यों का आनंद उठाते हुए, विपरीत परिस्थितियों में स्वयं को ढालते हुए, एक दूसरे के हाथ को अपने हाथ में थामते हुए जिस हौसले से बच्चों ने कीर्तिमान स्थापित किया है, यह उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति, उत्साह, उमंग, जोश और जुनून को दिखाता है। अटूट इरादों से बच्चों ने अपने लक्ष्य को प्राप्त किया। इस दौरान सभी साथियों ने एक दूसरे के भीतर उत्साह जगाने का कार्य किया।

हर कैंप में हम शानदार और खूबसूरत यादें लेकर आते थे, लेकिन यूनम पीक से हम अविस्मरणीय यादें लेकर आए हैं। इस सफर में हमें चुनौतियों को स्वीकार करने वाले और अद्भुत प्रतिभा के धनी साथियों से मिलने का मौका मिला, प्रकृति-प्रेमी बनने का मौका मिला। प्रकृति की गोद में कुछ पल गुज़ारने का अवसर मिला। निश्चित तौर पर ये अनुभव मेरे और हमारे साथ गए सभी बच्चों की यादों में सदा ताज़ा रहेंगे और उन्हें जीवन में आगे बढ़ने की सतत प्रेरणा देते रहेंगे।

विशेष अध्यापिका
राजकीय मॉडल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
नगुरा, जिला-जींद, हरियाणा

राजकीय विद्यालयों में बनेंगे यूथ एडवेंचर क्लब

हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग (पंचकूला) विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए समय-समय पर बेहतर व सार्थक योजनाएँ लागू कर रहा है। कला उत्सव, कल्चरल फेस्ट, एडवेंचर टूर ऐसी योजनाएँ हैं जिनसे विद्यार्थियों के मनोरंजन के साथ-साथ शारीरिक व मानसिक विकास तो हो ही रहा है साथ ही उनमें आत्मविश्वास जागृत हो रहा है तथा वे समाज, देश व प्रकृति से सीधे तौर पर जुड़ रहे हैं। शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित एडवेन्चर यात्राएँ जहाँ कला, भाषा, संस्कृति, इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि विषयों का ज्ञान करवाती हैं वहीं जल, जंगल, झरनों, नदियों, पहाड़ों, घाटियों, वादियों, ग्लेशियरों, झीलों, दुर्गम रास्तों के अवलोकन करने, समझने, परखने का मौका प्रदान करती हैं। विभिन्न संस्कृतियों, वेश-भूषाओं, बोलियों और रीति-रिवाजों, अलग-अलग भौगोलिक स्थितियों से परिचय करवाती हैं जिससे बच्चों का अनुभव व ज्ञान बढ़ता है। अपने देश को जानने का सुअवसर प्राप्त होता है। इन सबके और अधिक विस्तार के लिए, एडवेंचर यात्राओं व गतिविधियों को सार्थक व अधिक उपयोगी बनाने के लिए शिक्षा विभाग के अधिकारी एक योजना और लाए हैं। वो है हरियाणा के राजकीय विद्यालयों में यूथ एडवेंचर क्लबों का गठन।

यूथ एडवेंचर क्लब के गठन, उद्देश्य, सफलता, सार्थकता के लिए ही 8 सितंबर से 13 सितंबर, 2021 तक पंचकूला के सेक्टर 26 स्थित राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में पाँच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें प्रत्येक जिले से एक या दो कोऑर्डिनेटर शामिल हुए। कुल 32 शिक्षक कार्यशाला में आए जिन्होंने यूथ एडवेंचर क्लबों के गठन पर चर्चा की। कार्यशाला का उद्देश्य राजकीय विद्यालयों में यूथ एडवेंचर क्लबों की स्थापना करना था। शिक्षा विभाग की योजना अनुसार हरियाणा के सभी विद्यालयों में यूथ एडवेंचर क्लबों की स्थापना करके विद्यार्थियों को एडवेंचर गतिविधियों से जोड़ना है ताकि उनका सर्वांगीण विकास हो सके। एडवेंचर गतिविधियों से जुड़कर विद्यार्थी जीवन में आने वाली कठिनाइयों से आसानी से जूझने में सक्षम हो सकेंगे तथा इस क्षेत्र में रोज़गार की तलाश भी कर सकते हैं। बच्चे एडवेंचर से जुड़कर अपनी आकांक्षाओं को पंख लगाकर सुनहरे भविष्य की ओर लंबी उड़ान भर सकेंगे। बच्चों को मन व तन से मज़बूत करने, मनोरंजन करने, आत्मविश्वास जगाने, प्रकृति से तथा साहसिक कार्यों से जोड़ने के लिए प्रत्येक विद्यालय में एक एडवेंचर कोना भी बनाया जाएगा जहाँ बच्चे एडवेंचर का मजा ले सकेंगे। भविष्य में जितने भी एडवेंचर कैंप लगेंगे उनमें उन्हीं बच्चों को ले जाया जाएगा जो यूथ एडवेंचर क्लब के सदस्य होंगे। निकट भविष्य में मोरनी या मनाली उन शिक्षकों का स्पेशल कैंप लगाया जाएगा जो यूथ एडवेंचर क्लबों के इंचार्ज होंगे।

पाँच दिवसीय इस कार्यशाला में एक और महत्त्वपूर्ण कार्य किया गया। वह था एडवेंचर से जुड़े शिक्षकों व विद्यार्थियों के मार्गदर्शन व ज्ञान वृद्धि के लिए एक पुस्तिका तैयार करना, एडवेंचर से जुड़ी महत्त्वपूर्ण जानकारियों से भरपूर इस पुस्तिका के छह अध्याय होंगे जो पढ़ने वालों की एडवेंचर के प्रति रुचि तो जगायेंगे ही, साथ-साथ गाइड का काम भी करेंगे। इन छह अध्यायों को कार्यशाला के दौरान ही लिखा गया। इस पुस्तक को शिक्षा विभाग ही प्रकाशित करके प्रत्येक विद्यालय में इसे भेजेगा। इस पुस्तक का सम्पादन कार्यक्रम अधिकारी रामकुमार तथा साहित्यकार व शिक्षाविद् ओमप्रकाश कादयान करेंगे।

कार्यशाला के दौरान ही विभिन्न जिलों से आए प्रतिभागी शिक्षकों को मोरनी हिल्ज़, मोरनी किला, दो ताल (टिक्कर ताल), मोरनी नेचर कैंप की यात्रा भी करवाई गई ताकि शिक्षकों का अनुभव बढ़ सके तथा मनोरंजन भी हो सके। इससे पर्यटन को भी बढ़ावा मिलता है। इस कार्यशाला में निम्नलिखित शिक्षकों ने भाग लिया- विजेंद्र सिंह, संजय कुमार (अंबाला), संजय सैनी (भिवानी), श्री भगवान (चरखी दादरी), सरोज बाला (फरीदाबाद), डॉ. ओमप्रकाश कादयान (फतेहाबाद), कमलेश शर्मा (गुरुग्राम), भूपेंद्र दलाल (हिसार), सुरेश कुमार, सोमबीर (झज्जर), सत्यवान कौशिक (जींद), डॉ. जसबीर कौर (कैथल), सिया राम, श्रवण सिंह (करनाल), सुनीता कपूर, संदीप कुमार आर्य (कुरुक्षेत्र), रमेश वर्मा, सुनीता चौधरी (महेंद्रगढ़), ओम सिंह, सविता (नूह), नरेंद्र बल्हारा, भीम सिंह (पंचकूला), महेंद्र कुमार, रोहिणी (पानीपत), प्रदीप कुमार (रेवाड़ी), राजकुमार (रोहतक), सुखदेव सिंह (सिरसा), अंजू, विजेंद्र कुमार (सोनीपत), रजनीश गुप्ता (यमुनानगर)।

कार्यशाला के अंतिम दिन कार्यक्रम अधिकारी रामकुमार व प्राचार्य संजू शर्मा ने सभी शिक्षकों को सम्मानित भी किया। हिसार से आए आदमपुर के खंड शिक्षा अधिकारी भूपेंद्र दलाल ने शिक्षकों को संबोधित किया।

- डॉ ओमप्रकाश कादयान

प्यारे बच्चो!

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- तुम्हारी यामिका दीदी

महापुरुष बूझें-

1. भारत माँ के सच्चे 'लाल'
प्रधानमंत्री बेमिसाल

2. लौहपुरुष जैसे दृढ़-पर्वत
एकसूत्र में बाँधा भारत

3.थे 'आज़ाद' रहे आज़ाद
अंतिम गोली रखना याद

4.वैज्ञानिक वे सरल अनन्य
राष्ट्रपति पद हुआ धन्य

5.शिकागो भाषण सबको भाया
आत्म-शक्ति का बोध कराया

6.आज़ादी की फौज बनाई
मौत की गुत्थी सुलझ न पाई।

7.वेदों के थे बड़े प्रचारक
आर्यसमाज के थे संस्थापक

8.क्रेस्कोग्राफ का कर निर्माण
सिद्ध किए पौधों में प्राण

1.लाल बहादुर शास्त्री 2.सरदार वल्लभभाई पटेल 3.चंद्रशेखर आज़ाद 4.डॉ अब्दुल कलाम 5.स्वामी विवेकानन्द 6.सुभाष चंद्र बोस 7.स्वामी दयानन्द सरस्वती 8.जगदीश चंद्र बोस

प्रशांत अग्रवाल,
प्राथमिक विद्यालय डहिया,
बरेली, उप्र

पहेलियाँ

1. लोग कहें धरती का अमृत,
मेरे बिन मुश्किल है जीना।
रंग-गंध और स्वाद नहीं है,
बोलो साक्षी और प्रवीना।

2. तीन अक्षर का मेरा नाम,
मेहनत करना मेरा काम।
सर्दी गर्मी या हो बरसात,
काम करूँ मैं हर दिन-रात।
प्रथम हटे तो बनता सान
कहते मुझको लोग-----।

3. तीन भुजाएँ इतराती आईं,
जुड़कर बच्चो क्या कहलाईं।
तीन कोण हैं बच्चो उसमें,
शीर्ष तीन हैं उस आकृति में।

4. नन्हीं कील को ढूंढ निकालूँ,
अजब निराली चीज।
प्लास्टिक को ढूंढ न पाऊँ,
आती मुझको खीज।

उत्तर- 1. जल, 2. किसान, 3. त्रिभुज, 4. चुम्बक

डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव
रॉवगंज कालपी जालौन, उत्तर प्रदेश-285204

घमंडी का सिर नीचा

नदी के किनारे नारियल का पेड़ लगा हुआ था। उस पर लगे नारियल को अपने पेड़ के सुंदर होने पर बहुत गर्व था। सबसे ऊँचाई पर बैठने का भी उसे बहुत मान था। इस कारण घमंड में चूर नारियल हमेशा ही नदी के पत्थर को तुच्छ पड़ा हुआ कहकर उसका अपमान करता रहता।

एक बार, एक शिल्पकार उस पत्थर को लेकर बैठ गया और उसे तराशने के लिए उस पर तरह-तरह से प्रहार करने लगा। यह देख नारियल को और अधिक आनंद आ गया उसने कहा- ओ बेचारे पत्थर! तेरी भी क्या ज़िंदगी है। पहले उस नदी में पड़ा रहकर इधर- उधर टकराया करता था और बाहर आने पर मनुष्य के पैरों तले रौंदा जाता था और आज तो हद ही हो गई। ये शिल्पी तुझे हर तरफ से चोट मार रहा है और तू पड़ा देख रहा है। अरे! अपमान की भी सीमा होती है। कैसी तुच्छ ज़िंदगी जी रहा है। मुझे देख कितने शान से इस ऊँचे वृक्ष पर बैठता हूँ। पत्थर ने उसकी बातों पर ध्यान ही नहीं दिया। नारियल रोज इसी तरह पत्थर को अपमानित करता रहता।

कुछ दिनों बाद, उस शिल्पकार ने पत्थर को तराशकर शालिग्राम बनाये और पूर्ण आदर के साथ उनकी स्थापना मंदिर में की गई। पूजा के लिए नारियल को पत्थर के बने उन शालिग्राम के चरणों में चढ़ाया गया। इस पर पत्थर ने नारियल से बोला- नारियल भाई ! कष्ट सहकर मुझे जो जीवन मिला उसे ईश्वर की प्रतिमा का मान मिला। मैं आज तराशने पर ईश्वर के समतुल्य माना गया। जो सदैव अपने कर्म करते हैं वे आदर के पात्र बनते हैं। लेकिन जो अहंकार का भार लिए घूमते हैं, वे नीचे आ गिरते हैं। पूरी बात नारियल ने सिर झुकाकर स्वीकार की। तभी नदी बोली -घमंडी का सिर नीचा।

विनय मोहन खारवन

प्यारे बापू

जन्म दिवस बापू का आया।
सबने मिलकर खूब मनाया।
स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत,
सुंदर सपना हमें दिखाया।

सत्य अहिंसा को अपनाया।
मन में प्रेम भाव जगाया।
रंगभेद की लड़ी लड़ाई,
दुनिया में परचम फहराया।

सबको अपने साथ मिलाया।
आज़ादी का बिगुल बजाया।
हिन्दू मुस्लिम मिलकर चलना,
गांधी जी ने यह समझाया।

तकली-चरखा खूब चलाया,
घर-घर में खद्दर बनवाया,
पहन लँगोटी खादी की,
स्वदेशी आंदोलन चलाया।

असहयोग आंदोलन आया
सविनय अवज्ञा में उलझाया
अंग्रेज़ो अब भारत छोड़ो,
गांधी ने ऐलान कराया।

ऊँच-नीच का भेद मिटाया,
छुआछूत को दूर भगाया,
मानव स्वाभिमान जगाने,
सबको अपने गले लगाया।

गांधी दर्शन ने सिखलाया
समता का रस्ता दिखलाया,
आओ सबक वही याद करें,
जो गांधी ने पाठ पढ़ाया।

भूपसिंह भारती, शिक्षक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक
विद्यालय
डेरोली अहीर
जिला महेंद्रगढ़, हरियाणा

दूध उफनता है, पानी क्यों नहीं

वास्तव में दूध में वसा, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन और कई तरह के खनिज होते हैं। मुख्य रूप से दूध में वसा के अणु शामिल होते हैं और प्रोटीन के रूप मे केसीन के अणु पाए जाते हैं। दूध में 87 फीसदी पानी, 4 फीसदी प्रोटीन, 5 फीसदी लैक्टोज (दूध चीनी) होता है। जब दूध को गर्म किया जाता है तब उसमें से पानी की भाप बनना शुरू होता है और दूध में मौजूद वसा और अन्य पदार्थों के गाढ़ापन बढ़ जाते हैं। फिर वसा, प्रोटीन और खनिज अलग हो जाते हैं और चूँकि वे दूध की तुलना में हल्के होते हैं, इसलिए वे क्रीम के रूप में दूध की सतह पर इकट्ठा हो जाते हैं। दूध के ऊपर एक परत बन जाने से अंदर के वाष्प (भाप) को बाहर निकलने से रोक देते हैं।

दूध के ऊपर उसमें पाए जाने वाले केसीन प्रोटीन की एक परत बन जाती है। इसके बाद दूध में मौजूद पानी के अणु दूध के अंदर ही वाष्प (भाप) बन जाते हैं और फिर बाहर निकलना चाहते हैं और दूध के निचली सतह पर प्रेशर बनाना शुरू कर देते हैं। बाहर निकलने का रास्ता न मिलने पर वो वाष्प के रूप में बाहर आना चाहता है और जिसके कारण दूध बर्तन से बाहर निकल जाता है।

पानी में दूध की तरह कोई परत नहीं बनती है। इसलिए उसमें वाष्प को निकलने में कोई रुकावट नहीं होती है।

विनय मोहन खारवन
गणित प्राध्यापक
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, जगाधरी, यमुनानगर

सुपर-100 के विद्यार्थियों ने किया प्रदेश को गौरवान्वित : मुख्यमंत्री

अगर किसी के पास प्रतिभा है तो कोई आपको अपने सपनों को पूरा करने से नहीं रोक सकता, फिर चाहे कोई ग्रामीण अंचल से ही क्यों न हो। ऐसी ही प्रतिभाओं को तलाशने और तराशने का कार्य करने के लिए सुपर-100 कार्यक्रम का आरंभ किया गया था। जैसा जबरदस्त प्रदर्शन ये विद्यार्थी कर रहे हैं, उसे देखकर मैं बेहद प्रसन्न हूँ। वास्तव में इन विद्यार्थियों ने अपनी सफलता से प्रदेश को गौरवान्वित किया है।

उपरोक्त विचार बीते दिनों पंचकूला में आयोजित राज्य स्तरीय 'प्रतिभा सम्मान समारोह' में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने कहे। कार्यक्रम में जेईई एडवांस परीक्षा- 2021 (सुपर 100 कार्यक्रम के तहत) और सिविल सेवा परीक्षा-2020 के उत्तीर्ण छात्रों को आमंत्रित किया गया था। शिक्षा मंत्री श्री कँवर पाल, विधानसभा अध्यक्ष श्री ज्ञानचंद गुप्ता, सांसद श्री रतन लाल कटारिया भी इस मौके पर मौजूद रहे।

हरियाणा में गरीब परिवार का कोई भी प्रतिभावान् छात्र अपने सपनों को पूरा करने से वंचित न रहे, इसके लिए मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने घोषणा की कि परिवार पहचान पत्र के अन्तर्गत जिन परिवारों की सत्यापित आय 1.80 लाख रुपये प्रति वर्ष से कम है, ऐसे परिवारों के बच्चों को मुफ्त शिक्षा मिलेगी।

देश की सबसे प्रतिष्ठित सिविल सेवा परीक्षा-2020 पास करने वाले छात्रों को बधाई देते हुए श्री मनोहर लाल ने कहा कि आप में से प्रत्येक को यह याद रखना चाहिए कि आपने समाज की सेवा के लिए करियर विकल्प के रूप में सिविल सेवा को चुनने का फैसला किया है। आपकी सेवा अवधि के दौरान आपको विविध क्षेत्रों में काम करने के असंख्य अवसर मिलेंगे, इसलिए, मुझे उम्मीद है कि आप में से प्रत्येक अपने स्तर पर सर्वश्रेष्ठ प्रयास करेगा।

जेईई एडवांस-2021 उत्तीर्ण करने वाले गरीब पृष्ठभूमि के 29 छात्रों का मनोबल बढ़ाते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि आप जिस भी क्षेत्र को चुनेंगे उसमें आप सभी हरियाणा को गौरवान्वित करेंगे। उन्होंने कहा कि आपके सपनों के लिए सही शैक्षणिक माहौल देने के लिए आप सभी के माता-पिता ने भी कड़ी मेहनत की है, जो सराहनीय है।

इससे पूर्व बोलते हुए डॉ.महावीर सिंह ने मुख्यातिथि व अन्य गणमान्य अतिथियों का अभिनन्दन करते हुए कहा कि यह गर्व की बात है कि माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने तमाम व्यस्तताओं में से प्रतिभाओं को सम्मानित करने का समय निकाला। उन्होंने कहा कि ये बच्चे उस परिवेश से आते हैं जहाँ संसाधनों की तो कमी है, लेकिन प्रतिभा की नहीं। उन्होंने कहा कि सुपर-100 कार्यक्रम के तहत हम ऐसे ही प्रतिभाओं को तलाशने व तराशने का कार्य कर रहे हैं। सुपर-100 योजना बिहार के सुपर-30 की तर्ज पर हरियाणा में संचालित की जा रही है। उन्होंने कहा कि साधन-सम्पन्न लोगों को तो कोचिंग जैसी सारी सुविधाएँ उपलब्ध हो जाती हैं, परंतु सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बहुत से प्रतिभावान् और साधन-विपन्न बच्चे इनसे महरूम रह जाते हैं। साधन न होने के कारण कई बार ये प्रतिभाएँ गुमनामी के अंधकार में दब कर दम तोड़ जाती हैं। सुपर-100 कार्यक्रम ऐसे बच्चों के लिए वरदान साबित हुआ है।

अपने उद्बोधन में माननीय मुख्यमंत्री ने कहा कि 2014 में जब उन्होंने मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली

थी, तब राज्य का समग्र और समान विकास सुनिश्चित करना उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता थी। जिसके लिए राज्य सरकार द्वारा कई नई अनूठी योजनाएँ बनाई गई जो मील का पत्थर साबित हुई।

'थ्री आर' की शिक्षा प्रणाली को बदलने की कवायद-

मुख्यमंत्री ने कहा कि लॉर्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली 'थ्री आर' : राइटिंग, रीडिंग और अर्थमेटिक पर केंद्रित थी, जो एक नागरिक के समग्र विकास को सुनिश्चित नहीं करती थी। इसलिए युवा पीढ़ी के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ उनमें राष्ट्रवाद की भावना पैदा करने के लिए नई शिक्षा नीति-2020 की शुरुआत की गई है। उन्होंने कहा कि हरियाणा में 2025 तक इस नीति के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने की दिशा में काम करना शुरू कर दिया है, जबकि देश में इस नीति को लागू करने का लक्ष्य 2030 तक है, लेकिन हरियाणा राष्ट्रीय लक्ष्य से 5 साल पहले ही इसे हासिल कर लेगा।

मिशन मेरिट-

मुख्यमंत्री ने कहा कि एक समय था जब प्रदेश में पर्ची-खर्ची का बोलबाला था और इस व्यवस्था के कारण पढ़ाई को महत्त्व नहीं दिया जाता था। युवाओं ने योग्यता के आधार पर नौकरी पाने की उम्मीद खो दी थी। लेकिन उन्हें आशा की किरण देते हुए, हरियाणा में हमने मिशन मेरिट शुरू किया, जिसके तहत वर्तमान राज्य सरकार के पिछले कार्यकाल के दौरान लगभग 83 हज़ार सरकारी नौकरियाँ केवल मैरिट पर दी गईं। इससे न केवल युवाओं का मनोबल बढ़ा, बल्कि उन्हें कड़ी मेहनत करते रहने की प्रेरणा भी मिली।

किए गए डिजिटल सुधार-

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान में सरकार के लगभग हर विंग में ह्यूमन इंटरफेस को बदलने के लिए डिजिटल सुधार लाए गए हैं। ऑनलाइन शिक्षक स्थानांतरण नीति इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। 90 प्रतिशत से अधिक शिक्षक इस प्रणाली से संतुष्ट हैं। इसी तरह, सिस्टम को पेपरलेस, फेसलेस और पारदर्शी बनाने के लिए विभिन्न ऑनलाइन सुधार लाए जा रहे हैं।

केंद्र सरकार कर रही है सराहना

मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का धन्यवाद करते हुए कहा कि पिछले सात वर्षों से हम क्रांतिकारी सुधार लाने के लिए विभिन्न कार्य कर रहे हैं। अंत्योदय की भावना से काम करते हुए सरकारी कल्याणकारी योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाना सुनिश्चित कर रहे हैं। यह करते हुए कभी-कभी हमें यह भी महसूस होता था कि हम सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं या नहीं, लेकिन मैं संतुष्ट और अभिभूत हूँ कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने हमारी कड़ी मेहनत को पहचाना है।

कृषि में प्रधान प्रदेश अब शिक्षा में भी प्रधान-

इस अवसर पर बोलते हुए शिक्षा मंत्री श्री कंवरपाल

ने कहा कि हरियाणा को एक कृषि प्रधान राज्य के रूप में जाना जाता है, लेकिन जिस तरह से इन उच्च प्रतियोगी परीक्षाओं में छात्रों की बढ़ती संख्या के साथ राज्य ने शिक्षा के क्षेत्र में खुद को आगे बढ़ाया है, यह स्पष्ट रूप से राज्य सरकार द्वारा इस क्षेत्र में किए गए शानदार कार्यों को उजागर करता है।

उन्होंने कहा कि मुझे उम्मीद है कि ये छात्र जिस भी क्षेत्र में जाएँगे, हरियाणा को गौरवान्वित करेंगे। मैं उनके माता-पिता की भी सराहना करता हूँ, जिन्होंने कुछ न कुछ बलिदान किया है ताकि इन बच्चों को अपने सपनों को प्राप्त करने के लिए सही शैक्षणिक वातावरण दिया जा सके।

विद्यार्थियों ने किया हार्दिक आभार-

इससे पूर्व राज्य सरकार के सुपर 100 कार्यक्रम के तहत मुफ्त कोचिंग प्राप्त कर जेईई एडवांस परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले छात्रों ने मुख्यमंत्री के प्रति आभार व्यक्त किया कि मुख्यमंत्री ने सुपर 100 कार्यक्रम के माध्यम से उन्हें अपने सपनों को पूरा करने का एक सुनहरा अवसर दिया है।

गरीब परिवार से संबंध रखने वाले अधिकांश छात्रों ने अपने अनुभव साझा किए कि कैसे वे हमेशा आईआईटी में प्रवेश पाने का सिर्फ सपना देखते थे, लेकिन उनकी वित्तीय स्थिति उन्हें जेईई जैसी प्रतियोगी परीक्षा को पास करने के लिए महंगी कोचिंग लेने से वंचित रखती थी। मुख्यमंत्री द्वारा शुरू किये गये अनोखे सुपर-100 कार्यक्रम ने न केवल उन्हें अपने सपनों को प्राप्त करने में मदद की बल्कि उनके जैसे योग्य छात्रों को आशा की एक किरण भी दी है कि वे भी अपने सपनों को पूरा कर सकते हैं।

सिविल सेवा परीक्षा-2020 में 11वीं रैंक हासिल करने वाली देवयानी ने कहा कि उन्हें बहुत गर्व और खुशी है कि वह हरियाणा से ताल्लुक रखती हैं, क्योंकि भौगोलिक दृष्टि से देश का एक छोटा राज्य होने के बावजूद हरियाणा से यूपीएससी, जेईई और एनईईटी पास करने वाले छात्रों की बढ़ती संख्या से पता चलता है कि हरियाणा में शिक्षा का कल्चर बना है। प्रणव विजयवर्गीय जिन्होंने यूपीएससी परीक्षा में 65वां रैंक प्राप्त किया है, ने कहा कि सीएमजीजीए कार्यक्रम और विशेष रूप से मुख्यमंत्री का तहेदिल से धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने मुझे जिला प्रशासन की कार्यप्रणाली को स्पष्ट रूप से समझने का अवसर दिया।

स्कूल शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री महावीर सिंह, उच्चतर एवं तकनीकी शिक्षा विभागों के प्रधान सचिव श्री आनंद मोहन शरण, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा श्री जे. गणेशन, उच्चतर एवं तकनीकी शिक्षा विभागों के निदेशक श्री चंद्र शेखर खरे, निदेशक मौलिक शिक्षा श्री अंशज सिंह, पंचकूला के उपायुक्त श्री विनय प्रताप सिंह, माध्यमिक शिक्षा की अतिरिक्त निदेशक श्रीमती अमृता सिंह, मौलिक शिक्षा के संयुक्त निदेशक श्री विवेक कालिया, सहायक निदेशक श्री नंदकिशोर वर्मा, श्री कुलदीप मेहता, विकल्प के प्रबंधक श्री नवीन मिश्रा, ऐस टूटोरियल से श्री पीवी गुप्ता, एलन करियर इंस्टीट्यूट से श्री सदानंद व जितिन गुप्ता भी इस अवसर पर मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक ने किया।

-डॉ.प्रदीप राठौर
drpradeeprathore@gmail.com

लोकतंत्र की जड़ें मजबूत करते लीगल लिटरेसी क्लब

सुरेश राणा

विधिक कहावत है कि कानून के प्रति अनभिज्ञता कोई बचाव नहीं है अर्थात् जैसे ही कोई कानून प्रभाव में आता है, यह अवधारणा स्थापित हो जाती है कि प्रत्येक सम्बन्धित को इस कानून की जानकारी है। कोई व्यक्ति कानून के प्रति अनभिज्ञता जताकर उसके उल्लंघन के आरोपों को नकार नहीं सकता। इसलिए कानून की जानकारी होना प्रत्येक नागरिक के लिए बेहद जरूरी है।

देश के नागरिकों को कानूनों की जानकारी के अभाव के कारण होने वाली समस्याओं से निजात दिलाने और जागरूक बनाने के उद्देश्य से ही विधिक साक्षरता प्रदान की जाती है

प्रत्येक व्यक्ति स्वयं के शोषण या अन्याय से रक्षा तभी कर सकता है जब उसे कानून के मूलभूत प्रावधानों का ज्ञान हो या यह ज्ञान हो कि अपने अधिकारों के उल्लंघन से रक्षा के लिए वह कहाँ जाए और किससे सम्पर्क करे।

भारतीय संविधान में एक क्रांतिकारी व्यवस्था करते हुए संविधान के अनुच्छेद 39ए में सभी के लिए न्याय सुनिश्चित किया गया है। संविधान के अनुच्छेद 14 और 21(1) के तहत हर राज्य का यह कर्तव्य है कि न्याय के संबंध में सबके लिए समान अवसर सुनिश्चित करे और समानता के आधार पर समाज के कमजोर वर्गों को सक्षम विधिक सेवाएँ प्रदान करने के लिए एक तंत्र की स्थापना करे।

समाज के कमजोर वर्गों को मुफ्त कानूनी सेवाएँ प्रदान करने और विवादों के सौहार्दपूर्ण समाधान के लिए लोक अदालतों का आयोजन करने के लिए कानूनी सेवा प्राधिकरण अधिनियम, 1987 के तहत राष्ट्रीय कानूनी सेवा प्राधिकरण (NALSA) का गठन किया गया है। इसकी नीतियों और निर्देशों को प्रभावी बनाने और लोगों को मुफ्त कानूनी सेवाएँ देने और राज्य में लोक अदालतों का संचालन करने के लिए प्रत्येक राज्य में राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण तथा प्रत्येक जिले में विधिक सेवा कार्यक्रम क्रियान्वयन के लिए जिला विधिक सेवा प्राधिकरण का गठन किया गया है।

स्कूलों के विद्यार्थियों में कानूनी जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण एवं शिक्षा विभाग हरियाणा के संयुक्त तत्त्वावधान में सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों में विधिक साक्षरता क्लबों का गठन किया गया, जिनमें वरिष्ठ माध्यमिक और उच्च विद्यालय के कक्षा नौवीं से बारहवीं के विद्यार्थी भाग लेते हैं।

समाज में सभी को सम्मानपूर्वक जीने का अधिकार है। समाज में सम्मानपूर्वक वही व्यक्ति जी सकता है जो दूसरों का सम्मान करे और अपने अधिकारों और कर्तव्यों की पूर्ण जानकारी रखता हो। कानूनी साक्षरता के द्वारा विद्यार्थियों को कानूनी जानकारी प्रदान की जाती है। उन्हें अपने अधिकारों और कर्तव्यों का ज्ञान होता है। उन्हें कानून के समक्ष समानता से जीने के लिए जागरूक किया जाता है। वे भारतीय संविधान में वर्णित मूल्यों के बारे में जानकारी हासिल करके एक जागरूक नागरिक बनते हैं।

विद्यार्थी देश का भविष्य हैं। यदि उन्हें सही शिक्षा और मार्गदर्शन मिलेगा तो देश के लिए उच्चकोटि के नागरिक तैयार होंगे। विद्यार्थियों को कानून के बारे में जानकारी प्रदान करने और कानून के प्रति जागरूक करने हेतु विद्यालय स्तर से लेकर खण्ड, जिला, मंडल और राज्य स्तर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है, जिसके लिए निम्नलिखित विषय निर्धारित किए गए हैं-

1. घरेलू हिंसा से महिला संरक्षण अधिनियम -2005 2. दहेज प्रथा 3. मानवाधिकार 4. मौलिक कर्तव्य 5. दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकार 6. निराश्रित महिला और बच्चों के अधिकार 7. नशे की लत से छुटकारा 8. कन्या भ्रूण हत्या 9. स्वच्छता एवं सामान्य जागरूकता 10. पर्यावरण 11. यौन शोषण 12. बाल विवाह 13. शिक्षा का अधिकार 14. सूचना का अधिकार 15.संवैधानिक मूल्य 16.रैगिंग 17. वरिष्ठ नागरिकों के अधिकार 18. सड़क सुरक्षा।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग और हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा संयुक्त रूप से विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है, जिनमें विद्यार्थी उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले विद्यार्थी कानून की अच्छी खासी जानकारी हासिल रखते हैं। क्विज प्रतियोगिता में तो ऐसा दृश्य दिखाई देता है जैसे विद्यार्थी नहीं बल्कि संविधान विशेषज्ञों की टीम भाग ले रही हो। विद्यार्थियों में स्वस्थ और रोचक प्रतिस्पर्धा देखने को मिलती है। सभी प्रतियोगिताओं के लिए ऊपर लिखे गए विषय निर्धारित किए गए हैं। इस आयोजन के अंतर्गत विभागीय नियमानुसार निम्न प्रतियोगियों का संचालन किया जाता है:-

1. निबन्ध लेखन- प्रतिभागी को उपर्युक्त विषयों में से किसी एक विषय पर हिंदी या अंग्रेजी भाषा में निबन्ध लिखना होता है। जिसके लिए समय सीमा एक घण्टा तथा शब्द सीमा 400 से 600 शब्द निर्धारित किए गए हैं।

2. स्लोगन लेखन- विधिक मुद्दों से सबंधित स्लोगन लेखन के लिए समय सीमा एक घंटा निर्धारित की गई है।

3. भाषण- निर्धारित विषयों पर भाषण प्रतियोगिता के लिए समय सीमा चार से छह मिनट निर्धारित है। जिसका मूल्यांकन उच्चारण, विषय वस्तु, आत्मविश्वास, आरोह-अवरोह, प्रस्तुतिकरण, दर्शकों के साथ जुड़ाव आदि के आधार पर किया जाता है।

4. प्रश्नोत्तरी- प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में प्रत्येक टीम

में दो या तीन सदस्य भाग ले सकते हैं। यदि दस से ज्यादा टीमें भाग लेती हैं तो प्रारंभिक चरण में लिखित परीक्षा आयोजित की जाती है। क्वालिफाइड टीमें ही मुख्य चरण में भाग लेती हैं। प्रतियोगिता में निर्धारित विषयों से सम्बंधित प्रश्न पूछे जाते हैं।

5. वाद विवाद- वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रत्येक प्रतिभागी को तीन से पाँच मिनट का समय दिया जाता है। उसे निर्धारित विषयों पर अपने विचार रखने होते हैं। एक टीम में दो प्रतिभागी भाग लेते हैं। एक प्रतिभागी वर्णित विषय के पक्ष में तो दूसरा विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत करता है।

6. स्किट- इस प्रतियोगिता में छह से आठ प्रतिभागी भाग ले सकते हैं। उन्हें अपनी प्रस्तुति आठ से बारह मिनट में प्रस्तुत करनी होती है। इस प्रतियोगिता में स्थानीय भाषा का प्रयोग किया जा सकता है। संवादों में अशिष्ट भाषा का प्रयोग वर्जित होता है। स्किट की विषय वस्तु उद्देश्यपूर्ण होने की माँग की जाती है।

7. कवितोच्चारण- निर्धारित विषयों पर कवितोच्चारण के लिए समय-सीमा तीन से पाँच मिनट निर्धारित की गई है। मूल्यांकन उच्चारण, विषय वस्तु, प्रस्तुतीकरण आदि के आधार पर किया जाता है। पेपर रीडिंग मान्य नहीं होती।

8.ऑन द स्पॉट पेंटिंग- विधिक विषयों के लिए चयनित किए गए 18 विषयों में से किसी एक पर ऑन द स्पॉट पेंटिंग बनानी होती है, जिसके लिए समय-सीमा दो घंटे निर्धारित की जाती है।

9.पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन- विधिक विषयों के लिए चयनित विषयों में से किसी पीपीटी की प्रस्तुति देनी होती है, जिसमें 15 से 20 स्लाइड्स शामिल हों। प्रस्तुति की समय सीमा पाँच से दस मिनट निर्धारित की गई है।

10.डॉक्यूमेंट्री निर्माण- इसके अंतर्गत प्रतिभागी को सामाजिक मुद्दों पर डॉक्यूमेंट्री का निर्माण करना होता है। इस प्रतियोगिता के लिए चार से दस मिनट का समय तय किया गया है।

पुरस्कार- लीगल लिटरेसी के अंतर्गत आयोजित होने वाली इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को खंड स्तर पर प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने पर क्रमशः 300, 200 तथा 100 रुपए की राशि प्रदान की जाती है। जिला स्तर पर पुरस्कार राशि क्रमशः 21 सौ, 15सौ व 11 सौ है, मंडल स्तर पर क्रमशः 51 सौ, 31 सौ तथा 2100 रुपए तथा राज्य स्तर क्रमशः 11 हजार, 8 हजार और 7 हजार रुपये है।

हिंदी प्राध्यापक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कमालपुर
खण्ड कलायत, जिला कैथल, हरियाणा

डॉ. सुधीर कुमार को 'महर्षि विश्वामित्र सम्मान'

निदेशालय माध्यमिक शिक्षा हरियाणा में आरोही विद्यालयों के इंचार्ज डॉ. सुधीर कुमार को हरियाणा संस्कृत अकादमी पंचकूला द्वारा संस्कृत भाषा में उत्कृष्ट लेखन के लिए 'महर्षि विश्वामित्र सम्मान' देने की घोषणा हुई है। इस पुरस्कार में डेढ़ लाख रुपये की राशि प्रदान की जाती है।

गौरतलब है कि डॉ. सुधीर कुमार 2011 से 2015 तक हरियाणा संस्कृत अकादमी के निदेशक भी रहे हैं। इस दौरान उनके द्वारा संस्कृत के प्रचार-प्रसार के लिए बहुत से नये कार्यक्रम बनाए गए थे।

डॉ.सुधीर ने पंजाब विश्वविद्यालय से पीएच-डी. व कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल से डी-लिट् की उपाधि प्राप्त की है। उन्होंने डेढ़ दर्जन से अधिक पुस्तकों व पत्रिकाओं का लेखन व संपादन किया है। उनके द्वारा रचित 'वैदिक साहित्य-एक अनुशीलन', 'संस्कृत वाङ्मय में गंगा का स्वरूप' और एक खंडकाव्य प्रकाशनाधीन हैं।

उनके वास्तु-शास्त्र पर लगभग एक दर्जन शोध-पत्र विविध प्रतिष्ठित शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। वे राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय स्तर के 50 से अधिक सम्मेलनों, सेमीनारों व कार्यशालाओं में मुख्य-अतिथि, मुख्य वक्ता या प्रतिभागी के रूप में शिरकत कर चुके हैं। उनके कार्यकाल में हरियाणा संस्कृत अकादमी द्वारा 50 से अधिक राष्ट्रीय स्तर के सेमीनारों व संस्कृत के उत्थान के लिए विभिन्न शिक्षण संस्थानों में शताधिक प्रतियोगिताओं का आयोजन कराया जा चुका है। संस्कृत के प्रचार-प्रसार के लिए उनके अतुलनीय योगदान के लिए उन्हें विभिन्न राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा 50 से अधिक सम्मान व प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए जा चुके हैं।

डॉ.सुधीर ने बताया कि उनके जीवन का लक्ष्य संस्कृत-सेवा है। वे किसी पुरस्कार या सम्मान की आकांक्षा से कार्य नहीं करते हैं, फिर भी ऐसे पुरस्कार मिलने से उन्हें और भी समर्पित-भाव से कार्य करने की प्रेरणा अवश्य मिलती है।

-डॉ. प्रदीप राठौर

2021

अक्टूबर-नवंबर माह के त्यौहार व विशेष दिवस

2 अक्टूबर- महात्मा गांधी जयंती
5 अक्टूबर- विश्व शिक्षक दिवस
7 अक्टूबर- महाराजा अग्रसेन जयंती
8 अक्टूबर- भारतीय वायु सेना दिवस
11 अक्टूबर- अन्तरराष्ट्रीय बालिका दिवस
15 अक्टूबर- दशहरा
19 अक्टूबर- ईद-ए-मिलाद
20 अक्टूबर- महर्षि वाल्मीकि जयंती
24 अक्टूबर- करवा चौथ
1 नवंबर- हरियाणा दिवस
4 नवंबर- दिवाली
5 नवंबर- विश्वकर्मा दिवस
10 नवंबर- छठ पूजा
19 नवंबर- गुरु नानक देव जयंती
24 नवंबर- गुरु तेग बहादुर शहीदी दिवस

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Achievement of Haryana In NLEPC Under Inspire Award Manak 2019-20

Poonam Yadav

The eighth edition of NLEPC (national level exhibition cum Project competition) under INSPIRE award MANAK commenced from 4th September 2021 in virtual mode. The event showcased the innovative ideas of students who have been selected at state level under inspire award "MANAK" programme in 2020-21. The whole purpose of the programme was to ignite millions of young minds and making them part of; larger innovation driven science and technology development within the country. In this event 1000 selected ideas from all over India after the SLEPC were evaluated by the jury team members. Out of these 60-idea based innovative exhibits were awarded at National level.

This year 13 state level winners from Haryana state participated in National level. These were Aditya Mohil, Dev, Kavish Sardana, Namish Kharbanda, Rachna ,Ujjwal Siwach, Amrinder Singh, Harshal Chawla, Latika Dhiman ,Preeyam Das,S Gaurav Singh and Tamannaah. Three students From Faridabad District namely Kavish Sardana, Namish Kharbanda, Preeyam Das & one student from Yamuna Nagar namely S Gaurav Singh from Haryana State set benchmark by winning four awards at National level competition (NLEPC).

It was the outcome of well-coordinated and collective efforts of NIF authorities, Sh.Devender Tiwari and Sh.Hardev Choudhary, DST officials, State, district and school authorities, DEOs and DSS in smooth and effective organization of DLEPC, SLEPC and NLEPC. In Haryana it was led by Director, Secondary Education Dr. J Ganeshan (IAS) and SCERT GURUGRAM under the able leadership of Dr. Rishi Goyal Director, Smt. Sangee-

ta Yadav Joint Director, Sh. Sunil Bajaj Dy. Director, dedicated efforts by Science Wing Incharge Dr. Deepti Boken, subject expert Smt. Savita Devi and INSPIRE Nodal officer Poonam Yadav.

It was the able guidance, continuous and consistent efforts of District Nodal Officer from Faridabad Shri Ajay Kumar Sharma, DSS and District Nodal Officer from Yamuna Nagar Sh. Vishal Singhal that the students got positions at National level. These NLEPC winner students are:

1.Sanchit Kumar from Holy child school Faridabad whose idea of making sensors on the seats of senior citizens in Metro train/ other public conveyance was based on installation of biometric device. On the basis of Thumb Impression, seats allotted for senior citizens and a narrator on the top of seat. He explained that the seat will automatically get folded if a person is below 60 years because his thumb impression will not allow the seat to open.

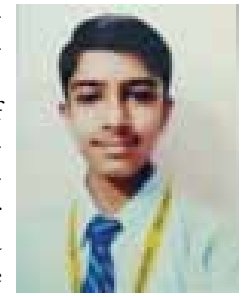

2.Priyam Das from DPS Greater Faridabad, who made his project on E Shoes which provides a solution to the problem of Energy Crisis by tapping the energy while walking and converting it into electrical energy. The energy further can be used to charge the phone at times when the phone gets totally discharged or after returning from exercise or walking.

3. Kavish Sardana from Faridabad made an intelligent Bin named I-Bin with its unique and smart way of waste disposal and suggested waste management system

4.S Gaurav Singh from Yamuna Nagar won award at national level for his model neuron which is networking of end users as reachable organised Nexus with an advantage that people can use it anywhere with no issue of connectivity or choice of network selection so these four students are winners at national level and it is a proud moment for our state.

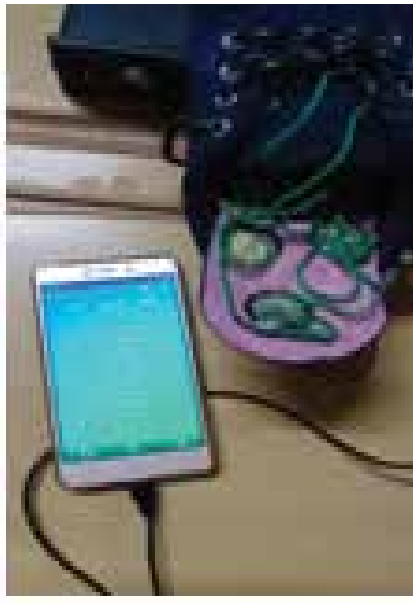

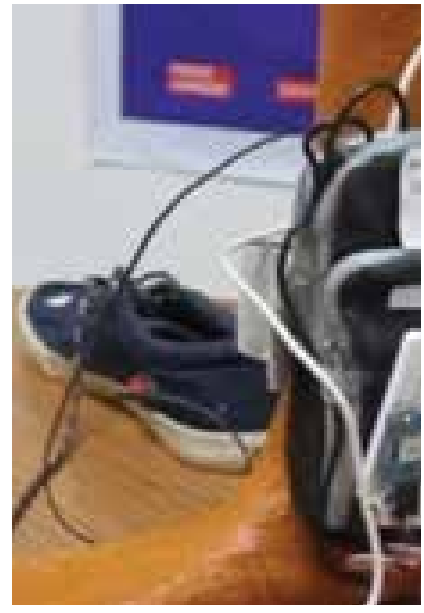

The nominations for this year are now open.Each registered school whether private or govt. can submit the ideas of five students (from class 6 to 10)from their school . The link for the same is given below.

https://www.inspireawards-dst.gov.in/userp/school-authority.aspx

Subject expert
SCERT, Gurugram Haryana

TEAM Building

Smt. Rupam Jha

A very important principle of Management is Team Building. The leader leads the Team in order to accomplish certain tasks.

The right attitude is the first step towards Team Building. Leadership acumen leads to building a strong team. A strong team will help achieve organizational goals. The vision is provided by the leader and the mission becomes clear to the team. Building a healthy work environment both in terms of physical space and mindset of the members of the Team will enhance motivation.

The leader of the Team infuses a certain energy into the team. By involving every member of the organization in tasks and activities, the leader takes the entire gamut of members along. The members of the team feel a sense of belongingness and consider the duties assigned to them as their own.

With authority comes responsibility and to build a strong team, take responsibility and assign challenging tasks to team members, so that they learn how to take responsibility.

Mutual Trust is important. Leaders who have faith in their team can get the best out of the members. The team members have full faith in their leader and this is reciprocal. The Team Leader too has the assurance that the member will accomplish the task to the best of ability.

Communication skills have to be strong. Communication is made more effective by making it two –way. Listening is an art, and has to be cultivated. By communication, the leader is also able to gauge which member would be best suited for which task.

Conflict management is another important area of Team Building as conflict if not managed can lead to aggression. A committee can be made to

resolve the situation by dialogue.

Problem Solving Ability is a character trait which should be there in every leader. Active listening is one step towards enhancing Problem Solving ability. In a democratic participation style, a leader listens to all but the final decision making is with the top management. By listening, one also learns to empathize. Problem solving ability also includes in its folds the ability to move to an alternate solution if the first one does not work.

Action Research is when the practitioner does a study in order to improve one's own practice. It is simple, taking a pre-test, putting interventions followed by a post test. Team Leaders can encourage this practice and it can be applied not only in academics but also in problems related to discipline and absenteeism.

Empathy too is an important leadership quality. To be able to see things from the other person's point of view and from a different perspective. Here again the Art of Listening comes in handy. Sometimes even in the professional space, personal problems may be shared and a solution may be worked out. Faith and trust grows this way. The Team members feel that they have a voice, this way and brain storming exercises as well as Focus Group Discussions will be a success.

The team leader must have clarity of thought and be courageous in decision making. Team Building involves developing of self and the development of team members. So trainings and capacity building programs are to be encouraged. Being update with technology is important especially after the pandemic. Here again trainings come in handy. To move with the times, is an important aspect of Team Building.

All the activities of an organization have to be stitched together to form a whole. This task of co-ordination is an important management principle. Eminent Sociologist Max Weber has stated that every spoke in the wheel is important. Just like if any body part is injured, the body ceases to be complete as every part has a role to play. That is why co-ordination becomes important as every member of the team contributes towards the smooth functioning and goal achievement of the team.

Two types of authority, as stated by Max Weber, are a must have for the leader of the team. Rational Legal Authority which comes with the post so as to enable a leader to take on the responsibility of the team and Charismatic Authority by way of personality in order the steer the team and achieve the goals of the organization.

Team members begin to consider the organization as their own and take onus for its activities. That is the essence of Team Building. This team building exercise helps to bring out the best in the members of the team. A sure success mantra for the organization.

Subject Expert
SCERT Haryana, Gurugram

Power of Zero

By myself I'm nothing,
But even that's something.
Added to any number
I can become infinity.
Isn't that a good lesson?
For all humanity?
Together we stand,
Divided we fall.
Multiply me by many,
Add the benefits for all.
Minus me numerals,
Would cease to exist.
I am the beginning,
To an end without end.
They don't know my value,
They don't sing my praise.
I am not naught,
I will be sought
I'm a Zero,
So I became;
My own Super Hero.

By Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

Compendium of Academic Courses After +2

BANK MANAGEMENT

Introduction

Bank Management includes sectors such as Investment Banking, Corporate Finance Banking, Personal, Retail and Rural Banking, Treasury Management etc. The course structure is related to fund raising through bonds and securities in the

capital market, giving financial advice, plans and raising the capital or fund.

Courses

- Bachelor in Finance & Investment
- B.Com/M.Com or BBA /MBA (Finance)
- Financial Accounting
- Financial Management
- International Corporate Finance Management
- Accounting Portfolio Management
- Risk Management

Eligibility

10+2 with accounts, maths and economics

Institutes/Universities

1. Alagappa University, Karaikudi, Tamil Nadu
2. Gulbarga University, Karnataka
3. University of Madras, Chennai
4. Bharathidasan University, Tiruchirappalli, Tamil Nadu
5. Annamalai University, Annamalai Nagar, Tamil Nadu

6. Bangalore University, Bengaluru, Karnataka

BUSINESS ADMINISTRATION

Introduction

The administration of a business is interchangeable with the performance or management of business operations, it includes the efficient organization of people and other resources so as to direct activities toward common goals and objectives.

Courses

1. Bachelor of Business Administration (BBA),

2. Bachelor of Business Management (BBM),
3. Bachelor of Business Studies (BBS)
4. MBA: Post graduate degree in management
5. PGDM (Post Graduate Diploma in Management/ Business administration)
6. Post Graduate Diploma in Business Administration (PGDBA)
7. Diploma in Business Administration (DBA)
8. Advance Diploma in Business Administration (ADBA)
9. Advance Diploma in International Hotel and Business Administration

Eligibility

» 10+2 or equivalent qualification
» B.Com, B.A., B.Sc., BE/ B. Tech etc. However, subjects such as commerce, economics and mathematics would prepare a candidate better for pursuing business studies.

Institutes/Universities

1. All IIMs, including Ahmadabad, Bangalore, Calcutta, Kozhikode, Lucknow, Indore
2. Faculty of Management studies, Delhi
3. IIFT Delhi
4. Department of Management Studies, IIT Madras,
5. IIT Roorkee, Kanpur
6. Indian Institute of Management Shillong
7. Shailesh J Mehta School of Management, Indian Institute of Technology, Bombay
8. Smt. Indira Gandhi Government First Grade College for Women
9. Sir M V Govt Arts and Commerce College
10. Indira Gandhi National Open University, New Delhi (http://www.ignou.ac.in/)

BUSINESS MANAGEMENT

Introduction

Business management is the process of the planning, co-ordination and control of a business and to establish a value-creating organization.

Courses

1. BBA/MBA in Sales/Marketing/HR/ Finance
2. BA (Economics)
3. B.Com/M.Com

Eligibility

» 10+2 pass with any discipline or equivalent
» Graduation for Post-Graduation degree/diploma in management CAT/CMAT/other entrance Tests organized by various institutes/ Universities/Business Schools after graduation

Institutes/Universities

1. All Indian Institute of Management (IIMs)
2. Guru Gobind Singh Indraprastha University, Delhi
3. Birla Institute of Technology and Science, Pilani
4. Motilal Nehru National Institute of Technology Allahabad
5. Jamia Millia Islamia, New Delhi

6. Faculty of Management Studies, University of Delhi, Delhi
7. Banaras Hindu University, Varanasi
8. Birla Institute of Technology, Mesra

COSTS AND WORKS ACCOUNTS

Introduction

A course in Cost and Work Accounts work would cover structuring business policy of a company to give a forecast for projects on the basis of past and present financial performances.

Courses

1. Foundation Course
2. Intermediate Course (Part I)
3. Intermediate Course (Part II)
4. Final Course (Part III)
5. Final Course (Part IV)

Eligibility

For Foundation Course

10/10+2 pass as equivalent thereto or has passed NDC Examination held by AICTE or any State Board of Technical Education, or the Diploma in Rural Service Examination conducted by the National Council of Higher Education.

For Intermediate Course

Passed 10+2 and Foundation Course of the Institute of Cost Accountants of India/ Graduation in any discipline other than Fine Arts/ Foundation (Entry Level) Part I Examination of CAT of the Institute/ Foundation (Entry Level) Part I Examination and Competency Level Part II Examination of CAT of the Institute.

Institutes/Universities

1. The Institute of Cost Accountants of India, Bangaluru, Karnataka
2. Jamal Mohamed College, Tiruchirappalli, Tamil Nadu
3. Tiruchirapalli Chapter of ICWAI, Tiruchirappalli, Tamil Nadu
4. Visakhapatnam Chapter of ICWAI, Visakhapatnam, Andhra Pradesh
5. Trivandrum Chapter of ICWAI, Thiruvananthapuram, Kerala
6. Mysore Chapter of ICWAI, Mysuru, Karnataka

7. Madurai Chapter of ICWAI, Madurai, Tamil Nadu

CHATERED ACCOUNTANCY

Introduction

Chartered Accountancy plays key role in formulation of financial policies & investment plans of a company, and to make business plans for sustenance and growth of a company.

Admission Process

The applications are invited 1 year in advance for these courses. The examinations are held twice a year – May & November.

1. Enrolment for the CA Foundation course after 10+2.
2. Enrolment for Intermediate course (at this stage even graduates can join directly)
3. Register as an articled clerk with a practicing CA for undergoing practical training and as a student with Board of Studies – ICAI for theoretical education.
4. Intermediate exams after 12 months of training.
5. Final exams after completing Intermediate.
6. Membership of ICAI after Passing Final Exams
7. Professional Practicing CA.

Eligibility

Completion of Foundation Course and pass in Foundation Exam or, Commerce graduates with more than 50% or, Non-commerce graduates with mathematics as one of the subjects and 60% of total marks or, Non-commerce

graduates other than mathematics with minimum 55%.

Duration: 12 months

Courses

1. CA - Foundation Course
2. Eligibility: 10+2
3. Duration: 10 months
4. CA - Intermediate Course

Institutes/Universities

1. The Institute of Chartered Accountants of India , New Delhi

CHARTERED FINANCIAL ANALYSIS

Introduction

CFA Program gives an insight in corporate finance, investment management and financial services. The Program is divided into three levels. Preliminary; inter and final level. It is recognized as a Postgraduate Diploma in Financial Analysis by AICTE. It is a self-study programme and the Institute supplies study material to the enrolled students. There are also courses like Diploma in Basic Finance (DBF) and Merchant Banking and Financial Services (MBFS).

Courses

1. Regular CFA Program, Duration Graduates in any discipline. Students appearing for final year examinations are also eligible.
2. Accelerated CFA Program, First Class Graduates, Postgraduates, Working Executives and Professionals like CA/CWA/CS/MBA/CAIIB.
3. CFA Foundation Course: Degree college students interested in pursuing professional certification program such as CFA Program.

Eligibility

Degree and Engineering college students (any discipline).

The candidates who are successful in the admission test and those who are exempted from passing the admission test are enrolled for the Programme. A student is allowed a maximum period of three years to complete the preliminary level of the programme and a maximum period of seven years to complete the entire programme.

Exemption

Th e MBAs, Post Graduate Diploma Holders in Management, CAs, CWAs, CSs, CAIIBs, First class graduates/post- graduates and senior executives with ten years of service in the public sector or the private sector can seek exemption from the admission test.

Admission Test

The admission to both the programs is through a basic test. The admission test aims at testing the aptitude of the candidates for professional studies in financial analysis. Hence the quantitative reasoning ability of the candidate is tested. The admission test is held four times in a year in the months of January, April, July and October.

Other Programs

1. CPA Program (The Certified Public Accountant Program)
2. C-RIM Program (The Certified Risk & Insurance Manager Program)
3. The CTM Program (The Certified Treasury Manager Program)
4. The CIB Program (The Certified Investment Banker Program)
5. The CPM Program (The Certified Portfolio Manager Program) (International CIIA Qualification from ACIIA, London)
6. Global Strategic Management (GSM) Program

Enhancing Digital Skills in Teaching

"Technology is here to stay, but we need to get smarter on how best it can be used to improve teaching and learning."

Abstract

Generally, digital competence can be defined as a set of skills, knowledge, and attitudes that enable the individual to achieve goals using digital technologies in various life contexts. (Baartman & de Bruijn, 2011; Ferrari et al., 2012).

Digital platforms have become the first – or only – option in the field of Education today. Digital competencies of teachers affect the learning of students directly. Technology has become an essential force shaping much of our teaching and pedagogical practices. Such competencies will be necessary not only in this moment of transition, but later on for a post-pandemic scenario, to expand the teaching modality by the Blended approach. Teachers are suddenly faced with the challenge of how to continue their students' education. While this might seem a daunting task, there are several ways teachers can utilize the technology and resources already available to support online learning and ensure students still receive a quality education.

Keywords : Digital Platforms, Competencies, Blended Approach, Pedagogical Strategies

Introduction

A team of authors from the Kingdom of the Netherlands, Ester van Laar et al. [1-16], have done a tremendous job of analyzing 1592 different articles to identify and describe the digital and common skills needed by people in the 21st century.[1]

In the Covid-19 pandemic digital skills prove very beneficial for everyone. "Necessity is the mother of invention," Corona virus (COVID-19) forced us to rethink our daily lives from work to school to entertainment. The use of digital skills make teaching interesting. It is the need of the hour too. Enhancing Digital Skills in Teaching is important for many reasons. It is not only important because it is the standard of education that is expected today, but also it can improve the learning standard too. The domination of technology in our daily life highlights the importance of digital literacy not just for adults but for children as well. The digital world offers enormous benefits

and advantages to everyone, however, without proper use and understanding of technology, the digital world can be overwhelming, and even dangerous.

In their study, Hämäläinen R. et al. [4] considers the digital competence of teachers as a concept that includes digital skills, attitude to digital technologies and knowledge of the latter.

The COVID-19 pandemic and the rapid transition to online learning around the world have made major changes in teaching- learning practices. The question arose about the readiness of teachers for such changes, about the digital competence of participants in the educational process, about the emotional state of teachers and students associated with the process of organizing full-fledged online learning.

•What are Digital Skills?

Digital skills are defined as the ability of find, evaluate, use, share and create content using digital devices, such as computers and smartphone (UNLV Counting Education)

Digital competence refers to a set of knowledge, skills and attitudes that allow a person to achieve different life goals through digital technologies. In the education system, digitalization dictates two tasks for teachers to develop their own digital competencies, as well as to develop the competences necessary for students to function in the digital world.

Some basic digital skills:

- Taking online courses.
- Making an effort to use technology for job, for a hobby, or for showcasing your work online.
- Improving methods of online communication.
- Increasing online presence.
- Teaching digital skills to others.
- Practising skills over time.
- Following current tech trends on an ongoing basis.

With the advancement in technology over the years, we now live in a world that is both enriched and burdened by computers and gadgets. Digital skills are defined as the ability to find, evaluate, use, share, and create content using digital devices, such as computers and smart phones.

Why teachers need digital literacy?

If teachers are digitally literate, they perceive technology as a source of creative potential, rather than something that is mandatory to learn. Being digitally literate helps teachers to find new teaching tools like videos, podcasts to engage students to learn. Intervention of technology has changed the learning styles and those students who cannot attend class physically in school can attend online classes at home and learn from the same recorded class at their own pace. One more thing that I would like to add is that teaching through technology can cater to the needs of all three type of learners i.e. auditory or visual and kinesthetic. So it's the need of the hour that our educators must be well equipped with digital skills.

Digital skills should be acquired by both teachers and students. Teaching and learning process will go effectively by the use of technology. We can learn anything easily by seeing it. Digital classrooms will be established in every schools. Teachers should be trained for this digital platform. Teachers should acquire more knowledge about digital platforms.

"If you want to teach people a new way of thinking, don't bother trying to teach them. Instead, give them a tool, the use of which will lead to new ways of thinking."

-Richard Buckminster Fuller

In covid-19 teaching and digital skills have brought a sea change in teaching learning process. Online classes, educational whatsapp groups,

live classes on Google Meet, Zoom etc. Youtube videos and audios played a pivot role in teaching. Teacher fraternity made proper use of digital skills to shape the future of students during lock down.

There are hundreds of digital assisted learning tools such as educational apps, software and programs which can be included in teaching to enhance and sharpen the teaching skills to engage curious minds. This Covid pandemic has proven that digital devices and technology have benefited students in this hazardous situation.

"Children are like wet cement. Whatever falls on them makes an impression." ***-Haim Ginott***

Today students are techno experts so a teacher must use modern teaching techniques to bring desirable outcomes. We can change a boring topic into an interesting session by using Digital Gadgets and Technology. This way children will always look forward to our lecture and will wait for us to enter the class. In this context it's also noteworthy to mention the role of a teacher in guiding students who are inclined to become addicted to excessive dependence on gadgets to escape from the burden of original thinking and application.

Classrooms can be more interactive if we use digital smart- boards, LCD projectors etc. The whole world will be in one class room and students will travel virtually in the Universe of Education they will take a dip and learn to swim in the ocean of knowledge.

Some students may show unruly behaviour and create unnecessary disruption in the classroom. Actually, such students are attention seekers. They can be well engaged and manage efficiently by using digital technology in the teaching process. There are countless ways to polish teaching skills by inculcation of digital skills.

The days of hand written records and paper copies of classroom assessments are quickly fading in this century. Technology based assessment techniques used in the classroom environment help teachers gain an understanding of what students know or don't know. Many teachers are utilizing technology-based programs and systems that provide teachers with formal and informal assessments to track student's progress frequently. These types of formative assessments help keep students on-track with achievement, while also providing opportunities for students to participate in engaging activities based upon abilities and needs. Kahoot and Plickers are some of the free student response tools that any teacher can use very easily to assess the understanding level of Students. They can create their own quiz along with answer choices and project the same onto the classroom screen while the students submit their answers using internet connected devices and paper clickers. Questions can contain images and videos to help all the learners refer to and answer the questions.

"Equipping teacher with technology that will automate the boring work will enhance education and make it more powerful."

It is crystal clear that the digitalization of education, the use of digital Technologies and data in imparting education to children will bring positive modification making it effective, efficient and engaging

Conclusion

In a nutshell teachers need to understand their new responsibility to facilitate the use of technology in teaching -learning process. The COVID-19 crisis revealed the necessity for teachers to have digital skills in order to effectively teach online. Teachers should be able to use and apply digital technologies in all educational activities.

Technology is extremely important in education as said in the Curriculum for Excellence "The technologies provide frequent opportunities for active learning in creative and work-related contexts." (Scottish Government, 2004)

If teachers are digitally literate, they perceive technology as a source of creative potential, rather than something that is mandatory to learn. Being digitally literate helps teachers to find new teaching tools like videos, podcasts to engage students to learn.

References

- (Baartman & de Bruijn, 2011; Ferrari et al., 2012).
- Estervan Laara AlexanderJ.A.M.van-Deursena Jan A.G.M.vanDijka JosdeHaanb
- E3S Web of Conferences 258, 07083 (2021) https://doi.org/10.1051/e3sconf/202125807083
- TRIMTAB -Vol.-18 No.10 October 2017
- Scottish Government (2004). Curriculum for Excellence. Scotland: Scottish Government.

Dr. Sudershan Kumar Punia
Lecturer in DIET Machhrauli cum District E- Learning Nodal Officer
District -Jhajjar
Haryana
sudershanpunia@gmail.com

The Bathroom Nest

Dr. Deviyani Singh

"You left the bathroom window open!" Exclaimed my son. "I froze while taking a shower this morning."

"Oh I'm sorry I will just shut it." I stretched my hand out after opening the net window and was just about to slam the glass one shut when i froze.

I looked down and saw a nest was in the making.

"The window will have to remain open now." I told my son. " I will fix something inside the 'jaali' one so you wont feel cold." I said sticking a transparent plastic sheet on it.

After a few days a pair of Mynahs was seen. They would pick anything they found from the garden. Dry leaves, twigs and even pieces of string or plastic in order to make a cosy nest on this 1st floor half open window.

One day my son gave an exicted yelp. I rushed to see and he was pointing at the nest. I saw 4 turquoise eggs and was facinated by their color

I googled and found mynahs lay eggs in colors ranging from green to blue. After carefully maneuvering the camera, I took a pic. My son did not complain about the cold anymore or even the smell that came from the nest.

He grabbed my hand and stopped me from spraying air freshner in the bathroom.

"It's nature Mom, please don't disturb them."

I was touched by his concern.

Then one fine morning we heard a lot of chirping. We all rushed to what had now become the focus of all attention in our house - the bathroom. We saw 4 little chicks had hatched. They were featherless and their eyes had not opened but the 4 of them together made quite a cacophony. Then we watched in awe as Mommy mynah came and perched on window sill, entered the nest and began feeding them one by one as they arched their eager beaks towards her.

I started putting out boiled rice and other grains in my garden. Soon enough Mommy mynah would alight on the ledge and pick up the food for her young ones. They grew fast and before long one of the adventerous chicks tried to fly off and came tumbling down into the garden. I found it sitting scared in a flower pot, while its parents were screeching away. I picked it up gently and went upstairs,opened the net window gingerly; not wanting

to displace the siblings. Thankfully they accepted him back.

I don't know if the parents knew what I had done but after that day they became super friendly with me.

It was during Covid times and lockdown. I used to have all my meals sitting in my lawn just below the window nest. To my surprise Mommy mynah came and sat on the fence watching me eat my 'rajma chawal.' I threw some rice on the ground and she came and picked it up. Then I put some on the table and she came there too. It wasn't long before she began to recognise my voice. I would call to her and throw rice and she would be there in a jiffy.

Imagine my delight when i had 4 young guests for lunch. Yes, Mommy mynah brought all her chicks to meet me as soon as they learnt to fly. They were even less afraid than the parents and would strut about on the arms of my chair squaking and demanding food. I was so grateful for their lovely company in the lonely lockdown. They would even chase away any rivals from

feasting at my garden.

Once I saw a mouse eating their grain and I shouted. You won't believe this but Papa mynah actually heard my frightened scream, came down and chased the mouse away like a watch-dog. They continued to come to my lawn for their feeds for a very long time. Even till the next generation of mynahs was due and they built a new nest on the same window sill.

However I could not feed the next batch as my son insisted on getting a labrador puppy. Needless to say now the 'watch dog' had been sadly replaced by a real one. The lab would not let them sit in my garden. He even got jealous and ate up the rice I kept for them. So i had to keep it on a high ledge but the lab would bark so loud that they stopped coming there altogether.

However, they continued to use the nest every season, much to our relief.

The new generations of mynahs come and go but at least that endearing nest remains the same. So this is one rare nest that is never really empty for long.

Editor, Shiksha Saarthi
deviyanisingh@gmail.com

Adults are Always Thrilled to Enhance Themselves

"I think the principal purpose of education is to allow each of us, when webecome adults, to shape our own future."

- Michael Gove

When I use this 'ADULT EDUCATION', what does it mean? Getting education in a flexible and collaborative manner. A practice in which adults engage in systematic and sustained self-educating activities in order to gain new forms of knowledge, skills, attitudes, or values means any form of learning adults engage in beyond traditional schooling , encompassing basic literacy to personal fulfilment as a lifelong learner.

Adults have accumulated knowledge and work experience which can add to the learning experience and provide them a foundation of learning. An adult's readiness to learn is linked to their need to have the information. Their orientation to learn is problem-centered rather than subject-centered. Their motivation to learn is internal. What's the motive behind all this-learning? Remember the 1990s. Many adults, including most office workers, enrolled in computer training courses. These courses would teach basic use of the operating system or specific application software. Thus they learnt either at their own whim - to gain computer skills and can earn higher pay or at the behest of their managers. The purpose at college or University level is distinct, related to personal growth as well as occupation and career preparedness.

Adults frequently apply their knowledge in a practical fashion to learn effectively. They must have a reasonable expectation that the knowledge they gain will help them further their goals. The primary purpose of adult education is to provide a second chance for those who have lost access to education due to poverty or other reasons. Its spirit lies in providing social justice and equal access to education to all. An individual's motive can be vocational, social, and recreational, for self-development or for personal and professional needs.

But is this adult education so easy and smooth as it seems to be? Adults have to face many hurdles on various fronts; be it situational, institutional or dispositional. Lack of time, balancing career and family demands, the higher cost of education, lack of confidence and a fear of failure are some other challenges, though distance / online learning has addressed their problems to some extent.

"Education is not The Filling of a

Pail, But the Lighting of a Fire."

-W.B.Yeats

We need to think about what motivates the adults to continue their education despite all the obstacles. Benefits of continuing education in getting promotions or better job performance as well as teachers' awareness of the students' needs and requirements, make them realize the importance of continuing with their education and enhancing themselves to keep pace with time.

Adult Education provides opportunities for personal growth, goal fulfilment and socialization. It has many benefits ranging from better health and personal well- being to greater social inclusion. It can also support the function of democratic systems and provide greater opportunities for finding new or better employment- a great help to the individual and a positive impact on the economy.

According to the most recent estimates, the global youth literacy rate is 91, meaning 102 million youth lack basic literacy skills. The adult literacy rate is 86%, which means 750 million adults lack basic literacy skills. At the global level, the youth literacy rate is expected to reach 94% by 2030 and the adult literacy rate to 90%.

In a world as dynamic as ours, who says learning shouldn't continue into adulthood? Adult education gives mature learners the chance to increase their knowledge, develop new skills and gain qualifications and credentials. Adult education teaches valuable skills that can be put into action in a wide range of situations. The confidence and aptitude gained with adult education is valuable both in and out of the workplace. It must be kept in mind that 'Learning never stops, one can make progress and develop valuable skills at any time anywhere from literacy and numeracy to foreign languages to expand one's knowledge and skills to improve career prospects and develop self-confidence. It must be facilitated in a more energetic and enhanced way by the Government.

"That Is What Learning Is. You Suddenly Understand something you've Understood All Your Life, But In a New Way."

-Doris Lessing

Dr. Kuldeep Singh
Lecturer in English
GSSS Bamnola
Distt. Jhajjar, Haryana

Amazing Facts

1. **The popular chocolate bar "Three Musketeers" got its name because when it was first introduced in 1932 there were three individual bars. The flavours were strawberry, chocolate, and vanilla.**
2. In a pack of Skittles candy, there is an equal 20% distribution of each flavour.
3. The largest number of children born to one woman, who was a Russian peasant is 69.
4. The loss of eyelashes is referred to as madarosis.
5. The popular chocolate bar "Three Musketeers" got its name because when it was first introduced in 1932 there were three individual bars. The flavours were strawberry, chocolate, and vanilla.
6. In 1864, A Quebec farmer found a frog inside a hailstone.
7. Actor Sylvester Stallone once had a job as a lion cage cleaner.
8. The first time there was an instance where they had a separate toilet for women and men was in 1739 at a ball in Paris.
9. In the marriage ceremony of the Ancient Inca Indians of Peru, the couple was considered officially wed when they took off their sandals and handed them to each other.
10. Maine is the only state whose name is just one syllable.
11. Some birds have been known to put ants into their feathers because the ants squirt formic acid, which kills parasites.
12. On average, 42,000 balls are used and 650 matches are played at the annual Wimbledon tennis tournament.
13. The WD in WD-40 stands for Water Displacer.
14. Lachanophobia is the fear of vegetables.
15. Lake Baikal, in Siberia, is the deepest lake in the world.
16. India has the most post offices in the world.
17. In 1886, Coca-cola was first served at a pharmacy in Atlanta, Georgia for only five cents a glass. A pharmacist named John Pemberton created the formula for Coca-cola.
18. Whale oil was used in some car transmissions until 1973.
19. Flamingos are able to fly at a speed of approximately 55 kilometers an hour. In one night they can travel about 600 km.
20. "KemoSabe" means "soggy shrub" in Navajo.
21. In 1903, there were originally only eight Crayola crayons in a box and they sold for five cents.
22. Men are able to read fine print better than women can.
23. Spiders usually have eight eyes, but still they cannot see that well.
24. One ragweed plant can release as many as a million grains of pollen in one day.
25. Women hearts beat faster than men.
26. The Central African raffia palm is known to have the longest leaves. The leaves can measure up to 82.5 feet long.
27. Due to the shortages of lead and metals during World War II, toothpaste was packaged in plastic tubes and have been ever since.
28. In humans, the epidermal layer of skin, which consists of many layers of skin regenerates every 27 days.
29. A group of crows is called a murder.
30. Davao City, located at the Southern state of Philippines, is the largest city in the world in terms of area.

https://greatfacts.com/

1. In which activity were hickory and persimmon replaced by graphite and titanium?**Golf**
2. What is the technical genus category of lemons, oranges, limes?**Citrus**
3. 'Simnel' refers to a traditional Easter (what?), originating in medieval England: Cake; Turkey; Flower garland; or Soup?**Cake**
4. A large Tibetan leonine (lion-like) species bought in China for 12million yuan (£1.2m) in 2014 became the world's most expensive: Cat; Dog; Parrot; or Pig?**Dog**
5. A codicil is a supplementary text which alters what sort of legal document?**Will**
6. What word has noun/verb meanings for an island, a promontory, wine, organic soil, thinking, and a fabric used in bookbinding?**Mull**
7. A fourteen year ban (for mental health reasons) on what was lifted, experimentally, by China in 2014: Tequila; Wrestling; Gaming consoles; or Eastenders (the UK TV soap)?**Gaming consoles**
8. Flemington, Greyville, and Longchamp are associated with what, respectively in Australia, South Africa, and France?**Horseracing**
9. Popular in Indian subcontinental cuisine, gram flour is made from: Rice; Lentils; Chickpeas; or Termites?**Chickpeas**
10. The official logos for organic product certification in the EU, Japan, Australia and Canada all feature a: Flower; Leaf; Sun; or Bee?**Leaf**
11. German physician Franz Mesmer's (1734-1815) 'animal magnetism' theory is considered foundational in the development of: Yoga; Hypnosis; Body-building; or Lion-taming?**Hypnosis**
12. Which understated northern European nation grew to become by the early 2000s the fourth richest globally due largely to prudent treatment of oil revenues?**Norway**
13. A 'frontispiece' is traditionally at the beginning of a: Book; Opera; Staircase/escalator; or Pantomime horse?**Book**
14. Derived from ecclesiastical Latin, the term genuflexion/genuflection refers to bending which part of the body: Elbow; Knee; Finger; or Wrist?**Knee**
15. A cloche hat is (what?)-shaped?: Pillbox; Bell; Cone; or Banana? **Bell**
16. 'The Old Lady of Threadneedle Street' is a nickname for: The Eiffel Tower; The Empire State Building; The Bank of England; or Sydney Opera House?The Bank of **England**
17. What popular East Asian food means 'bean curdled': **Tofu;** Paneer; Dim sum; or Shiitake?Tofu
18. Match these US cities and their 'Big' nicknames: **Big... Orange; Easy; Guava; Apple, Tomato; Pineapple - New Orleans, Honolulu; New York; Sacramento; Los Angeles; Tampa?Big Orange - Los Angeles; Big Easy- New Orleans; Big Guava - Tampa; Big Apple - New York; Big Tomato - Sacramento; Big Pineapple - Honolulu.**
19. A large Tibetan leonine (lion-like) species bought in China for 12million yuan (£2m) in 2014 became the world's most expensive: Cat; Dog; Parrot; or Pig?**Dog (Tibetan Mastiff)**

https://www.businessballs.com/quiz/

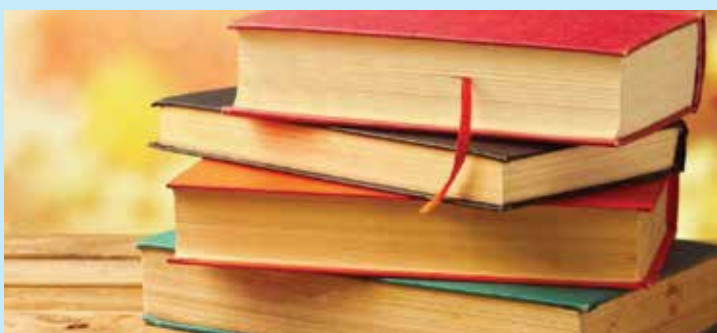

आदरणीय सम्पादक महोदय!
नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का सितम्बर अंक पढ़ा। पत्रिका दो भाषी है जो मुझे बहुत पसंद आई। पत्रिका का प्रिंट मनमोहक लगा और रचनाएँ भी हमें खूब पसंद आईं। संपादकीय बहुत पसंद आया। राष्ट्र निर्माता होता है शिक्षक, भिवानी की ममता पालीवाल को मिला राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार आदि रचनाएँ बहुत अच्छी लगीं। बाल सारथी की सभी रचनाएँ हमेश की भाँति बहुत प्रिय लगीं। 'बाल सारथी' में कहानी और कविता की संख्या बढ़ाई जाए। लेखकों का फोटो और पूरा पता दीजिए। पत्रिका का मोबाइल नम्बर कहीं नहीं मिला। आप अपना मोबाइल नम्बर जरूर दीजिए। ढेर सारी बधाई स्वीकार करें। धन्यवाद।

बद्री प्रसाद वर्मा 'अनजान'
गल्ला मंडी, गोला बाजार, गोरखपुर, उप्र

आदरणीय संपादक महोदय!
नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का गतांक पढ़ा। मुखपृष्ठ से अंतिम पन्ने तक पत्रिका एकदम आकर्षक दिखाई दी। मुखपृष्ठ पर छपी पंक्ति को मैंने अपनी डायरी में लिख लिया। सच में सरस्वती के साधकों को जगत में मान-सम्मान और प्रतिष्ठा की कोई कमी नहीं रहती। राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के शिक्षकों के प्रति संदेश मन को छू गए। प्रधानमंत्री महोदय का यह कहना कि हमारे शिक्षकों का बच्चों के साथ पेशेवर नहीं, पारिवारिक रिश्ता होता है, बिल्कुल सत्य है। मनोज कौशिक, सुमन लता व कुलविंद्र सिंह के लेख बहुत पसंद आए। बाल-सारथी सदा की तरह ज्ञानवर्धक सामग्री से भरपूर था। 'वंश' नामक लघुकथा भी बहुत पसंद आई। धन्यवाद।

कर्मपाल आर्य
प्राथमिक अध्यापक
राजकीय प्राथमिक पाठशाला
बिटना, पिंजौर, जिला-पंचकूला

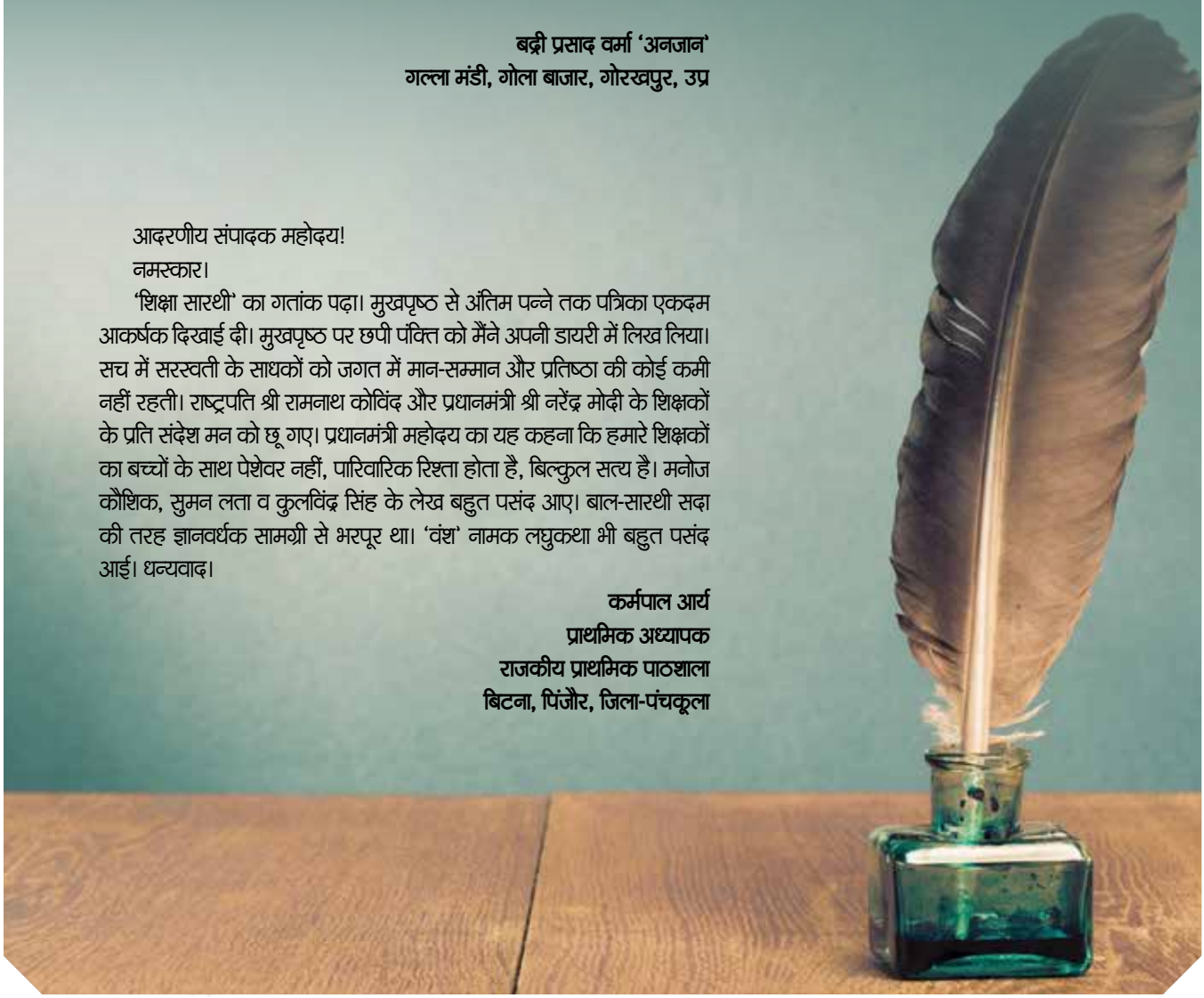

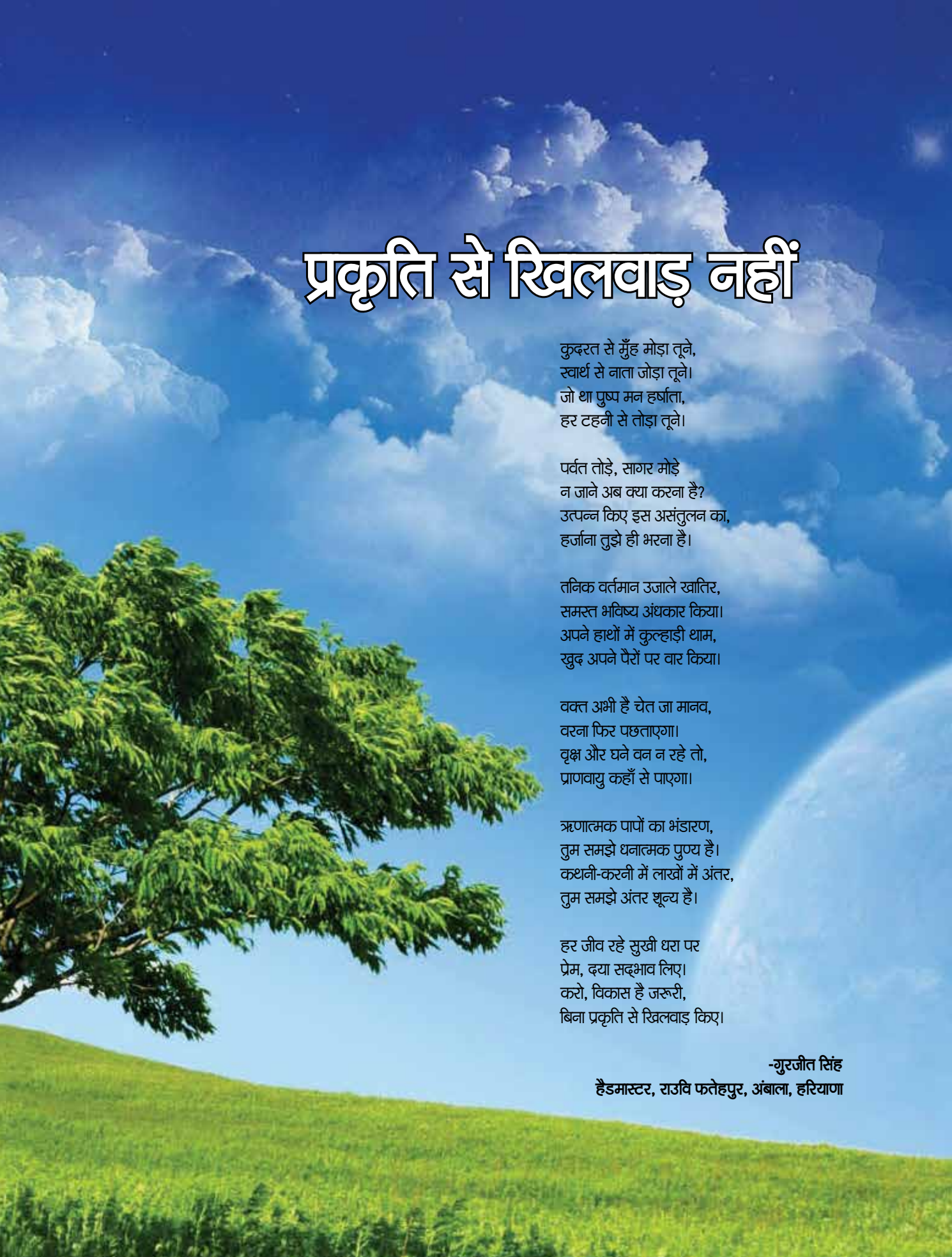

प्रकृति से खिलवाड़ नहीं

कुदरत से मुँह मोड़ा तूने,
स्वार्थ से नाता जोड़ा तूने।
जो था पुष्प मन हर्षाता,
हर टहनी से तोड़ा तूने।

पर्वत तोड़े, सागर मोड़े
न जाने अब क्या करना है?
उत्पन्न किए इस असंतुलन का,
हर्जाना तुझे ही भरना है।

तनिक वर्तमान उजाले खातिर,
समस्त भविष्य अंधकार किया।
अपने हाथों में कुल्हाड़ी थाम,
खुद अपने पैरों पर वार किया।

वक्त अभी है चेत जा मानव,
वरना फिर पछताएगा।
वृक्ष और घने वन न रहे तो,
प्राणवायु कहाँ से पाएगा।

ऋणात्मक पापों का भंडारण,
तुम समझे धनात्मक पुण्य है।
कथनी-करनी में लाखों में अंतर,
तुम समझे अंतर शून्य है।

हर जीव रहे सुखी धरा पर
प्रेम, दया सद्भाव लिए।
करो, विकास है जरूरी,
बिना प्रकृति से खिलवाड़ किए।

-गुरजीत सिंह
हैडमास्टर, राउवि फतेहपुर, अंबाला, हरियाणा

RNI NO: HARBIL/2012/52385

POSTAL REGD NO: HR/AB-102/20-22

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114